सभा में दोस्तो इन्दर की आमद आमद है। परी जमालों के अफ़सर की आमद २ है
ख़ुशी से चह चहे लाज़िम है सूरते बुलबुल। अब इस चमन में गुले तर की आमद २ है
फ़रोगे हुस्न से आंखों को अब करो रौशन। ज़मी पै मेहर मुनव्वर की आमद २ है॥
दुज़ानू बैठो क़रीने के साथ महफ़िल में। परी के देव के लश्कर की आमद आमद है
ज़मीं पै आयेंगी राजा के साथ सब परियां। सितारों के मेह अनवर की आमद २ है॥
ग़ज़ब का गाना है और नाच है क़यामत का। बहारे फ़ितनए महशर की आमद २ है।
बयां मैं राजा की आमद का क्या करूं अख़्तर। जिगर की जान की दिलबर की आमद २ है

चौबोला अपने हस्ब हाल ज़बानी राजा इन्दर के

राजा हूं मैं क़ौम का और इन्दर मेरा नाम। बिन परियों की दीद के मुझे नहीं आराम।
सुनो रे मेरे देव रे दिल को नहीं क़रार। जल्दी मेरे वास्ते सभा करो तैयार॥ ५॥
तख़्त बिछाओ जगमगा जल्दी से इस आन। मुझ को सब भर बैठना महफ़िल के दरम्यान
मेरा सिंगलदीप में मुल्कों मुल्कों राज।।। जी मेरा है चाहता जलसा देखूं आज।।
लाओ परियों को अभी जल्दी जाकर हां। बारी बारी आनकर मुजरा करें यहां।

आमद पुखराज परी की बीच सभा के

महफ़िले राजा में पुखराज परी आती है। सारे माशूक़ों की सिरताज परी आती है॥

जिसका साया न कभी ख़्वाब में देखा होगा । आदमी ज़ादों में वह आज परी आती है ।
दौलते हुस्न से होजायगा आलम मामूर । करने इस बज़्म में अब राज परी आती है ।
रंग होज़र्द हसीनों कान क्यों कर उस्ताद । गुल है महफ़िल में कि पुखराज परी आती है

गैर ख़्वानी अपने हस्ब हाल ज़बानी पुखराज परी के

गाती हुं मैं और नाच सदा काम है मेरा । आफ़ाक में पुखराज परी नाम है मेरा ।
फंदे से मेरे कोई निकलने नहीं पाता । इस गुलशने आलम में बिछा दाम है मेरा
मैं लाख की हो लाख की परवा नहीं रक्खी । क़ारूं का ख़ज़ाना अजी इनआम है मेरा ।
कहिते हैं जहां में जिसे इनसान गुलो सम्बुल । वह रुख है वह गेसूए सियह फ़ाम है मेरा
बदमस्त मुझे देख के होती है खुदाई । मामूर मये हुस्न से क्या जाम है मेरा ।
करती हूं दिलो जान से राजा की परस्तिश । कहिते हैं जिसे कुफ़्र वह इस्लाम है मेरा
अल्लाह ने बख़्शा है मुझे रुतबये आली । गरदूं जिसे सब कहिते हैं वह बाम है मेरा
इन्सां की परी से मेरा बस नहीं चलता । दिल लेके मुकर जाना सदा काम है मेरा ।
उस्ताद को देती हूं दुआयें दिलो जां से । ये काम जहां में सहर व शाम है मेरा ॥

छन्द ज़बानी पुखराज परी के बीच सभा के ॥

राजा इन्दर देस में रहें इलाही शाद । जो मुझ से ना चीज़ को किया अशमियार
किया सभा में याद मुझे राजा ने आज । दौलत माल ख़ज़ाने की चाह कबहूं मोह ताज
हीरा अपना चाहिये तख़्त न मुझको ताज़ । जगत में बात उस्ताद की बनी रहे महराज

ठुमरी ज़बानी पुखराज परी के बीच सभा के ॥

आती हुं सभा में छोड़ के घर ॰ ॰ । काहू की न हींमोहिं आज ख़बर ॰ ॰ ।
चेरी हूं तेरी राजा इन्दर ॰ ॰ ॰ । रखना दिन रैन दया की नज़र ॰ ॰ ।
सोने का विराजे सीस मुकर ॰ ॰ । रूपे के तख़्त पर बैठे निडर ॰ ॰ ।
चारों कोनों पर लाल लुटें ॰ ॰ ॰ । दाता का करम रहे आठ पहर ॰ ॰ ।
साया रहे पीरव पयम्बर का ॰ ॰ ॰ । मौला की सदा रहे नेक नज़र ॰ ॰ ।
उस्ताद कहो हरसे हर दम ॰ ॰ ॰ । दुनिया में रहें हज़रत अख़्तर ॰ ॰ ।

बसन्त ज़बानी पुखराज परी के बीच धुन बहार के फ़स्ल बहार में

ऋतु आई बसन्त अजब बहार ॰ । खिले ज़रद फूल बिरखन की डार ॰ ।

चिट की कुसुम फूले लागी सरसों ॥ फवकन चलत गेहुन की बार ॥
द्वार के दुआरे माली का छोहरा ॥ गरवा डारत गेंदन के हार ॥
टेसू फूले अम्वा बौराने ॥ चम्पा के रूखकलियन की बार ॥
गड़वा लिये उस्ताद के द्वार ॥ चलो सब सखियां कर कर सिंगार ।

ग़ज़ल बसन्त ज़बानी पुखराज परी के क़ल्ल मल्हार में

है जलवये नख़्से दर्दीवार बसन्ती ॥ पोशाक जो पहिने है मेरा यार बसन्ती ।
क्या फ़स्ल बहारीने शिगूफ़े हैं खिलाये। माशूक़ हैं फिरते सरे बाज़ार बसन्ती ।
गेंदा खिला है बाग़ में मैदान में सरसों। सहरा वह बसन्ती है यह गुलज़ार बसन्ती।
शख़्य मल का नई ऋतु में दिलाज़र्द नहीं म्यान। पहिने है क़वायार की तलवार बसन्ती।
हूंगा से ये मैं ज़र्द जो न क़त्ल करेगा ॥ खून निकलेगा अय क़ातिल खूखार बसंती
उस रश्क मसीहा का जो हो जाय इशारा ॥ आंखों से बने नरगिसे बीमार बसन्ती ॥
ग़म खाके मुआ हूं मैं किसी ज़र्द क़बा पर। है क़बर की चादर मुझे दरकार बसन्ती ।
गेंदों के दरख़्तों में भुमायां नहीं गेंदे ॥ हर शाख़ के सर पर है दस्तार बसन्ती ।
मुंह ज़र्द दुपट्टे के न आंचल से छिपाओ। हो जाइये न रंग गुले रुख़सार बसन्ती ।
ऋतु फिर गई आलम की चली बादे बहारी। मैख़ाने को सज वाते हैं मैख़ार बसन्ती
खूं एक तो था मेरा क़बा ज़र्द क़बाने ॥ तुर्रह हुई उसपर तेरी दस्तार बसन्ती ।
खुलती है मेरे आंख पे हर रंग की पोशाक। ऊदी अगरई चम्पई गुले नार बसन्ती ।
है शुक्र हसीनों की बदरंगी का असानत। दो चार गुलाबी हों तो दो चार बसन्ती ।

होली ज़बानी पुखराज परी के

पा लागें करजोरी ॥ ॥ स्याम मोसे खेलो न होरी ॥
गोवें चरवन में निकसी हूं ॥ सास ननद की चोरी ॥
सगरी चुनरिया रंग में न भिजोओ ॥ इतनी सुनो बात मोरी ॥
स्याम मोसे खेलो न होरी ॥
छीन झपट मोरे हाथ से गागर ॥ जोर से बहियां मरोरी ॥
दिल धरकत है सांस चढ़त है ॥ देह तपत गोरी गोरी ॥
स्याम मोसे खेलो न होरी
अबिर गुलाल लपट गयो मुखपर ॥ सारी रंग में बोरी ॥

सास हज़ारन गारी देगी ऽ ऽ ऽ। बालम जीता न छोरी ऽ ऽ ऽ।
स्याम मोसे खेलो न होरी
फाग खेल के तुम मेरे मोहन ऽ। का गत कीन्हो मोरी ऽ ऽ ऽ।
सखियन में उस्ताद के आगे ऽ ऽ। हुई हूँ थोरी थोरी ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ।
स्याम मोसे खेलो न होरी

ग़ज़ल ज़बानी पुखराज परी के बीच सभा के

बेदाद मुझे याद है वल्लाह तुम्हारी। ऽ। यूसुफ़ की क़सम अब न करूं चाह तुम्हारी
लिल्लाह क़दम शर्म के कूचे से निकालो। बाज़ार में हम देखते हैं राह तुम्हारी।
आशक़ की मुराद आये फ़क़ीरों को क़लम हो। जाये जो सवारी कभी दरगाह तुम्हारी।
वह बुत मेरे पास आयेगा किसतरह यक़ीन हो। झूठी है क़सम दोस्तो वल्लाह तुम्हारी।
होता है ज़मी पर उसे खुरशैद का धोखा। सूरत जो कभी देखता है माह तुम्हारी।
बुत बन गये महिफ़िल में रक़ीबों से न बोलो क्या बात है ख़ालक़ की क़सम वाह तुम्हारी
बोसे जो तलब मैंने किये हंस के वो बोले। सरकार से मौक़ूफ़ है तनख़्वाह तुम्हारी।
चढ़के कभी जाते हैं दरिया कभी तालाव। क्या हमको भकाती हैं कुएं में चाह तुम्हारी
है इश्क़ का दरिया बसे जोश अमानत। आलम में रखे आबरू अल्लाह तुम्हारी

ग़ज़ल दूसरी ज़बानी पुखराज परी के

टकराके सर को जान न दूं मैं तो क्या करूं। कब तक ग़मे फ़िराक़ के सदमें सहा करूं।
अन्धेर है लगाऊं जो उस शमअ रू से लौ। परवाने गेर पर वह रहे मैं जला करूं।
मैं चाहता हूं सुन अपत सोने पै हूं निसार। बुत को बिठाके सामने यादे खुदा करूं।
हर चंद चाहता हूं कि बोलूं न यार से। क़ाबू में अपने दिल को न पाऊं तो क्या करूं
अय बुत तेरे सिवा नहीं कोई नैन की हसब। अल्लाह से करूं तो तेरी इल्तिजा करूं।
इन्साफ़ हो बुतों से न मेरा जो हाथों हाथ। आगे खुदा के हशर में महशर बपा करूं।
मैं मर गया तो रो के यह कहने लगा वह शोख़। किसको सुनाऊं गालियां किसपर जफ़ा करूं
ग़मज़े से आगई मुझे इक आन में क़ज़ा। ये शुक्र तेरे नाज़ का क्यों कर अदा करूं।
ऐसे मज़े उठाये हैं आज़ार इश्क़ में। ऽ। आयें मसीह भी तो न अपनी दवा करूं।
कूचे में उसके बैठ के दिल है यह चाहता। औक़ात यों बसर सिफ़ते नक़्श पा करूं।
वह बुत ज़रा से सामने आकर जो बैठ जाय। काबे में भी नमाज़ को अपनी क़ज़ा करूं।

लें बोसा ज़ुल्फ़ का तो दिखाये गला अजल । फांसी मिले मुझे जो ख़यानत में रतना करूं ।
ले इश्क़ कुछ जहां में नहीं ज़ीस्त का मज़ा । दिल यार को न दूं मैं अमानत तो क्या करूं ।

ग़ज़ल तीसरी ज़बानी पुखराज परी के

रफ़्तार के चलन से ग़ज़ब दिल लुभा लिये । छोटे से सिन में यार बड़े तुम हो चालिये ।
बोसा जो मांगा चश्म का क्या क़हर हो गया । मुरूवत ऐन बज़्म में आंखें निकालिये ॥
जानें न दूंगा आप को सुन ने का मैं नहीं । बातें बना के वस्ल का दरमान टालिये ॥
इक बोसे पर ये गालियां अल्लाह की पनाह । कुछ मैं भी अब कहूंगा नहीं मुंह संभालिये ।
दर गुज़रा मैं मिलाप से हृदिये कहां का प्यार । फैलाके पांउं हाथ गले में न डालिये । ✤ ।
निज़ारह रूय साफ़ का मञ्जूर है हमें । ✤ । दिखलाके ज़ुल्फ़ को न हिला सिर के डालिये
आशिक़ को ज़हर ग़ैर को मिस्री की है डली । इस तरह की न बात ज़बां से निकालिये । ✤ ।
नामहरिमों को आंखन आंगिया भेजा पड़े । सीना खुला हुआ है दुपट्टा संभालिये । ✤ ।
ख़ुश चश्म सब जहां के अमानत हैं बे वफ़ा । जी चाहता है आंख किसी पर न डालिये ।

दरख़ास्त नीलम परी की ज़बानी राजा इन्दर के

ख़ूब दिखाया नाच के गाके ✤ ✤ ✤ । पहलू में मेरे अब तो बैठ आके ✤ ।
ख़ुश हुई तुझ से महफ़िल सारी ✤ । अब है नीलम परी की बारी ✤ ✤ ।

आमद नीलम परी की बीच सभा के

सभा में आमद नीलम परी है ✤ ✤ । सरासर वह नज़ाकत से भरी है ✤ ✤ ।
सितारों की झपक जाती हैं आंखें ✤ । वह उसके बर में मलबूस ज़री है ✤ ✤ ।
ग़ज़ब गाना है और उसका चमकना ✤ । कभी ज़ोहरह कभी वह मुश्तरी है ✤ ।
फ़िदा जल्सेन को जीती हो सोसन ✤ । फ़िदा फ़रमी से उसको हम सरी है ✤ ✤ ।
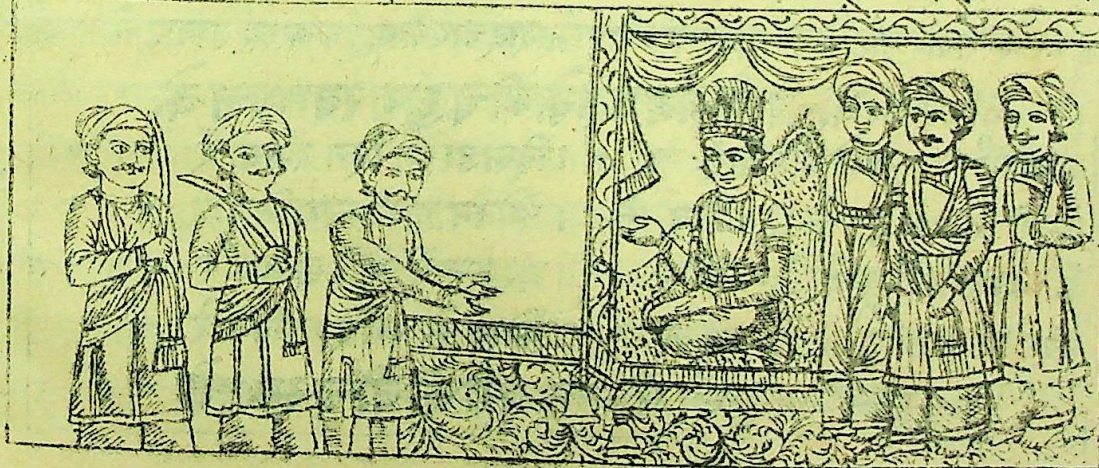
न देखा होगा नाच ऐसा किसीने ✣ । बला है सेहर है जादू गरी है ✣ ✣ ।
तमाम उसके हैं आज़ा मोतलये नूर ✣ । शरारत कूट कर उसमें भरी है ✣ ✣ ।
ज़मीं पर वह परी आती है उस्ताद ✣ । जवाहिर से जो रंगत में खरी है ✣ ✣ ।

शेर ख़्वानी हस्ब हाल अपने ज़बानी नीलम परी के सभा में ।

हूरों के होंठ उड़ते हैं अपने की शान पर । नीलम परी है नाम मेरा आसमान पर
अल्लाह के करम से ज़माने में है उरूज । झुकना है सर फ़लक के मेरी आस्तान पर ।
इन्सां को क्या है अक़्ल कि मुतलअ हो राज़ का । जिन खेल जाते हैं मेरी उल्फ़त में जान पर ।
नीलम को चूम चाट के आंखों पै रखते हैं । कोहरह है मेरा जौहरियों की दूकान पर ।
उड़ते नहीं हैं मेरी नज़ाकत पै फिरके होश । रखते हैं फूल हाथ गुल्लिस्तां में कान पर ।
करता नहीं है कौन मुहब्बत का हक़ अदा । देते हैं देवज़ान मेरी आन बान पर ✣ ।
मिस्सी कि तरह बाग़ में जलता है उसका रंग । सोसन जो ज़िक्र लाती है मेरा ज़बान पर ।
ज़ोहरह मेरे ख़याल में धुनती है सर सदा । मरते हैं तान सेन लताफ़त की तान पर ।
उस्ताद ने ज़मीं पै बुलाकर दिया है नाम । क्यों कर रहे न मेरा दिमाग़ आसमान पर ।

॥ छन्द ज़बानी नीलम परी के बीच सभा के

मैं चेरी सरकार की तुम राजों के राज । गाना शुरू मश्क़ मुल्क का सुनो ग़ौर से आज
सुनो ग़ौर से आज मेरा राजा जी गाना । नाच छल बल देख के देखो बतलाना ।
हुआ है मेरा नबद्दुस महफ़िल में आना । जबसे सारा देश बिदेस उस्ताद ने छाना ।

छन्द दूसरा ज़बानी नीलम परी के बीच सभा के

आई हूं मैं दूर से करके तुम को याद । मुजरा मेरा देख कर करो मेरा दिल शाद ।
करो मेरा दिल शाद कि मैं दिल खोलके गाऊं । गाके नाच के आज हुनर अपना दिखलाऊं
हुनर दिखाकर महफ़िल में दाद अपनी पाऊं । दाद अपनी यहां पाकर घर उस्ताद के जाऊं

ठुमरी ज़बानी नीलम परी के बीच धुम खम्माच के

राजा जी करो मोसे बतियां रे ✣ ✣ । दिल डरपत दिन रतियां रे ✣ ✣
हमरी ओर से तुम से दिन दिन ✣ । सौतन जाकी लगनियां रे ✣ ✣ ।
जियरा डरत है तुम्हरे रोस से ✣ ✣ । धरकत हैं मोरी छतियां रे ✣ ✣
दरसन उस्ताद का चहिये मोहि का ✣ । लिख के पठा देउ पतियां रे ✣

होली ज़बानी नीलम परी के बीच सभा के

कान्हा को समझावत न कोई * * । अँगिया रंग में भिजोई * * * ।

ऐसी ब्रज में पत खोई

आज सखी हम घर ना जाके * * । पीत की जान को रोई * * * ।

अबीर गुलाल छुड़ावन खातिर * * । मुँह अँसुअन से धोई * * * ।

बदन माटी में मिलोई

गरबा लगा के पिया के मोहिका * * । मुँह पकड़ा जब रोई * * * * ।

इज़्ज़त लीनी गारी दीनी * * * * । हमहूं जान को खोई * * * ।

सखी बिसराइ के सोई

बैठ बैठ ब्रज के लोगन में * * * । कबरे का बिस बोई * * * ।

या जो ख़बर उस्ताद ने पाई * * * । घर हम हाथ से खोई * * * ।

निकस कर जोगन होई

ग़ज़ल ज़बानी नीलम परी के बीच सभा के

इश्क़ का ख़ंजर लगा है दिलपे कारी इन दिनों । ज़ख्म की सूरत हैं यूँ आँखें हमारी इन दिनों ।

बाग़ में जाती है उस गुल की सवारी इन दिनों । दम चुराये फिरती है बादे बहारी इन दिनों ।

देके क़स्में कूचये क़ातिल में लेजाता है दिल । दुश्मन अपना कर रहा है दोस्तदारी इन दिनों ।

भोली भाली शक्ल पर दिल तड़फा जाता है सनम । क्या ही सूरत हो गई है प्यारी प्यारी इन दिनों ।

मुद्दतों हमने निकाला वस्ल में दिल का बुख़ार । फ़ुरक़ते दिलदार में है तपकी बारी इन दिनों ।

इश्क़ के आज़ार ने लाग़र किया है इस क़दर । शक्ल पहिचानी नहीं जाती हमारी इन दिनों ।

क़त्ल करता है अरक़ आलूदह अबरू ख़लक़ को । क्या तेरी तलवार पर है आबदारी इन दिनों ।

सर उठाया है जिन्हों ने इश्क़ ज़ुल्फ़े यार में * । पाओं को दरकार है ज़ंजीर भारी इन दिनों ।

रात काकर पाओं में आशिक़ बसर करते हैं हाल । छोड़िये लिखाइ पर्दे में सितारे इन दिनों ।

पलकें रूपकाने का क़ातिल को हुवा है नाज़ शौक । चल रही है दिल पे आशिक़ की कटारी इन दिनों ।

ठंढी साँसे भरते हो हरदम अमानत किस लिये । जान जाती है कहो किस पर तुम्हारी इन दिनों ।

ग़ज़ल दूसरी ज़बानी नीलम परी के बीच सभा के

दिल मेरा सैरे चमन से न हुआ शाद कभी । ले गया बाग़ में भूले से न सय्याद कभी ।

ज़िन्दह जब तक हैं हम ऐ जां जफ़ाये करलो । फिर सहेगा न तुम्हारी कोई बेदाद कभी ।

तोड़ता बेड़ियां दोहरी न कभी वहशत में । मानता काहे को लोहा मेरा हद्दाद कभी ।

सर झुका जाता है उठते नहीं महफ़िल से क़दम् । हाथ मुझ पर भी कोई छोड़दे जल्लाद कभी ॥ ।
सिनम ईजाद तुझे हमने बनाया जानी ॥ । इस तरह दिल से सिनम होते थे ईजाद कभी ।
तुम वह खुश क़द हो कि रफ़्तार जो ज़रा तनके चलो । सर उठाइये न चमन में कोई शमशाद कभी ॥ ।
न लगाया लबे गुलरंग से मैनाय शराब ॥ । हमसे शीशे में न उतरा वह परी ज़ाद कभी ।
दिलको था आलम तिफ़ली में ये शौके सहरा । न किया मैंने गुलिस्ताँ का सबक़ याद कभी ।
लैलिये ज़ुल्फ़ का सौदा लबे शीरीं की है चाह । कभी मजनूँ हूँ तेरे इश्क़ में फ़रहाद कभी ।
सूरते नक़्श क़दम हमने गुज़ारी औक़ात । मिट गये साफ़ कभी होगये बरबाद कभी ।
होगा तब जाल में बुलबुल का फ़साना मालूम । आयेगा मौत के फंदे में जो सैय्याद कभी
बुलबुलों किसको दिखाती हो उरूजे परवाज़ । हम भी इस बाग़ में थे क़ैद से आज़ाद कभी ।
है क़यामत बुते बे रहम बहया की बातें । ॥ कभी कहिता है अमानत मुझे जल्लाद कभी

ग़ज़ल तीसरी ज़बानी नीलम परी के

मज़ह दिसाले सनम का उठायेगा फिर क्या । डरा जो हिज्र से वह दिल लगायेगा फिर क्या ।
किसी की ज़ुल्फ़ को जानिब जो खिंच रहा है दिल । बलाय नाज़ह मेरे दिल पै लायेगा फिर क्या ।
घुलाये गा मेरी यों हड्डियाँ मेरा ऐ सनम् । ॥ । पसे फ़ना सो यार आके खायगा फिर क्या
इलाही खैर हो फिर जोश पर है रोइये तर । किसी के इश्क़ का तूफ़ाँ उठायेगा फिर क्या
इलाही खैर फड़कती है आँख क्यों बाईं । गज़ब से वह मुझे दीदे दिखायेगा फिर क्या
जफ़ा को जां ग़नीमत गिला सितम का न कर । बिगड़ के यार से अय दिल बनायेगा फिर क्या
सिखाया ज़ीस्त में जिसने न मुंह अमानत को । पस विसाल वह तुरबत पर आयेगा फिर क्या

फिकरे लाल परी के दरख़ास्त में ज़बानी राजा इन्दर के

दिखा चुकी तू करतब सारी ॥ ॥ । पहलू में अब बैठ हमारी ॥ ॥ ।
किया सभा में दूने नाम ॥ ॥ ॥ । अब है लाल परी का काम ॥ ॥ ।

आमद लाल परी की

आमद लाल परी की बीच सभा के

सभा में लाल परी की सवारी आती है । ज़माने रंग बदलने की बारी आती है ।
शफ़क़ में आयेगा झुरमुट नज़र सितारों का । पहन के सुर्ख़ वह पोशाक भारी आती है
हसीन बज़्म की शादी से खिल पड़ेंगे तमाम । गुलों के वास्ते बादे बहारी आती है ॥ ।
निगाह उसकी छुरी से सिवा नुकीली है । लगाने सब के दिलों पर कटारी आती है

यहन खेले ओमहाराजा रे

सावन ज़बानी लाल परी के सावन की फ़स्ल में

पिया बिन घटा नहीं भावे

रह रह दिल रूंधो आवे + + + । बिजुली की चमक नड़ पावे डरावे + ।

पिया बिन घटा नहीं भावे

अन्तरह

ऋतु वर्षा की आई री गुंइयां + + । आज जिया को कल नहीं आवे + ।

मोरी ओर से या दिन सजनी + + । कोऊ उसको समझावे जावे + + + ।

पिया बिन घटा नहीं भावे

कासे कहूं इस मेह बूंद सों + + । लिख पतिया जो पठावे + + + +

पीतम को कोऊ भरी बर्षा में + + । इई ओर से मिलावे लावे + + + ।

बिन पिया घटा नहीं भावे

उमंड़ घुमंड़ के कारी बदरिया + + । मोहिं नाहक कष्ट सतावे + + + ।

कोऊ पवन पुरवाई ऐसा कहे + + । और मुलक बरसावे + + + ।

बिन पिया घटा नहीं भावे

भीजत हूं अंसुअन के बूंदन + + । मेघा भर न लगावे + + + + ।

पीर उस्ताद के मान के अपने + + । बिन परवत पर जावे जावे + + +

बिन पिया घटा नहीं भावे

ग़ज़ल सावन की ज़बानी लाल परी के सावन की फ़स्ल में ।

दिल के रगबूहे ठंडी जो हवा सावन की । मांगता हूं मैं सदा हक़ दुआ सावन की

याद आती है वह सफ़ा वह घटा सावन की । शक्ल दिखलाये फिर अब जल्द खुदा सावन की

च याजब कि फ़लक पर मेरे आहो का धुआं । गिर गई ख़ल्क़ की नज़रों से घटा सावन की

रये आंखों से किस रश्क के बरसता है लहू । यार हाथों में लगाता है हिना सावन की ।

ज़ुल्फ़ जाना के क़रीं यों है दुपट्टा ऊदा । शबे तारीक में जिस तरह घटा सावन की ।

ए कतल हिज़ा नहीं थमती है झड़ी अश्कों की । लग गई क्या मेरी आंखों को हवा सावन की

अब भागा हुआ जाता है खुदा ख़ैर करे । आज बदली नज़र आती है हवा सावन की

यों दसे गिरिय तरसहर न सुने ज़ुल्फ़ का हो । रात होनी है सिया हीं में बला सावन की ।

मोती कानों में नहीं यार कीज़ुल्फ़ों के क़रीब । काले भादों के वह हैं और ये घटा सावन की
अय अमानत ये निकाली है ज़मीं तूने नई । पहिले थी किसकी ग़ज़ल नेरे सिया सावन की

होली ज़बानी लाल परी के बीच धुन सिन्ध काफ़ी के होली की ज-ल्स में

लाज रखले श्याम हमारी * * । मैं चेरी हूं तिहारी * * * *
ज़रा दे समझ कर गारी

अन्तरह ॥

अबीर गुलाल न मुख पर डारो * * । ना भरो पिचकारी * * * ।
आधी देहूं सब देख पड़ेगी * * । सारी भिजोगे न सारी * * ।
कहेंगे लोग मतवारी
तुम चातुर ह्वै गये खिलैया * * । हम डरपोक अनारी * * * ।
नाक फ़ाक लगा मत मोहन * * । जाऊं तोरी बलिहारी * * ।
न कर मोहिं जान से आरी
लाख कही तुम एक न मानी * * । विनती करके हारी * * ।
यही घरी उस्ताद से जाकर * * । कहिहों हक़ीक़त सारी * * ।
कहां जाओगे गिरधारी

ग़ज़ल ज़बानी लाल परी के बीच धुन देस के ॥

ख़याल आता है दिल को शिकवये बेदार क्या कीजे । ख़ुदा से ऐ बुते काफ़िर ने फ़र्याद क्या कीजे
बहार आई है गुलशन में घुटा जाता है दम अपना । क़फ़स के दर को वाँ करता नहीं सैयाद क्या कीजे
अबस करता है तू हमसे ख़याले यार का शिकवा । जो भूले आपको ऐ दिल उसे फिर याद क्या कीजे
मुक़ाबिल सबको पाया गुलिस्तां में वो गुल बोला । ग़ुलाम अपना जो हो दिल से उसे आज़ाद क्या कीजे
किसी महबूब का बूटा सा क़द आंखों में फिरता है । चमन में देखकर ऐ दिल सुये शमशाद क्या कीजे
जुनूं का जोश खोता है रगों को छूके नश्तर से । न तुम को गालियां दीजे तो ऐ फ़स्साद क्या कीजे
लहू बहता है गैरों का हमारा दम निकलता है । गले पर फेरता ख़ंजर नहीं जल्लाद क्या कीजे
हमारी क़ब्र को रोकर लगा कहता है यार कहता है । मिला हो ख़ाक में जो ख़ुद उसे बरबाद क्या कीजे
अमानत कोह पर पहुंचा तो यों फ़रहाद चिल्लाया । लबों पर जान शीरीं है अबे उस्ताद क्या कीजे

ग़ज़ल दूसरी ज़बानी लाल परी के

मवे फुरक़त में नालों ने जहां सर पर उठाया है । ज़मीं को ज़लज़ला है आसमां चक्कर में आया है
रुखे रंगी को हंसकर जुल्फ़ में उसने छिपाया है । तड़पने अब्र में बिजली चमन में अब्र छाया है
छिपाऊं मुंह निदामत से लहद में कोंन गैं चुहिशी । कफ़न ने दाग़ उरयानी के जामे को लगाया है
हिसाबे आवो दिवाना हश्र में होगा तो कह दूंगा । पिया है उम्र भर खूने जिगर ग़म मैंने खाया है
नई है रोशनी अभी लहद पर तेग़ दस्तीसे ॥ चराग़ों के एवज़ इस शामक़ीरू ने दिल जलाया है
हुये हो तेज़ हम पर संगदिल तुम गालियां देकर । ज़बां की तेग़ को खूब आपने पत्थर चढ़ाया है
शफ़क़ फूली है देखो शाम को शहरे बदख़्शां में । लबे रंगी पे मिस्सी मलके उसने पान खाया है
है अब ज़िन्दगी है तल्ख उनकी कड़वी बातों से । किसी दिन ज़हर खाले जियगी जी में समाया है
मेरी तुर्बत पै ताना चांदनी में क्यों है नसगीरा । यह किसने चादरे महताब में धब्बा लगाया है
क्यों सिंदूर का टीका नहीं मेहराबे अबरू में । चराग़ उस क़ामरू ने ऐन काबे में जलाया है
नहीं बे वजह पै हम हुचकियां आती हैं फ़ुरक़त में । किसी महबूब को तो आय अमानत याद आया है

फ़िक़रे सब्ज़ परी की दरख़्वास्त ज़बानी राजा इन्दर के ॥

काटी रात मज़े में सारी ॥ ॥ ॥ । बैठ मेरे पहिलू में प्यारी ॥ ॥ ॥ ।
बहुत लड़ाई तूने जान ॥ ॥ ॥ । अब है लाल परी का ध्यान ॥ ॥ ।

लाओ सब्ज़ परी को

आमद सब्ज़ परी की बीच सभा के

आती नये अन्दाज़ से अब सब्ज़ परी है ॥ । लब सुर्ख है पर सब्ज़ है पोशाक हरी है ॥ ।
फ़ीरोज़ह उसे देख के खा जाता है हीरा ॥ । चेहरे में ज़मुर्रद से सिवा जलवा गरी है ॥ ।
जिन उससे ख़िजालत के सबब उड़ते नहीं हैं ॥ । परियों को सदा शर्म से बे बालो परी है ॥ ।
ज़ेवर की है क्या शान छरहरे बदन पर ॥ । इक शाख़ है नाज़ुक कि शिगूफ़ों से भरी है
हंसता है ज़मुर्रद पै सदा धानी डुपट्टा ॥ । क्या हुस्न के दरबार से सब्ज़े को चरी है ॥ ।
आमद की ख़बर सुन के हसीनों में नहीं दम । जो शमा है महफ़िल में चराग़े सहरी है ।
उस्ताद अजब आशिक़ों मअ़शूक़ के हैं नाम । शहज़ादा वह गुल्फ़ाम है यह सब्ज़ परी है ॥ ।

चौरबानी अपने हस्ब हाल ज़बानी सब्ज़ परी के

मसरूर हूं शोख़ी से शरारत से भरी हूं ॥ । धानी मेरी पोशाक है मैं सब्ज़ परी हूं
क्या अस्ल है सब्ज़े की मेरे हुस्न के आगे । फ़ीरोज़े से खुशरंग ज़मुर्रद से खरी हूं
लेलेती हूं दिल आंख फ़रिश्ते से मिलाकर । इन्सां हैं बला क्या मैं नहीं जिन्से डरी हूं ॥
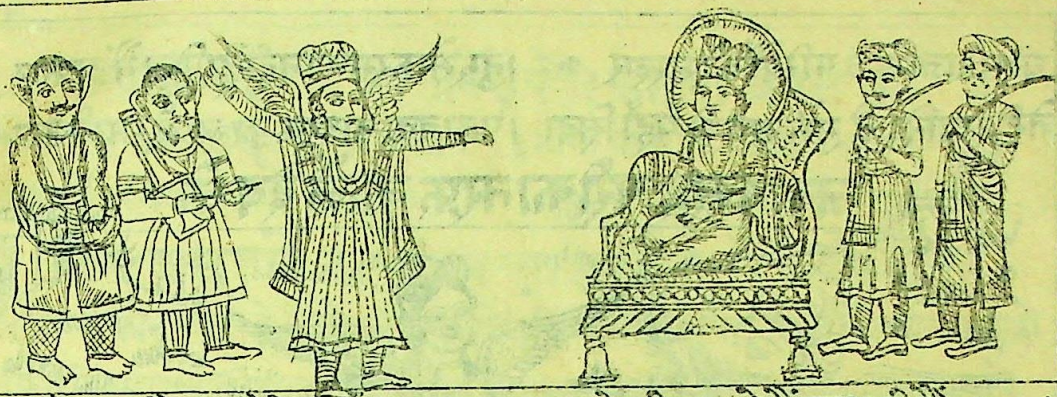
शोला है भभूका है ग़ज़ब है मेरा गुस्सा । जल जावे परीज़ाद जो मैं गरम ज़री हूं ।
ज़िन्दा न रखेगा मुझे सुनलेगा जो राजा । शहज़ादए गुलफ़ाम की सूरत पै मरी हूं ।
वह शमअ में परवाना हूं वह सर्व में क़ुमरी । वह गुल है जहां में मैं नसीमे से हरी हूं ।
जल्लाद के दम से चमने हुस्न है आबाद । मैं वास्ते ताऊस के दाग़े जिगरी हूं ।

चौबोला ज़बानी सब्ज़ परी के ।

राजाजी तो सो गये दिया न कुछ इन्आम । जाती हूं मैं बाग़ में यहां मेरा क्या काम ।
सुनरे काले देव रे तू मेरी इक बात । आती थी मैं राजा के घर में आज की रात
शहज़ादा इक बाम पर सोता था नादान । जोबन उस्का देख कर निकली मेरी जान ।
उनने अपने नख़्ल से तीर कलेजे खाय । सोता था वो बेख़बर हाथ पाउं फैलाय ।
सूरत उस्की देख कर दिल से गया क़रार । मुंह पर मुंह मैंने रखा किया ख़ूब सा प्यार
दिल मेरा लगता नहीं महफ़िल के दरम्यान । क़ालिब मेरा है यहां वहां है मेरी जान
उस्को गर तू लाउदा जाकर जल्दी यार । लौंडी मैं हो जाउंगी तेरी बे तकरार

जवाब काले देव का तरफ़ सब्ज़ परी के ।

घर में राजा के तू परियों की सरदार । तुझ से कर सक्ता नहीं हरगिज़ मैं इन्कार ।
तेरी ख़ातिर है मुझे सब से यहाँ सिवा । पता बता माशूक़ का लाऊँ अभी उठा ।
जवाब सब्ज़ परी का तरफ़ काले देव के
जा तू सिंगलदीप में अख़्तर नगर में हाँ । सोता है एक माहरू लाल महल में वाँ ।
छल्ला मैं दे आई हूँ अपना उसे निशान । सब्ज़ नगों की आब से तू उसको पहिचान
सवाल काले देव का सब्ज़ परी से ॥
लाया शहज़ादे को मैं जाकर हिन्दुस्तान । तू अपने माशूक़ को सब्ज़ परी पहिचान ।
जवाब सब्ज़ परी का ख़ुश होकर तरफ़ काले देव के
यही है शहज़ादा मेरा यही है मेरी जान । यही मेरा दिलदार है मैं इस पर क़ुरबान ।
जगाना सब्ज़ परी का शहज़ादे को शाना हिला कर
सोते हो क्या बेख़बर छोड़ के तुम घर बार । आँखें खोलो लाडले नींद से हो हुशियार ।
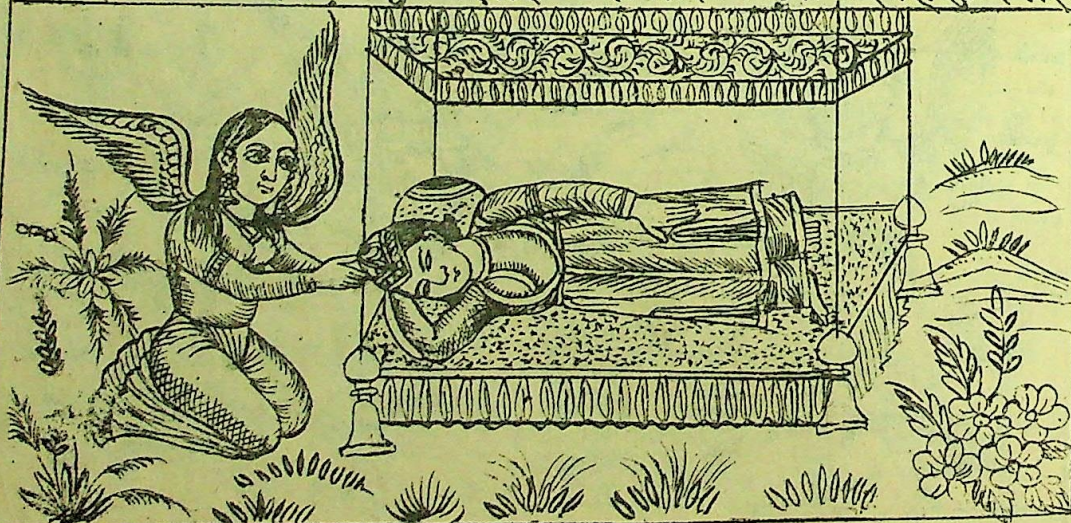
जगाना शाहज़ादे का नींद से और कहिना घबरा कर ॥

कोठा मेरा क्या हुवा छूटा किधर मकान । सोया था मैं किस जगह आया हाय कहाँ ।
नावह मेरे लोग हैं ना वह मेरी जां ✢ ✢ ख्वाब ये मैं हूँ देखता जाग रहा हूँ यां ✢ ।

गाना शाहज़ादे का ग़ज़ल आलम हैरत में बेताब होकर ।

घर से यां कौन खुदा के लिये लाया मुझको । किस सितमगार ने सोने में जगाया मुझको
हक़ ने किया ख्वाब परेशान ये दिखाया मुझको । नज़र आता है न अपना न पराया मुझको
हैफ़ सद हैफ़ किसी ने न ख़बर ली मेरी । क्या अज़ीज़ों ने मेरे दिल से भुलाया मुझको
नींद से आँख किसी की न खुली कोठे पर । उठ के मंज़ीके न बुगल से छुड़ाया मुझको ।
बस में ज़ालिम के मुझे छोड़ दिया हाय ग़ज़ब । ढूँढने कोई परिस्तां में न आया मुझको ।
तासमे मुर्ग़ अब उम्मेद रहाई की नहीं । किस बला में मेरे अल्लाह फंसाया मुझको
मुख़लसी की कोई तदबीर बताओ अख्तर है बहुत गर दिसे क़िस्मत ने सताया मुझको

फिर गाना शाहज़ादे का बिहाग की चीज़ हालत इज़्तरार में ✢ ॥
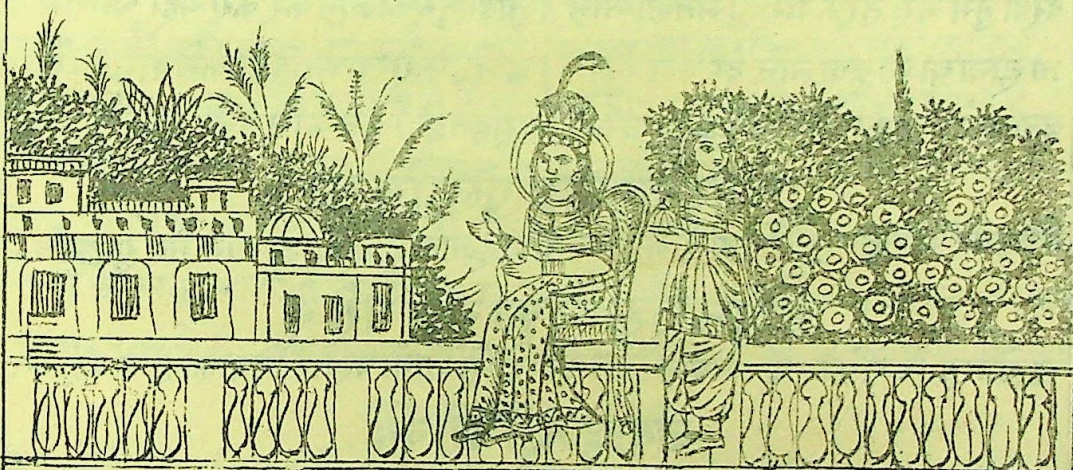
मुझे कौन घर से लाया यहाँ ✢ ✢ । बताओ ये किसका है गा मकां ✢ ॥
मुझे कौन घर से लाया यहाँ
सब बिछुड़े कोई संग न साथी ✢ । अज़ीज़ों को अपने पाऊँ कहाँ ✢ ॥
मुझे कौन घर से लाया यहाँ
दिल का किस को हाल सुनाऊँ ✢ । सिर पर बाप न माँ ✢ ✢ ✢ ।
मुझे कौन घर से लाया यहाँ

घर जाने की आस नहीं है ✣ ✣ ✣ । पड़ी किस मुसीबत में मेरी जान ✣ ॥
मुझे कौन घर से लाया यहाँ
फंस गये इन ज़ालम के फंदे ✣ ✣ । कोई जल्लाद से कोई हो हाँ ✣ ✣ ।
मुझे कौन घर से लाया यहाँ

कहिना सब्ज़ परी का शहज़ादे का हाथ थाम के।
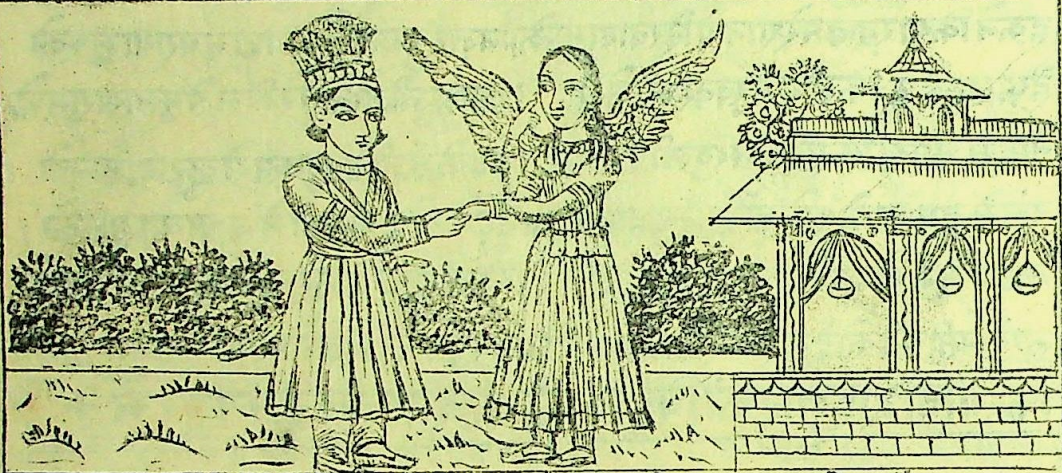
देखो तुम मेरी तरफ़ घर का मतलो नाम । छोड़ो मुझ को जाल कर करो यहाँ आराम ॥
जो होनाया सो हुवा जाने दो बस ख़ैर । चलो फिरो खाओ पियो करो बाग़ की सैर।
बतलाओ अब हस्बो नस्ब और तुम अपना नाम। रहिते हो किस काम में हैगा कहाँ मुक़ाम।

जवाब शहज़ादा गुल्फ़ाम का ।

खिलवत में रहिता हूँ मैं ऐश है मेरा काम। शहज़ादा हूँ हिन्द का नाम मेरा गुल्फ़ाम ।

सवाल शहज़ादे का सब्ज़ परी से

तू औरत किस क़ौम की अपना नाम बता। दोनों शानों पर तेरे निकला है ये क्या ✣ ।

जवाब सब्ज़ परी का

क़ौम की हूँगी मैं परी समुझ न तू है वान। ✣। ये दोनों पर हैं मेरे अय मूरख नादान ✣ ।
रहिती हूँ मैं क़ाफ़ में सब्ज़ परी है नाम ✣ । राजा इन्दर के यहाँ नाच है मेरा काम ✣ ।

सवाल शहज़ादे का

जल्दी ये बतला मुझे दिल को है विसवास । मेरा आना किस तरह हुआ है तेरे पास ✣ ।

जवाब सब्ज़ परी का

अक्सर मैं आशिक़ हुई चलते चलते राह। उड़ा मँगाया याँ तुझे भेज के देव सियाह

शेर ख़ानी ज़बानी सब्ज़ परी के मुखातिब हो कर शहज़ादे से ॥

सिरपै आंखों पै कलेजे पै बिठाऊं तुझ को । आ मेरे पास गले से मैं लगाऊं तुझ को ॥

दिलो जां से मुझे भाती हैं अदायें तेरी ॥ पास ला चांदसा मुंह लूं मैं बलायें तेरी ॥

लेट पहिलू में मेरे घर को मैं आबाद करूं । तुझ को लिपटा के गले वस्ल से दिलशाद करूं ॥

जवाब शहज़ादे का ॥

वस्ल को तेरे क़सम घर में है खाना मुझ को । नखबरदार अभी हाथ लगाना मुझ को ॥

मुझ को नादान समझ दूर हूं दाना हूं मैं ॥ क़ौम की तू जो परी है तो सियाना हूं मैं ॥

बेसवा तुझ सी ज़माने में न होगी ज़िन्हार । आप बदनाम हुई मुझ से छुड़ाया घर बार ।

जवाब सब्ज़ परी का

ज़िन्दगी का है मज़ा ऐसी मुलाक़ातों में । चोंचले मुझ से बघारो न ज़रा बातों में ॥

शुकर अल्लाह का कर लड़ गई क़िस्मत तेरी । यक बयक मुझ से परी को हुई उल्फ़त तेरी ।

तुझ को दीवाने नहीं भर्म ज़री आती है । ख़्वाब में भी कहीं इन्सां के परी आती है ।

देख पछतायेगा मेरा जो बुरा दिल होगा । वस्ल तुझ को न परी का कभी हासिल होगा

जवाब शहज़ादे का

घर के छुटने का है ग़म आह़ो फ़ुग़ां करता हूं । वस्ल का वादह मैं इस शर्त से हां करता हूं ।

सुनी इन्दर की सभा मैंने कहानी में है ॥ उसका अरमान मुझे जोश जवानी में है ॥

और जलसों का तो हो हिन्द में भी चरचा है । नाच परियों का मगर मैंने नहीं देखा है ।

साथ अपने मुझे ले चल के वह जलसा दिखला । राजा इन्दर के अखाड़े का तमाशा दिखला ।

सैर मैं तेरे सबब बांकी जो इक बार करूं । जीते जी फिर न कभी वस्ल का इनकार करूं

दम भर पास से तेरे न कहीं जाऊं मैं ॥ जो कहे तू उसे आंखों से बजा लाऊं मैं ॥

जवाब सब्ज़ परी का

ऐसी बातों का ज़बां पर नहीं लाना अच्छा । जान आफ़त में नहीं मुफ़्त फसाना अच्छा

देता इन्दर के अखाड़े पै अबस जान है तू । सख़्त बे अक़्ल है दीवाना है नादान है तू ।

ऐसी जां सैर को इन्सान नहीं चलने हैं ॥ वां मेरी जान परीज़ाद के पर जलते हैं ॥

आफ़त आ जायेगी तुझ पर और इक आन के बीच । आदमीज़ाद का क्या काम परिस्तान के बीच

कोई राजा को ख़बर जाके लगा देवेगा ॥ फूंक देगा वह तुझे मुझ को जला देवेगा ॥

न जलायेगा तो आफ़त में फंसायेगा तुझे । क़ैद करके वह कुंएं में लटकायेगा मुझे ॥

जवाब शहज़ादे का ।

मैं न मानूंगा न मानूंगा कभी बात तेरी ॥ । काम किस रोज़ के आवेगी मुलाक़ात तेरी ।
बात जो अस्ल थी मैं शक्ल से पहिचान गया । बाइसे इन्कार का जानी मेरा दिल जान गया ।
किसी देव के ख़िदमत में वहां आती है । इस लिये मुझ को सभा में नहीं ले जाती है ।

जवाब सब्ज़ परी का ।

बात हरगिज़ ये ज़बां से न निकालो साहब । होश में आओ ज़रा मुंह को संभालो साहब ।
देव से मुझ को बुरा काम जो करना होता । आदमी ज़ाद पे किस वास्ते मरना होता ।
मैं परी होके और ऐसे पे फ़िदा जान करूं । एड़ी चोटी पे मुए देव को क़ुरबान करूं ॥ ।

जवाब शहज़ादे का ।

दिल हर इक शख़्स का फंदे में फंसाती है तू । अय परी क्यों मुझे बातों में उड़ाती है तू ॥ ।
सुबह होती है मेरी जान कोई आन के बीच । मेरवी चल के सुना मुझ को परिस्तान के बीच ।
वां न ले जायगी तो जी से गुज़र जाऊंगा ॥ । आप मैं अपना गला काट के मर जाऊंगा ।

जवाब सब्ज़ परी का ।

मुफ़्त की यार ख़राब अपनी जवानी तूने । हाय अफ़सोस मेरी बात न मानी तूने ॥ ।
अब मिलेगा न अज़ीज़ों से न मां बाप से तू । शेर के मुंह मेरी जान चला आप से तू ॥ ।
थक गये होंट कहां तक अरे समझाऊं मैं । चल अखाड़ा तुझे इन्दर का दिखा लाऊं मैं ।

जवाब शहज़ादे का ।

किस तरह चलने पे तैयार मेरी जान हूं मैं । तू परीज़ाद है चालाक और इन्सान हूं मैं ।
उड़ के तू जायगी इक पल में परिस्तान के बीच । हाथ फैला के मैं रह जाऊंगा आसमान के बीच ।
कोई उड़ चलने की तदबीर बतादे उस्ताद । पर किसी देव के तू नोच के लादे मुझ को ।

जवाब सब्ज़ परी का

वहं की बातें न करो होश में आओ जानी । न परीज़ाद से बे पर की उड़ाओ जानी ॥ ॥
थाम लो पाया मेरे तख़्त का अब हाथ से तुम । छूट जाना न कहीं राह में पर साथ से तुम ।
मुझ से वां जाके कोई बात न कहिना साहब । पीछे २ मेरे तुम नाचते रहिना साहब ।
गाके और नाच के बुत सब को बनाऊंगी मैं । तुझ को ले चल के दरख़्तों में छिपाऊंगी मैं ।
किसी आफ़त में इका इक अगर आना जानी । याद रखना कि मुझे भूल न जाना जानी ।

आना दुबारा सब्ज़ परी का सभा में और कहिना छन्द का ।
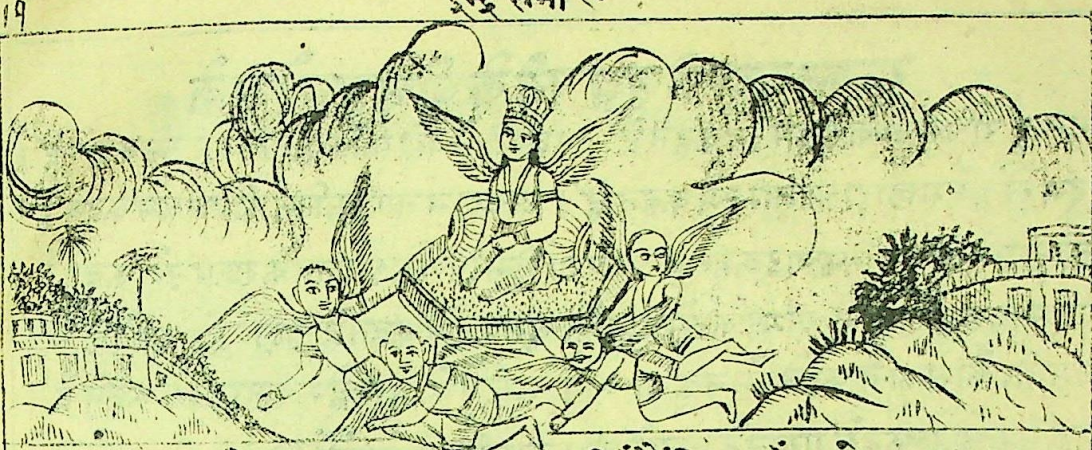
सभा में बुलवाकर मुझे आप किया आराम । आई हूं मैं फिर यहां करने अपना काम ।
करने अपना काम यहां फिर हूं मैं आई । ठुमरी छन्द ग़ज़ल की जीमें धुन है समाई ।
सभा में दूंगी आज जो मैं जी ख्याल के गाई । कहेंगे सब उस्ताद ने क्या २ चीज़ बनाई ✣ ।

ठुमरी ज़बानी सब्ज़ परी के बीच धुन पर्चे के

मोरी अँखियां फरकन लागी ✣ ✣ । कहां गयो यार किधर गई सखियां ✣ ✣ ।

अँखियां फरकन लागीं

देह फुकत है जिय तरफत है ✣ ✣ ✣ । पीत लगाके मज़ा हम चखियां ✣ ✣ ✣

अँखियां फरकन लागीं ✣ ।

नैनन में दिलदार बसत है ✣ ✣ ✣ । ये अँखियां अलमास परखियां

अँखियां फरकन लागीं

बल बल जाऊं मैं उस्ताद के ✣ ✣ ✣ । बीच सभा में मोरी पत रखियां ✣ ✣ ।

अँखियां फरकन लागीं

॥ ठुमरी दूसरी ज़बानी सब्ज़ परी के बीच धुन पर्चे के

सुध लाग रही तोरी आठ पहर ✣ ✣ । तन मन की नहीं मोंहि खाक खबर ✣ ॥

सुध लाग रहीं

निस बासर मोहिं कल न पड़त है ✣ । दिखलाने झलक कहूं एक नज़र ✣ ।

सुध लाग रहीं

अरज़ करत मोरा जियरा डरत है ✣ । दिल धरकत देह कम्पत थर थर ।

सुध लाग रहीं

हरका पता उस्ताद को बतलावे ✣ ✣ । बौरीसी फिरत हूं जिधर तिधर ✣ ।

सुध लाग रहीं

ग़ज़ल ज़बानी सब्ज़ परी के बीच धुन देश के

भूला हूँ मैं आलम को सरशार इसे कहते हैं । मस्ती से नहीं ग़ाफ़िल हुशियार इसे कहते हैं ।
दम लेके मेरा छोड़ा आज़ार इसे कहते हैं । अच्छा न रहा इक दिन बीमार इसे कहते हैं ।
कल घर से जो वह निकला इक हश्र हुआ बरपा । दिल पिसके आलम के रफ़्तार इसे कहते हैं ।
उस माह का जल्वह है अश्शाक़ इसे कहते हैं । यूसफ़ इसे कहते हैं बाज़ार इसे कहते हैं ॥
तसवीर को सक्ता है कहते इसे नक़्शा ॥ आइने को हैरत है रुख़सार इसे कहते हैं ।
इक रिश्तये उल्फ़त में गरदन है हज़ारों की । तसबीह इसे कहते हैं ज़िन्नार इसे कहते हैं ।
महशर का क्या वादा यां शक्कत दिखाई ॥ इक़रार इसे कहते हैं इन्कार इसे कहते हैं ।
दिल ने शबे फ़ुरक़त में किया साथ दिया मेरा । मोअन्निस इसे कहते हैं ग़मख़्वार इसे कहते हैं ।
सब गुज़री सहर आई बक बक के थका आशिक़ । बोसा न दिया उसने तकरार इसे कहते हैं ।
ख़ामोश अमानत है कुछ उफ़ भी नहीं करता । क्या क्या नहीं ऐ यारो अग़ियार इसे कहते हैं ।

॥ ग़ज़ल दूसरी ज़बानी सब्ज़ परी के

लबे जां बख़्श उल्फ़त में लब पर जान आई है । मरीज़े इश्क़ मरता है मसीहा की दुहाई है ।
नहीं माथे की अफ़शां उसके रुख पर छिड़के आई है । जबीं ने शरबते दीदार पर छिड़की हवाई है ।
शबे तारीक फ़ुरक़त में करें क्यों अपना दिल रौशन । चराग़ अन्धा है चरबी शमा की आंखों में छाई है ।
दफ़्तरे ख़त से है बदरंग जिल्द मसहफ़ आरिज़ । कलाम अल्लाह की काफ़िर ने क्या सूरत बनाई है ।
जगह फ़स्ले ख़ुदा से इक बुत काफ़िर के है दिल में । फ़रिश्ता जा नहीं सक्ता जहां अपनी रसाई है ।
हिलाता हूँ फ़लक को बाद मुरदन अपनी नालों से । लहद में पांउ फैलाकर ज़मीं सर पर उठाई है ।
ख़ुदा के सामने गरदन झुकायेगा नदामत से । बुतों को करके सिजदा बरहमन ने मुंह की खाई है ।
न पहुंचा आपको साक़ी छुड़ाकर पास ग़ैरों के । कलाई हाथ में लेकर मेरे दिल को कल आई है ।
मेरी तुरबत के सब्ज़े पर गुमां देता है शब नमका । लहद पर मोतियों की चरख़ ने चादर चढ़ाई है ।
रखे अल्लाह इज़्ज़त इश्क़ में कुछ बन नहीं पड़ती । अकेला मैं हूं और सब बुत की तरफ़ सारी ख़ुदाई है ।
लिया है अब रुए क़ातिल का बोसा ऐन ग़ुस्से में । जिगर देखो हमारा मुंह पे क्या तलवार खाई है ।
जिलाना आतिशे अफ़रोज़ का मुशकिल है दुनिया में । मेरे नालों ने अकसर आग दोज़ख़ में लगाई है ।
मुक़र्रर बोसे लेने से मज़ा मिलता है दुनिया में । लबे शीरीं ने जाना क़ंद की गोया मिठाई है ।
रुख़े रंगीं के बोसे ग़ैर की ग़ीबत में लेता हूँ । उड़ा है बाग़ से सैयाद बुलबुल की बन आई है ।
फंसी है इश्क़ के फंदे में यह दब जान अमानत की । मदद को था अली पहुंचो दमे मुशकिल कुशाई है ।

चुग़ली खाना लाल देव का राजा इन्द्र से मसनवी में
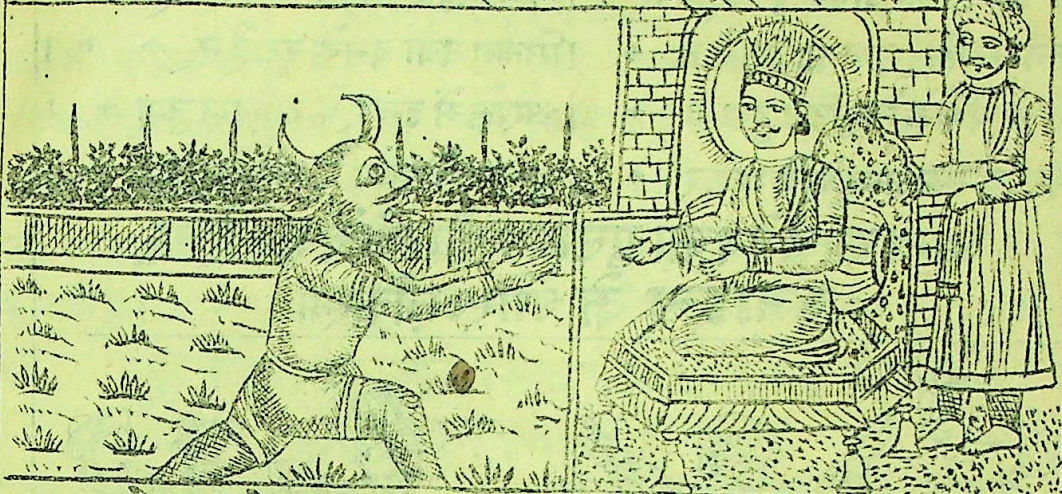
महा राज को हक़ रखे शाद काम ✣ । नई आज है अर्ज़ करता गुलाम ✣ ।
मैं खाता था इस दम चमन की हवा। ✣ । हक़ीक़त यह देखी कि होश उड़ गया ।
शजर है गुलशन जो मस्त शाद का ✣ । गुज़र है वहां आदमी ज़ाद का ✣ ✣ ।
नहीं करती इसला मेरी अक़्ल काम ✣ । वह इन्सान है या कि माहे तमाम ✣ ।
उसे कौन लाया है यां अपने साथ ✣ । इसी फ़िक्र में कब से मलता हूं हाथ ✣ ।

॥ कहिना सब्ज़ परी का लाल देव से आलमे यास में ॥

न कर लाल देव इसतरह के कलाम ✣ । अरे बे मुरव्वत जबां अपनी थाम ✣ ।
ख़ुदा के ग़ज़ब से ज़रा दिल में कांप ✣ । चुग़ल खोर के मुंह को डसते हैं सांप ✣ ।
परी की तरफ़ देख अहमक़ न बन ✣ । बुराई से बाज़ आब क़ौले हसन ✣ ।
किसी की बदी तू न कर ऐब है ✣ । कि उसका ख़ुदा आलमुल ग़ैब है ✣ ।
दिले आशिक़ इस बात से हिल गया ✣ । तुझे हाय कम्बख़्त क्या मिल गया ✣ ।

पूछना राजा इन्द्र का लाल देव से ग़ज़बनाक होकर

अरे देव तू है ये क्या बक रहा ॥ ✣ ॥ । मेरे बाग़ में काम इन्सां का क्या ॥ ✣ ॥
हुआ किसतरह यां बशर का गुज़र । । परिन्दों के दहशत से जलते हैं पर ✣ ।
क़दम रख सके जिन की क्या जान है । फ़रिश्तों की यां अक़्ल हैरान है ✣ ।
किसी देव से आशनाई न हो ✣ ✣ । परी कोई साथ उसके लाई न हो ✣ ।
उसे खींच ला पास मेरे शिताब ॥ ✣ । कि ग़ुस्से से है हाल मेरा ख़राब ✣ ।

जाना लाल देव का पास गुल्फ़ाम के और पूछना तैश खा कर के

बशर है कि जिन है कि साया है तू । । परिस्तान में क्यों कर आया है तू * ॥

उड़ा खौफ कर जल्द मुझ से बयां * । बिठाया तुझे किसने लाकर यहां * ॥

चमन का कोई गुल का बूटा है तू * । सितारा बया बन के टूटा है तू * * ।

[illegible]पर ये शैदा तेरा दिल हुवा ॥ * । अखाड़े में इन्दर के दाखिल हुवा * ।

मेरे साथ चल जल्द ऐ बे शऊर * । बुलाया है राजा ने अपने हुजूर * ।

लाना लालदेव का गुल्फ़ाम को खींच कर रोबरू राजा इन्द्र के और अर्ज़ करना

हुजूरी में हाज़िर है ये शोला रू * । महाराज साहब निगह रोबरू * ।

बजा आप का हुक्म लाया गुलाम * । चमन में पहुंच कर किया अपना काम ।

शजर के तले से उठाया उसे । * । * । सभा की तरफ़ खींच लाया उसे * ।

डरा मैं न कुछ उसकी फ़रयाद से * । उड़ा लाया कुमरी को शमशाद से * ।

सितम कीजिये जो सज़ावार है * । खड़ा दस्त बस्ता गुनहगार है * * ।

पूछना राजा इन्द्र का गुल्फ़ाम से सबब दाख़िल होने का परिस्तान में

अरे कौन है तू तेरा क्या है नाम * * । सभा तूने की मेरी बरहम तमाम * ।

तुझे लाया यां कौन ऐ बद सफ़ात * । बयां मुझ से कर जल्द ये वारदात * ।

किया क़स्द तूने परिस्तान का * * । न खौफ़ आया अपनी तुझे जान का * ।

मेरी सारी महफ़िल की ली आबरू । यहां घूरने आया परियों को तू * * ।

बता हाल अपना सब दर्द नाक * । जलाकर अभी वरना कर दूंगा ख़ाक ।

अर्ज़ करना गुलफ़ाम का राजा इंदर से आलमे हिरास में हाथ जोड़ कर

कहूं क्या फ़लक का सताया हूं मैं । यहां खेलकर जी पे आया हूं मैं ।
परी सब्ज़ है जो अखाड़े में यां । उसी का हूं दीवाना मैं नीम जां ।
सभा की सदा धूम सुनता था मैं । इसी फ़िक्र में सर को धुनता था मैं ।
वह आने लगी आज की सब जो यां । लटक कर हुवा तख़्त में मैं रवां ।
बला में हुवा यां गिरफ़्तार हूं । जो चाहो सज़ा दो गुनहगार हूं ।

बुलाना राजा इन्दर का सब्ज़ परी को सामने अपने और लानत मलामत करना

परी ओ परी सब्ज़ ओ बेहया । मेरे सामने जल्द आ बेहया ।
पड़ी है तेरी जान बुनयाद पर । कि आशिक़ हुई आदमी ज़ाद पर ।
बनाया अरी तूने इन्सां को यार । वकीले हसन सुन तु ऐ नाबकार ।
तेरा रंग ग़ैरत से उड़ता नहीं । तुझे क्या परी ज़ाद जुड़ता नहीं ।
सभा में लगा लाई इन्सां को साथ । तेरा अब गिरेबां है और मेरा हाथ ।

अर्ज़ करना सब्ज़ परी का राजा इन्दर से और नादिम करना गुलफ़ाम को और रोना गले लिपट कर

ख़ता ओ सितम की सज़ावार हूं । हक़ीक़त में तेरी गुनहगार हूं ।
अरे क्यों मैं यां तुझ से कहती थी क्या । न माना मेरा हाय हठ ने कहा ।
बला में पड़ा आप भी बेख़ता । मुझे भी अखाड़े में रुसवा किया ।
कहां फिर के अब देखूं राजा तुझे । ख़ुदा को मेरी जान सौंपा तुझे ।
जो जीते हैं तो फिर भी मिल जायंगे । नहीं तो किए की सज़ा पायेंगे ।

कहना राजा इन्दर का लाल देव से वास्ते क़ैद गुलफ़ाम के और निकलवाना सब्ज़ परी का अखाड़े से पर नोच के

अरे देव कर क़स्द बेदाद का । पकड़ हाथ इस आदमी ज़ाद का ।
कुआं वह जो है क़ाफ़ में पुरख़तर । अभी उसमें जाकर इसे क़ैद कर ।
परी सब्ज़ ये है जो आगे खड़ी । ख़ता की है इस बेसबाने बड़ी ।
सो तू नोच कर इसके पर और बाल । अखाड़े से मेरे अभी दे निकाल ।

उड़ाती फिरे ख़ाक ये कू बकू ✣ ✣ । न आये हमारे कभी रूबरू ✣ ।
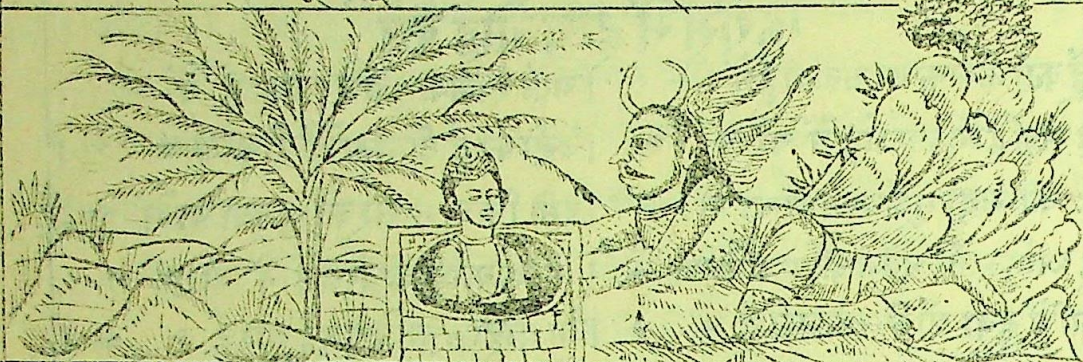
आना सब्ज़ परी का जोगन बन के परिस्तान में और आमद गाना जोगी का

जोगन आती है परी बन के परिस्तान के बीच । सुमरनी हाथों में मुन्दे परे हैं कान के बीच
सर पै इंडवा है रखे मुंह पै लगाई है भभूत । सेलियां डाले हैं गरदन में गरेबान के बीच

चाल मतवाली है आंखें हैं मये इश्क़ से लाल । मस्त शहज़ादये गुलफ़ाम के है ध्यान के बीच
सर को धुन्ते हैं सदा सुन के चरिंद और परिंद । भैरवी का अजब अंदाज़ है हर तान के बीच
नाल्ने बोसा है लबदीद की मुश्ताक़ आंखें । दिल है सीने में तपां वस्ल के अरमान के बीच ।
कहीं गुलफ़ाम का कोसों नहीं मिलता है पता । ख़ाक उड़ाती हुई फिरती है बियाबान के बीच
गमज़ा आफ़त है क़यामत है अदायें उस्की । हश्र आलम में बपा करती है इक आन के बीच
सब्ज़ जोड़े में है क्या चेहरए रोशन की ज़िया । सुबह को चांदनी ने खेत किया धान के बीच ।
देव मदहोश हैं परियों में नहीं दम उस्ताद । जिन तड़पते हैं पड़े जान नहीं जान के बीच ।

ठुमरी गाना जोगन का परिस्तान में बीच धुन भैरवीं के

मैं तो शहज़ादे को ढूंढन चलियां ✣ । अंग भभूत जोगन बन मलियां ✣ ।

छान फिरी सब गलियां + + + । मैंतो शहज़ादे को ढूंढन चलियां + ।
जी जावत है डगर नहीं आवत + । हम महिलों की परियां रे + + ।
लट छिटका के भेस बनाके + + । देस बिदेस निकलियां रे + + ।
अंग भभूत जोगन बन मलियां + । मैं तो शहज़ादे को ढूंढन चलियां + ।
सीस बकस गयो पांउ झुलस गयो + । धूप में बन बन जलियां रे + + ।
तन कुम्हलायो मुख मुरझा गयो + । जैसे गुलाब की कलियां रे + + ।
अंग भभूत जोगन बन मलियां + । छान फिरी सब गलियां + + ।

मैंतो शहज़ादे को ढूंढन चलियां

जग दुशमन है राह कठिन है + । बतायें क्यों कर छलियां रे + + ।
जाय कहो जल्लाद से गुइयां + + । छान फिरी सब गलियां + + ।

मैंतो शहज़ादे को ढूंढन चलियां

ठुमरी दूसरी ज़बानी जोगन के बीच धुन भैरवी के

कहां पाऊं कहां पाऊं यार रे मैं

अंतरह

यार की छांह नज़र नहीं आवत + । ढूंढत हूं संसार रे मैं + + ।

कहां पाऊं

कारे करूं किस हीले जाऊं + । सोचत हूं बार बार रे मैं + ।

कहां पाऊं

सपने में दिलदार को पाके + + । चौंक पड़ी भिनसार रे मैं + + ।

कहां पाऊं

पिया कारन जल्लाद के आगे + । होवं गले का हार रे मैं + + ।

कहां पाऊं कहां पाऊं यार रे मैं

ग़ज़ल ज़बानी जोगन के फ़िराक़ गुलफ़ाम में

मरता हूं तेरे हिज्र में ऐ यार ख़बर ले । । अब जान से जाता है ये बीमार ख़बर ले ।
फिरता हूं तसव्वुर में तेरे सुबह से ता शाम । बेताब है ये तालिबे दीदार ख़बर ले । + ।
बाज़ार वफ़ा गर्म है ऐ यूसुफ़े सानी । । दिल बेचता है तेरा ख़रीदार ख़बर ले ।
ढूंढे से भी अब तेरा ठिकाना नहीं मिलता । हूं छान रहा कूचा व बाज़ार ख़बर ले । + ।

दुनियां में कोई आन को ईदम का हूं मेहमान। अब सांस है लेना मुझे दुश्वार ख़बर ले ।
आंख उसकी हो क्या हाल दिले ज़ार से आगाह। किस तरह से बीमार को बीमार ख़बर ले ।
आंखे हैं लगीं दर से ख़िलाफ़ एक तुम्हारा । सर फोड़ रहा हूं पसे दीवार ख़बर ले ।
इतना भी नहीं चाहिये आशिक़ से न ग़ाफ़िल। सौ बार अगर टालो तो इक बार ख़बर ले ।
आग़ाज़ मुहब्बत में नहीं ज़ीस्त की उम्मेद । मरता है तेरा नाज़ह गिरफ़्तार ख़बर ले ।
लिल्लाह दिखा शक्ल अब ऐ निक़ बिरहमन। ऐ बेख़बर ऐ वस्ले गुल्नार ख़बर ले ।
सुन्ते हैं कि फ़ुरक़त में तड़पना है अमानत। जल्द से तुल बेदीन पए गुल्फ़ाम ख़बर ले।

ग़ज़ल दूसरी ज़बानी जोगन के आलम बे क़रारी में बीच धुन भैरवीं के

रूह बदन में है न पांजी को है कल से बेकली । जल्द ख़बर लो हम दमो जां फ़िराक़ में चली ।
बाद सबा जो सुबह दम बाग़ में नाज़ से चली। न ख़ल निहाल हो गये फूल गई कली कली
साये की तरह ख़ाक पड़ा चेहरा साफ़ उतर गया। आयाज़ वाल यार पर हुस्न की दुपहर ढली
तुम सा न सफ़री दहर में होगा हसीं ने को हकन। सर ख़न वान होंट हैं बात न बात कीड ली
तारकशी दुपहार ओढ़े किरन जो सैंक कर। हो शब माहिताब में क्या है सनम रला रली
चलना है बाग़ में वह गुल जब कि उठा के पांचे। ख़ार हर एक फूल को देती है क्या फ़लीर
क़त्ल किया जो अब में उस गुल ना ने सैर का। सब्ज़े ने दूर तक दिया दश्त में फ़र्श मिरख़मली
यार सा नाज़नीन कोई कब है दियाज़े दहर में। बोझ से दर्द सर हुआ पहिना जो जोड़ा सन्दली
मैंने पए फ़िराक़ में की जो एक आह आतशीं। जिसमें शम अपका फुका कहिने लगी जली
अई शराब साक़िया जामे शराब दे पिला । फूल खिले फले सजर अबर उठा हुआ चली
ज़ुल्फ़ें दराज़ फ़िता की मुख़ से उलझ के यार ने। जान छुटी अज़ाब से रोग गया बला टली ।
तेरी भौंहें में बल पड़ा क़त्ल हुआ मैं तेग़ से। तेरी उधर पलक हली मुझ पे इधर छुरी चली
वह के अमी ने ओसर में पांउ अमानत आ किया। जब हुई लग ज़िशय कज़राज वों से कलाम

तारीफ़ करना काले देव का जोगन की राजा इंदर से

ख़ुदा राजा जी को रखे याद मान + । जो हो जान बख़्शी तो खोलूं ज़बान + ।
परिस्तान में जोगिन इक आई है + । ख़ुदाई ख़ल्क़ सब उस्की तमाशाई है + ।
वह है नाचती गाती इस आन से + । कि जिन सद के होते हैं सौ जान से + ।

ग़ज़ब भैरवों की हर इक तान है ॥ ✦ ॥ ख़ुदाई का दिल उसपे क़ुर्बान है ॥ ✦ ॥
भले हैं भगत और अपां गुनी ॥ ✦ ॥ न देखी है जोगिन न ऐसी सुनी ॥ ✦ ॥

मुश्ताक़ होना राजा इंदर का और बुलवाना जोगिन को काले देव से

न कर देर ऐ देव बहरे ख़ुदा ॥ ✦ ॥ अखाड़े में मेरे उसे जल्द ला ॥ ✦ ॥
मैं देखूँ वह जोगिन है किस शान की । परी है क्या क़िस्म इन्सान की ॥ ✦ ॥
किसी देव जिन की सनाई नहीं ॥ ✦ । मेरे पास फ़रयाद लाई नहीं ॥ ✦ ॥
मज़ा राग का नाच का शौक़ है ॥ ✦ । फ़क़ीरों से मुझको बहुत शौक़ है ✦ ।
न लाये वह कुछ और दिल में ख़याल । दिखाये मुझे आके अपना जमाल ✦ ।

सवाल काले देव का जोगन से और ज़ाहिर करना कमाल इश्तियाक़ राजा इंदर का

अरी जोगन अब दिल में हो अपने शाद । किया है तुझे राजा इन्दर ने याद ✦ ।
किसी से तेरा सुन लिया है जो हाल ✦ । मुलाक़ात का शौक़ उसे है कमाल ।
तेरा देखना उसे शाक़ है ॥ ✦ ॥ तेरे नाच गाने का मुश्ताक़ है ॥ ✦ ।
मुराद अब तेरे दिल की बर आयेगी । जो माँगेगी वह चीज़ मिल जायेगी ।
न फिर उम्र भर तू करेगी सवाल ✦ । वह इक दम में कर देगा तुझ को निहाल

जवाब जोगन का तरफ़ काले देव के तान आमेज़ और लगावट करना बाद उसके

ये बातें न लाना ज़बाँ पर कभी ॥ ✦ । फ़क़ीरों से अच्छी नहीं दिल्लगी ✦ ।

बड़ा वह मेरा देनेवाला हुआ ॥ + ॥ खुशामद से मुंह तेरा काला हुआ + ॥
फ़क़ीरों की दौलत की परवा नहीं + । यहां हर के अफ़ज़ाल से क्या नहीं ॥
जो गाने का राजा तलबगार है ॥ + । तियाँ किसको चलने में इन्कार है + ।
तबीअत मुवाफ़िक अगर पाऊंगी + । जो आता है गुरु को सुना आऊंगी ।

महाराज कीजिये इधर अब निगाह । । ये जोगन है हाज़िर बहाल तबाह + ।
मिला किस ख़राबी से इसका निशान । । इन्द्र यों में परिस्तों में हर रूह रवान + ।
बहुत जल्द खिदमत में लाया हूं मैं ॥ अखाड़े में जोगिन को लाया हूं मैं + ।
अजब खुश गुलू है ये जोहरा जबीं + ॥ उड़ाती है जङ्गल में क्या भैरवीं ॥ + ।
हर इक तान पर लोट जाता है जी ॥ + ॥ सुना होगा गाना न ऐसा कभी ॥ + ।

देखना राजा इन्द्र का तरफ़ जोगिन के और दरयाफ़्त करना हाल जोगिन का

अरी जोगिन ऐ दर्द की मुबतिला + । फ़क़ीरों का क्या भेष तूने किया + ।
फ़िदा किसपै है किसपै शैदा है तू + । कोई आदमी है परी या है तू + + ।
कहां से यहां तेरा आना हुआ + ॥ कि मुश्ताक़ सारा ज़माना हुआ + ॥
फिरे ढूंढती फिरती है कूबकू + ॥ उड़ाती है क्यों खाक जङ्गल की तू + ।
सुना अपना गाना मुझे भी ज़रा + ॥ सुना भैरवीं छेड़ या जोगिया + ।

जवाब जोगिन का दर्द आमेज़ तरफ़ राजा इन्द्र के और कूफ़्ज़ी करना

महाराज पूछो न जोगन का हाल + ॥ फ़क़ीरों का दिल दर्द से है निढाल + ।

रा सुरूसे मामूक है छुट गया * * । मेरा राज इस देस में लुट गया * ॥
यहां ढूंढने इसको आई हूं मैं * * । व रोगन हूं राम की सताई हूं मैं * ॥
सुनाती हूं गाना जो सुन कोई है याद * । अजब क्या जो मिल जाये दिल की मुराद ।
अगर रवा से गैर हो दिल का हाल * । न जोगिन का दर्द कीजियेगा सवाल *

ठुमरी गाना जोगिन का सामने राजा इन्दर के बीच धुन भैरवीं के।

कहां गयो गुइंयां शहज़ादा जानी प्यारा * । दिल तड़पे रे हमारा ॥ * ॥ * ॥
कहां गयो गुइंयां शहज़ादा जानी प्यारा

वाका पता कहूं लागन नाहीं * । ढूंढ फिरी बन सारा ॥ * ॥ * ॥
कहां गयो

बिन जानी के इन नयनन में ॥ * ॥ रैन दिना अंधियारा ॥ * ॥ * ॥
कहां गयो

गुइंयां में जैसे सुरख मछरिया * । तरपत होगा बिचारा ॥ * ॥ * ॥
कहां गयो

कोउ कहे अस्ताद के जाके * । तुम्हरे दम का सहारा ॥ * ॥ * ॥
कहां गयो

गिलोरी देना राजा इन्दर का जोगिन को महज़ूज़ होकर और जबाब देना जोगिन का नशर में

पान लेके क्या करूं किसी सब्ज़ रंग का ध्यान है । हड्डियां चूना हैं बदन धान पान है ॥
इश्क़ लोहू पी पी के रंग लाया है * । फ़िराक़ ने क़त्ल का बीड़ा उठाया है ॥
गिलोरी लिये मुझे क्या तकता है * । फ़क़ीरों का मुंह कौन कील सकता है ॥

होरी गाना जोगिन का सामने राजा इन्दर के बीच धुन सिन्ध भैरवी के

जर जाये गुइंयां ऐसी होरी ॥ * ॥ बिन सइंया देहै सुलगन मोरी ॥ * ॥
भाग सुभाग पिया संग भागो ॥ * ॥ सब चुरियां हम तोरी ॥ * ॥ * ॥
सुरख चुनरिया उढ़ाउ न सजनी * । तन मन आग लगोरी * * ।
बिन सइयां देह सुलगन मोरी
अबीर गुलाल मिलाओ खाक में * । कैसो फाग कैसी होरी ॥ * ॥

आँगन के बीच रंग भरी गागर + । देखो पटक भर जोरी + + ।

बिन सइंयाँ देहँ सुलगत मोरी

बिन पिया मुखपर मार के थापर + । खूब गुलाल मलोरी + + +

नैनन की पिचकारी बनाके + + । अँसुअन रंग में बोरी + + ।

बिन सइंयाँ देहँ सुलगत मोरी

ठग मारी यों ठाढ़ी हूँ उन बिन + । जैसे कीन्ही है चोरी + + ।

का मुख ले उस्ताद के जाऊं + । जियाने आफ़त तोरी + + ।

बिन सइंयाँ देहँ सुलगत मोरी

हार देना राजा इन्दर का जोगिन को फिर जवाब देना जोगिन का और हार न लेना

हार जिन्हार न लोंगी दिल को खार है + । अपना गुल अज़ार गले का हार होतो बहार है

फिर ग़ज़ल गाना जोगन का बीच धुन भैरवीं के

दिल को चैन इकदम नहे चर्ख़ कहीं मिलता नहीं। वह मेरा गुलफ़ाम वह गुल पैरहन मिलता नहीं

किस तरफ़ सर मेरे दिल को उड़ा कर ले गई। गुलशने आलम में वह रश्के चमन मिलता नहीं

बाउली हूँ बहर उल्फ़त में जले खार की तरह । यूसफ़े गम गश्ता का चाहे जफ़न मिलता नहीं

जिन्दगी से तङ्ग हूँ बे यार बागे देहर में । बेकली है दिल को वह गुञ्चे दहन मिलता नहीं

जीते जी जिस पर मेरे इस्क करे तरके लिबास। बाद मुर्दन उसके हाथों से कफ़न मिलता नहीं।

शक नाऊँसे गुलिलों हूं सरापा दाग़ दार + । गुल बदन पर खाये हैं वह गुलबदन मिलता नहीं

जिसकी खातिर फांकती हूँ बहरे आलम में कुवे। वह गरीके कुलज़ में रंजो महन मिलता नहीं

करती हूं कूकू सदा सहरा में कुमरी की तरह । पर कहीं वह ग़ैरते सर्वे चमन मिलता नहीं +

ठोकरें खाती हूं जङ्गल की खफ़ा रहिना है जी। जान पर बन जाये ऐसा कोई बन मिलता नहीं

कांटे तलवों में चुभे हैं जाके अब ढूंढू कहां । बेरीयों में भी मेरा नाजुक बदन मिलता नहीं

सूरते फ़रहाद मैंने छान मारे सब पहाड़ । पर कोई उस्ताद सा शीरीं सखुन मिलता नहीं

शाली रूमाल देना राजा इन्दर का जोगिन को खुश होकर ॥ फिर जवाब देना जोगिन का ज़ुबानी में

रूमाल उन्हें दीजिये जो तङ्ग दस्त हैं + । फ़क़ीर अपनी कामली में मस्त हैं + ।

इश्क़ की गरमी ने मारा है + + । पसीने से किनारा है + + ।

राजा के दर में पहले से आई हूं * । जो मांगो सो पाऊं * * * ।

इक़रार करना राजा इन्दर का जोगिन से और ग़ज़ल गाना जोगिन का व तलब गुल्फ़ाम के

होता है कोई आन में अब काम हमारा । इन आम में दीजिये हमें गुल्फ़ाम हमारा ।
अब चाह से यूसफ़ को निकलवादो हमारे । घुटता है अंधेरे में दिला राम हमारा * ।
आशिक़ ने मेरे मांग लिया राजा से तुझको । दे आये कोई उसको ये पैग़ाम हमारा ।
आजाय अगर यार तो छाती से लगालें । सीने में तड़पा है दिले ना काम हमारा * ।
अब वस्ल के लूटेंगे मज़े ख़ल्क़ में बेखौफ़ । आगाज से बेहतर हुआ अन्जाम हमारा ।
मंगवाइये शहज़ादे को अब देर न कीजे । नाम आपका हो ख़ल्क़ में और काम हमारा ।
अल्लाह मददगार है हर हाल में उस्ताद । कर सक्ती है क्या गरदिशे ऐयाम हमारा ।

पहिचानना राजा इन्दर का सब्ज़ परी को और तलब करना लाल देव का वास्ते ख़लासी गुल्फ़ाम के ॥ * ॥

अरे लाल देव इस तरफ़ जल्द आ * । बड़ा मुझको जोगन ने धोखा दिया * ।
बनावट की थी सारी जादू गरी * * । नहीं आदमी सब्ज़ है ये परी * * ।
इसे ज़र की ख़्वाहिश न यां लाई थी * । छुड़ाने गिरफ़्तार को आई थी * ।
कभी इसको मिलता न वह गुल उज़ार * । मगर कौल हारा हूं मैं तीन बार * ।
निकाल अब कुएं से तु गुल्फ़ाम को । हवाले कर इस नेक अंजाम को * ।

मिलना गुल्फ़ाम का सब्ज़ परी को और गुफ़्तो शुनीद हाल ऐयाम फ़िराक़ के मा बैन आशिक़ व माशूक़ के सवाल।

सब्ज़ परी का

क़हर था हिज्र क़यामत थि जुदाई तेरी । मेरे ख़ालिक़ ने मुझे शक्ल दिखाई तेरी ।

जवाब शहज़ादे का

ख़ाक है मुंह पे मली बाल हैं सिर के बिखरे । हाय इस इश्क़ ने क्या शक्ल दिखाई तेरी

जवाब सब्ज़ परी का

मुझ पे होना था जो कुछ होगया इसका नहीं ग़म । होगई क़ैद मुसीबत से रिहाई तेरी ।

जवाब शहज़ादे का

तू मेरे आगे निकाली गई थी नोक के पार । राजा तक फिर हुई किस तरह से रसाई तेरी ।

जवाब सब्ज़ परी का

बनके जोगिन हुई इन्दर की सभा में दाखिल। फिर मुझे चाह यहाँ खींच के लाई तेरी ॥

जवाब शहज़ादे का

कहिके राजा से मुझे किसने तुझे दिखलाया। दुश्मने जाँ थी मेरी जान जुदाई तेरी ॥

जवाब सब्ज़ परी का

गाके और नाच के राजा को रिझाया मैंने। नब मुलाकात मयस्सर मुझे आई तेरी।

जवाब शहज़ादे का

ज़र की तालिब न हुई तुझ को लिया राजा से। अब शफ़ा ले गई शाही पै गदाई तेरी ॥

जवाब सब्ज़ परी का

देव कम्बख़्त ने इस ज़ोर से पहुंचा पकड़ा। हो गई लाल नज़ाकत से कलाई तेरी।

जवाब शहज़ादे का

मर्ज़े इश्क़ ने सारा तेरा जोबन लूटा ॥ आधी सूरत व खुदा मैने न पाई तेरी।

जवाब सब्ज़ परी का

कैद ने कर दिया बीमार से बदतर तुझ को। घर में ले चल के करूंगी मैं दवाई तेरी।

जवाब शहज़ादे का

पिंडलियां सूजी हैं तलवों में चुभे हैं काटे। खार देती है मुझे बरहिना पाई तेरी

जवाब सब्ज़ परी का

मुझ को ईज़ा हुई पायों के सदके से हुई। जान अल्लाह ने गुलफ़ाम बचाई तेरी ॥

जवाब शहज़ादे का

मै तेरे हाथ लगा तू मेरे फन्दे में फंसी ॥ मेरा मतलब हुआ उम्मेद बर आई तेरी।

जवाब सब्ज़ परी का

है तुम्हारा मेरे दिल में कि अब हम सलक। फ़ज़्ले उस्ताद से देखों न जुदाई तेरी ॥

मुबारक बाद गाना सब्ज़ परी का गुलफ़ाम से हम बग़लहोकर साथ सब परियों के

शादिये जलवए गुलफ़ाम मुबारिक होवे। ऐशव अशरत का सरंजाम मुबारक होवे

बाद मुद्दत के हसीनों का नसीबा जागा ॥ फर्शे राहत पै अब आराम मुबारक होवे ॥

सब्ज़ कुमरी को सज़ावार हो बुल २ को गुल। हम को यह सरवे गुल अन्दाम मुबारक होवे

पी चुके खून जिगर हिज्र में जी भर भर के । अब वस्ले दिलरुबा का जाम मुबारक होवे ॥
तख्त पर हमको मुबारक हो जहां मे फिरना । ग़ैर को गर्दिशे ऐयाम मुबारक होवे ॥
हो चुके इश्क़ में बदनाम बड़ी मुद्दत तक । अब ज़माने में हमें नाम मुबारक होवे ॥
जाल साज़ों के न फंदे में फ़ंसे ताइर दिल । गेसुओं का हमें अब दाम मुबारक होवे ॥
हूरे जन्नत को मुबारक हो फ़लक के तारे । बाग़ को गुल हमें गुलफ़ाम मुबारक होवे ॥
छीने शहज़ादे को अब राजा ने हम से उत्तार । ये अमानत सहर व शाम मुबारक होवे ॥

अमानत की इन्दर सभा समाप्तम्

तारीख़ इन्दर सभा तबाज़ाद मुसन्निफ़

हुई इन्दर सभा जिस दम मुरत्तिब * । जहां ने सुनके तौसीफ़ें सना की * ॥
बुतों ने दी सदा अल्लाह अल्ला * । हर इक मिसरा है या कुदरत ख़ुदा की ॥
हुआ जो याद जिसको ले उड़ा वह * । जवां किस २ ने गाने पर न वा की * ॥
किसी ने याद की लिक्खी किसी ने * । किसी ने जुस्तजू ला इन्तिहा की * ॥
उड़ी शुहरत जब इसका लखनऊ में * । अमानत सब ने ख़्वाहिश जा बजा की ॥
ज़िहे ये वजद बोल उट्ठे परीज़ाद * । ख़लायक में है धूम इन्दर सभा की ॥

इति

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ इन्दरसभा मदारीलाल

सुलतान शाह वज़ब में तशरीफ़ लाते हैं। सारे जहां को अपना मजम्मुल सिखाते हैं
खिलअत से सब अमीरों को करते हैं सरफ़राज़। रुतबा किसी का शान किसी की बढ़ाते हैं
अजब सकेज़मा हैं सदौलत पै खासव आम। मुजराई गुज़रे का भी नहीं बार पाते हैं॥

दोहरा वज़ीर ज़ादह

शहज़ादे खुल्लन नहीं क्यों हो आज मलूल। ऐसे हो कुछ सोच में जैसे गये कुछ भूल।

छन्द

अहिवाल अपने दिल का ज़रा तो बताइये। क्यों कर हूं दैर ख्वाह मुझे भी सुनाइये * ।
होवे जो वारदात मुझे भी जिताइये * । अपने से हो सके तो बजा उसको लाइये ।

दोहरा शाहज़ादह

कहूं मैं तुम से बात वह क़ौल करार ये हो । रखिये अपने तक इसे ज़ाहिर कहीं न हो ।

छन्द

इस कहिने से मेरे न कभी होना बदगुमां । तुम से नहीं है राज़ मेरी दिल का कुछ निहां
क्यों कर हो ग़ैर ख्वाह मेरे तुम तो जानजां। लेकिन शरीक हाल जो है तो करूं बयां।

इरादा करना शाहज़ादे का वास्ते सैर मुल्क दीगर के सवाल वज़ीर ज़ादह

सुनाइये मुझे खिल्लाह हाल ज़ार अपना । और जानियेगा इस आसी को दोस्तदार अपना

शाहज़ादह

न ग़ैर पर हो सखुन गिरिये आश्कार अपना। तो मैं बनाऊं तुम्हें दिल से राज़दार अपना।

वज़ीरज़ादह

वो नफ़ा से न हूजियेगा बद गुमान हरगिज़ । गवाह है ये है नहीं शिकार अच्छा ॥

शाहज़ादह

वज़ीर सुनो तुझसे दिल से मैं जो कहिता हूं । कि इस उलफ़त्ता है कई दिन से बार अच्छा

वज़ीरज़ादह

चमन की सैर करो जो इधर उधर बहिलाओ । और बुलबुल से फ़ारे कीजिये गुल्जार अच्छा

शाहज़ादह

समाई है दिल बदिहिनी को सैर मुल्कों की । नहीं खुश आता है अब राहिये दियार अच्छा

वज़ीरज़ादह

है ए गुलाम भी मौजूद साथ चलने को । अगर्चे तबा मुबारक पै होन बार अच्छा ।

शाहज़ादह

निकालो कोई क़वी हीला दिल से पैदा कर । न होवे ताकि सफ़र को नागवार अच्छा ।

वज़ीरज़ादह

शिकार से कोई बेहतर नज़र नहीं आता । ए हीला ऐसाही होवेगा पायेदार अच्छा ।

शाहज़ादह

ए तुमने खूब कहा हमको भी हुआ मंज़ूर । हो इस फ़रेब से शायद कि कुछ क़रार अच्छा

वज़ीरज़ादह

अब इससे कीजिये वल्ला को ईहमना खैर । करेगा चाहेगा जो कुछ किर्दगार अच्छा ।

शाहज़ादह

सलाह वक़्त यही है कि इक क़रीने से । करे न ज़्यादह शिताबी ए कारो बार अच्छा

वज़ीरज़ादह

सफ़र का सामान है तैयार सब मदारीलाल । फ़क़त है शाह की रुखसत का इन्तज़ार अच्छा

शाहज़ादह

बस अब ढली है यही दिल्मे ऐ मदारी लाल । कुदाइये किसी जङ्गल में राह वार अच्छा

रुख़सत लेना शाहज़ादे का वास्ते शिकार के पदर अपने से दोहा ।

शाहज़ादे का कहिना बापसे

रखता हूं मैं कुछ अरज़ गर अब मरज़ी पाऊं । हाल मैं अपने दर्द का सारा कहिके सुनाऊं ।

जवाब देना बाप का शाहज़ादे से

बेटा तुझ पर से मैं अभी सदक़े हो जाऊं । प्यारे जो कुछ ख़ुशी हो मेरे लिये मंगाऊं

छन्द शाहज़ादह

वहशत ने अब दिखाये ये सामां नये २ । होते हैं रोज़ चाक गिरे बान नये २ ।

दिल में है जाके देखूं बियाबां नये २ । अब कीजिये शिकार ग़िज़ाला नये २

जवाब पदर शाहज़ादह

निकलोगे तुम जो घर से मेरी जां नये २ । । होंगे नहीं ये हौसले इम कां नये नये ।

क्या क्या न होंगे रंज मेरी जां नये नये । दिल में जो हैं मेरे मेरे अरमां नये नये ।

शाहज़ादह

जो हुक्म हो तो करूं रोज़ आश कार कहीं । निकालूं इस दिल वहिशी का अब गुबार कहीं

पदर शाहज़ादह

कहो ख़ुदा के लिये अशाहाल ज़ार कहीं । कि दफ़ा होवे मेरे दिल्का इज़्तरार कहीं ।

शाहज़ादह

पड़ा तड़पता हूं बेबस में दाम वहिशत में । रिहाई हो तो करूं जाके अब शिकार कहीं

पदर शाहज़ादह

छुटा जो तू मेरे आंखों से ऐ मेये दिन आ । कहो कि तरह ज़िगर हो न तार २ कहीं

शाहज़ादह

लिखा है लोह ज़बीं पर मेरे बसद हसरत । फिरेगा होके ये आवारह रोज़गार कहीं

पदर शाहज़ादह

जियोंगा बिन तेरे मैं किस तरह से शाह अज़ीज़ । ये ज़िन्दगी में होवे मुझे नागवार कहीं

शाहज़ादह

ये हीला साफ़ फ़लक कैसा हीला करता है । न शब को चैन है दिन को न है क़रार कहीं

पदर शाहज़ादह

जुदा हो इकबयक आंखों से जिस्का लख़्ते ज़िगर । पदर को उसके हो क्योंकर भला क़रार कहीं

शाहज़ादह

न मना कीजिये लिल्लाह मुझको जाने दो । ये डर है हो न इसी रंज में अपना कार कहीं

पदर शाहज़ादह

मुबारक न हो पिसर को पदर की पीरी में । है एक जौ वो किसू का भला पुकार कहीं ।

शाहज़ादह

जुदा जो आप के क़दमों से करती है तक़दीर । फिरायेगी मुझे लेजा के कोह सार कहीं ।

पदर शाहज़ादह

सुलाऊंगा मैं तुझे दिल्से किसतरह प्यारे । ये याद तेरी रखेगी कि हो न ख़्वार कहीं ॥

शाहज़ादह

शिकार के लिये जाता हूं ऐ मदारी लाल । मैं ख़ुद न हूं किसी सैयाद का शिकार कहीं ।

पदर शाहज़ादह

तुम अपने दिल के तो मुख़्तार हो मदारी लाल । हुआ है ग़ैर के दिल पर भी इख़्तियार कहीं

गाना शाहज़ादे का बतर्ज़ आमद

शाहज़ादे आज निकले हैं घर से सिकार को । देखें शिकार करते हैं किस सहसवार को
अबरू कमान तेग़ निगाह और बने हैं तीर । तोंके सितावगाये कुचों के उभार को । ।

शाहज़ादी

करता है इस दश्त में जो तू आज शिकार । सामने तेरी बख़्त की तुरूप हुई सवार ।

छन्द

आया न तुझ को ख़ौफ़ हमारे जलाल का । तूने जो कर लिया है शिकार एक ग़िज़ाल का
छूटा हुआ ये सैद तो है तेरे जाल का । बेजा है क़स्द तेरा अब इस दम हलाल का

शाहज़ादह

कहिनी है क्या देर है करेगी क्या इज़हार ज़रा ज़बान को थाम के कर कुछ तो गुफ़्तार

छन्द

मैंने जो कर लिया है शिकार एक ग़िज़ाल का । बस अब हुआ है तेरे वास्ते मलाल का
परदा उठा के देख तो दस्तो ख़्याल का । होगा असीर और कोई तेरे जाल का ।

शाहज़ादी

सैद को मेरे जो सैद अपना बनाया तूने । ख़ौफ़ कुछ अपनी तबियत में न लाया तूने
जोरियां करना और उस पर है ए सीनैज़ोरी । कहीं कमज़ोर है शायद मुझे पाया तूने ।
बे महाबा मेरे जङ्गल में तू करता है शिकार । अपना नख़्चीर है सैयाद बनाया तूने । ।
पीछे इस सैद के थे देर से सहेरा में ख़राब । हाथ से मेरे शिकार अब ए छुटाया तूने

ये मज़ा तू नहीं सैयाद है सैयादी का। । सैद जो अब है किया अपना पराया तूने
रहम आजाता है हर बार तेरी सूरत पर। वरना इस वक़्त मुझे ख़ूब जिलाया तूने
बेहर नरक़ीह इहाँ आई थी करने को शिकार। अब शिकार अपना मुझे है फ़बनाया तूने

शाहज़ादह

कौन है तू जो यहाँ शोर मचाया तूने । मुझ़ बक २ के मेरा मग़ज़ उड़ाया तूने। ।
होश के जाके खबर ले कहीं अय एक क़मर। गर है शहज़ोर तो क्या मेरा बनाया तूने
इन तेरी बातों से होता है ए शाबित मुझ को। है मगर दख़ल ये जागीर में पाया तूने ।
सैद को तेरे भला कहि को करता मैं शिकार। होता शाबित कि जो ये तीर लगाया तूने
आप शरमिन्दा हूँ मैं अपनी ख़ता पर वल्लाह। कि मेरे हाथ से ए सदमा उठाया तूने।
जो सज़ा चाहो मुझे दो कि सज़ावार हूँ मैं। दाम उल्फ़त में है अब मुझ को फँसाया तूने
दस्त सैयाद से मुद्दत में रिहाई पाई। * । फिर उसी कुंज क़फ़स में है फँसाया तूने

वज़ीरज़ादी

प्यारे सच बतला मुझे क्यों है चेहरा ज़र्द। आह लबों पर से हरदम है अब सर्द

शाहज़ादी

किससे जाकर मैं कहूँ अपना दुखदर्द। गया है मुझ को मार के एक बेवफ़ा मर्द

छन्द वज़ीरज़ादी

रुख तेरा ज़र्द फूल सा कुम्हला रहा है आज। और अब ग़म का दिल पे तेरे छा रहा है आज
दुखदर्द तेरा जी जो ये अब पा रहा है आज। ये देख २ होश मेरा जा रहा है आज ।

छन्द शाहज़ादी

कुछ पेचो ताब सा मेरा दिल खा रहा है आज। और रोने के सिवा नहीं कुछ भा रहा है आज
मैं क्या कहूँ जो दिल में मेरे आ रहा है आज। आफ़त हज़ार जान पै बहला रहा है आज

वज़ीरज़ादी

वारी तुम अपना हाल बतलाओ तो क्या हुआ। दिल पर तुम्हारे कौन सा सदमा तेरा हुआ
सहरा में जो गये थे अभी खेलने शिकार। शायद किसी परी का तुझे रंग लगा हुआ
इन बातों से तू अपने तई मत फ़ंसाइयो । इस इश्क़ में बता तो किसी का भला हुआ
है २ ए कैसा २ समाया तुझे खयाल। * । ये इश्क़ तेरे जान का दुश्मन बना हुआ।
क्यों कर बुझाऊँ आह में ये आतिशे खियाल। दिल में जो अब है मेरे ये शोला लगा हुआ

जंगल में जाके उसको मैं करलाती हूं तलाश । दिल्में मेरे है ख़्वाहिश दम् उना हुआ ।
जाती हूं मैं तलाश में औरों के मदारी लाल । है जिसकी सारी ज़ात का ये गुल खिला हुआ

शाहज़ादी

इस फ़िक्र में मैं ख़ुद हूं इलाही ये क्या हुआ । सुन तान वों को अब तो ये क्या आरज़ा हुआ
सहिरा में वक़्त सैर हुई तुरफ़ा वार दात । इक महज़बीं का आज मेरा सामना हुआ
रहता है हर घड़ी मुझे उस माहिरू का ध्यान । दिल मेरा लाख जी से है उस पर फ़िदा हुआ
नासेह न कर ख़ुदा के लिये ऐसी गुफ़्तगू । छुटता नहीं छुड़ाये से ये दिल फंसा हुआ
रह जायेगी हमें ये शिकायत तमाम उम्र । तुम को न मेरे रञ्ज का सदमा ज़रा हुआ ।
बहिरे ख़ुदा न दिल्को तू कर अब बेक़रार । होगा वही नसीब में जो है लिखा हुआ ।
तदबीर कोई ऐसी बता तू मदारी लाल । निकले गुबार दिल्में है जो कुछ भरा हुआ ।

गाना शाहज़ादी का

याद मुहिं उनकी आवेरी * । तड़फ तड़फ जिया रहिजात * ।
याद मोहि उनकी आवेरी
इत उन फिरत रहत औरन संग * । मोको देत नेक दरसन * * ।
याही सोच में आन पड़ी * * । कोइ उन को जाइ सुनावेरी * ।
याद मोहिं उन की आवेरी
इतना जाइ कहे कोइ उन सें * । हम तुमरे दरसन को तरसें * * ।
बिरहा आगिन बजावेरी * * । देत कोउ कैसे बुझावेरी * * ।
याद मोहि उन की आवेरी
लाख लोहसे कोउ समझावे * । बिन पिया चैन जिया नहिं पावे * ।
दास मदारी बिन शाहज़ादे का * । बयस अकारत जावेरी * * ।
याद मोहिं उन की आवेरी

तरजीह बंद वज़ीर ज़ादी

सैर गुलशन का कुछ ध्यान हो आली २ । हुक्म भिजवाऊं कि तय्यार हो डाली २
तेरे ही जान का जल्सा है ऐ वाली २ । हाय ये वक़्त न जाये कहीं खाली २
मेह बरसता है घटा छाई है काली २ । बुलबुलें बाग़ में ख़ुश फिरती हैं डाली २
आज की सैर बे अज़ सैर है फ़रदोशवरीं । जिसने देखा उसे फ़ौरन हुई दिल्को तस्कीं

और निलस मान का आलम इस आंखों में हजीं। फिर खुदा जाने कि ए लुत्फ़ मिले या कि नहीं

मेह बरस्ता है घटा छाई है काली २ । बुलबुलें बाग़ में खुश फिरती हैं डाली २
फूल फूला है कहीं और हवा खुर्रम। । ताज़गी दिल्को हो दीदार से जिसके हर दम
अब इकदम के लिये कीजिये गर मुझपे करम। ये समा नूर के आलम का न होगा कुछ कम

मेह बरस्ता है घटा छाई है काली २ । बुल बुलें बाग़ में खुस फिरती हैं डाली २
किसी जानिब कोये सब्जा पड़ा लहिराता है। गुलें सोसन भी उदाहट कहीं दिखलाता है
दीदये अब्र से अश्क़ जो टपकाता है । कब ये सामान पसन्द उसके तईं आता है

मेह बरस्ता है घटा छाई है काली २ । बुल बुलें बाग़ में खुश फिरती हैं डाली २
कैसा २ है जमा इश्क का सामान वहां । आप के चलने से होवेगा न नुक़्सान वहां।
झूलने गाने का क्या लुत्फ़ है इस आन वहां। दिल में जो कुछ है वह सब निकलेंगे अरमान वहीं

मेह बरस्ता है घटा छाई है काली २ । बुल बुलें बाग़ में खुश फिरती हैं डाली २
सहन गुलशन में जो तू चलके खरामा हो जाय। अर्क़ खिजलत का फ़रद गुल ये नुमायां हो जाय
नरगिस आंखों को छिपाकर कहीं पिनहा हो जाय। रंग ये छपाये कि सब ज़र्द खियाबां हो जाय

मेह बरस्ता है घटा छाई है काली २ । बुलबुलें बाग़ मे खुश फिरती हैं डाली २
लालगूं बादये गुल रंग का पैमाना हो । सेहन गुलज़ार भी सब सूरत मैखाना हो
पेंग झूलें पै हर एक सिमत को मस्ताना हो। सूरतों देश के रागों का वहां गाना हो।

मेह बरस्ता है घटा छाई है काली २ । बुल बुलें बाग़ में खुश फिरती हैं डाली २

तरज़ीय बन्द शाहज़ादी

सैर गुलशन न खुश आई न फ़िज़ा सावन की। फ़स्ल रहिती है इन आंखों में सदा सावन की
कैफ़ियत क्या मैं उठाऊंगी भला सावन की। बरी दिलबर हो तो हो सैर कुजा सावन की

यार बिन किस्को खुश आती है घटा सावन की। जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की
गुलशने देह है मेरी आंखों में है खार तमाम । और दुनिया के मज़े मुझ को हुये दिल्से हराम
मिले रहने अगर बाग़ जिना मुझको मुदाम। व खुदा बिस्तरे गुल हो मुझे गिल खन का मुक़ाम

यार बिन किसको खुश आती है घटा सावन की। जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की।
गुल ये हंस २ के मुझे और रुलावेंगे वहां । सूरते बादल बाहूं में बहुत आह कुनां ।
जिस्म तर है तेरे हो जायगा तूफान अयां। मेरे जाने से न होगा तुम्हें हासिल ऐजां ।

यार बिन किस्को खुश आती है घटा सावन की। जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की ।

देख उस सब्ज़ए रुख़ को मैं ज़माना भूली । सोसनी लब से मैं मिस्सी का ज़माना भूली ।
पंजए सुर्ख़ से मेंहदी का लगाना भूली । ऐसी बेहोश हुई अपना बिगाना भूली ।
यार बिन किसको ख़ुश आती है घटा सावन की । जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की ।
महवे नज़ारए ख़ुद हूं मैं बुलाऊं मैं असीर । सूरते आइना हूं या कि बरंगे तसवीर ।
ऐसा सैयादने दिल पर मेरे मारा है तीर । बिस्तरे ख़ाक पे तड़पूं हूं पड़ी मैं दिलगीर ।
यार बिन किसको ख़ुश आती है घटा सावन की । जी उड़ाये लिये जाती है घटा सावन की ।
क्या दिखायेगी तो अब ऐश का सामान मुझे । गुलके दाग़ों से क्या सर्व चराग़ान मुझे ।
अब ख़ुदा के लिये मत छोड़ तो इस आन मुझे । जाने जान जान से कर अब नहीं हल्कान मुझे ।
यार बिन किसको ख़ुश आती है घटा सावन की । जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की । ।
नशे इश्क़ से इस तरह छकाया तूने । अपने बिगानों में मस्ताना बनाया तूने ।
ऐसा झूला मुझे जान झुलाया तूने । देस सुनवाके मेरा देस छुड़ाया तूने । ।
यार बिन किसको ख़ुश आती है घटा सावन की । जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की ।

देस गाना शहज़ादी का

कोई जाय कहो ये मोरी ॥ ॥ ॥ तुम प्रीत लगाय काहे तोरी ॥ ॥ ॥

कोई जाय कहो ये मोरी

मोरे नयनन नींद न आवे ॥ ॥ ॥ दिन रैन तलफ़ते जावे ॥ ॥ ॥
कोई जाके पिया को सुनावे ॥ ॥ ॥ हम तुम बिन ब्याकुल गोरी ॥ ॥

कोई जाय कहो ये मोरी

जो हो बिरहा धूम मचावे ॥ ॥ ॥ मोरे हिरदे आग लगावे ॥ ॥ ॥
सब भूल गई चतुराई ॥ ॥ ॥ मैं जरत हूं जैसे होरी ॥ ॥ ॥

कोई जाय कहो ये मोरी

तुम दास मदारी जाओ ॥ ॥ ॥ शाहज़ादे को नेक ले आओ
अब जिन मोह न तरसाओ ॥ ॥ हम प्रीति करी क्या चोरी ॥ ॥ ॥

कोई जाय कहो ये मोरी

तरजीय बन्द मुतज़म्मिन सवाला तअश्शुक़ शाहज़ादे

फ़िराक़ यार से क्या २ अज़ाब है दिल्को । ख़याल ज़ुल्फ़ में क्या पेचो ताब है दिल्को
कहूं मैं किससे ना कुछ इज़्तराब है दिल्को । ग़रज़ कि रंजो अलम बेहिसाब है दिल्को ।

न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल्को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल्को।
शबे जुदाई के हरचन्द ग़म उठाती हूं। जहां पै शिकवह नहीं पर ज़बां में लाती हूं
बजाय अश्क के आंखो से खूं बहाती हूं। जो दस्त हाल में अपने ये मुज़्तर पाती हूं।
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल्को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल्को
जुदाई उस्की हमें अब तलक सताती है। उम्मेद वस्ल में क्या रूह तन्‌ में आती है
तपे फ़िराक़ अब आंखों से खूं बहाती है। न चैन आता है दिल्को न जान जाती है।
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल्को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल्को
शबे फ़िराक़ के सदमें उठाऊं मैं कब तक। शबे जुदाई से दिल्को जलाऊं मैं कब तक
ग़मज़ कि तरह ये आंसू बहाऊं मैं कब तक। भला ये सोज़ जिगर [illegible] मैं कब तक
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल्को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल्को।
बस अब ये जाने दे बातें तुझे हमारी क़सम। खुदा के वास्ते ये ज़िक्र भूल कर हम दम।
तेरे कलाम से होता है और रंजो अलम। हमारे दिन नहीं ऐसे कि फिर मिले वह सनम
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल्को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल्को
विसाल यार की तदबीर क्या भला कीजिये। कहां तलक शबे हिजर के ग़म सहा कीजे
कहां से लाइये उस गुल्को और क्या कीजे। सिवाय इश्क़ के ये [illegible] बस पढ़ा कीजे
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल्को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल्को।
हमें फ़िराक़ है ग़ैरों से उनको सोहबत है। इलाही कैसी मुहब्बत ये कैसी उल्फ़त है।
मैं यां तड़फ़ती हूं वां उन्को राज़ इशरत है। हमारी लाल कहूं का किसक्व आफ़त है
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल्को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल्को

नसीहत वन्द मुशन मिन जबावान अज़ वज़ीर ज़ादी।

जो ऐसे रंज में तू मुबतिला नज़र आये। जिगर न टुकड़े हो क्यों फिर न चश्म भर आये
दुआ क़बूल ये अल्लाह मेरी फ़रमाये। कि तेरा रंजो मुसीवत न मुझको दिखलाये
जो आरज़ू हो तेरे दिल्की जल्द बर आये। खुदा करे कि सनम तेरा तुझ को मिल जाये
चमन कि सैर करो चलके दिल्को बहिलाओ। विसाल होवेगा उस गुलका तुम न घबराओ
मैं सदके जाऊं ज़रा दिल्को अपने समझाओ। कलाम पर ज़बां पर न दम व हम लाओ।
जो आरज़ू हो तेरे दिल्को जल्द बर आये। खुदा करे कि सनम तेरा तुझ को मिल जाये
ज़माना रहता है कब एक [illegible] हुआ है दिलां

कभी फ़िराक़ हेगा है विसाल गुंचे दहाँ । फ़लक के हाथों से सच है कि जी को ताब कहाँ
जो आरज़ू हो तेरे दिल की जल्द बर आये । खुदा करे कि सनम तेरा तुझको मिल जाये
खुदा वह रोज़ कहीं जल्द अब दिखाये तुझे । मये व साल सनम जाने जाँ पिलाये तुझे
रुलाये ग़ैरों को अल्लाह और हंसाये तुझे । न फिर कभी शब हिजराँ के ग़म दिखाये तुझे
जो आरज़ू हो तेरे दिल की जल्द बर आये । खुदा करे कि सनम तेरा तुझको मिल जाये
तेरे अलम से मुझे भी मलाल हुआ जानी । तेरे ही रंज से मुझको हुआ है ग़म जानी ।
हो बेक़रारी दिल किस तरह रक़म जानी । ग़रज़ हुआ है यही अब तो हम व दम जानी
जो आरज़ू हो तेरे दिल की जल्द बर आये । खुदा करे कि तेरा यार तुझको मिल जाये
तुम्हें जो देखती हूँ फ़र्त ग़म से अब कहलाल । बताऊँ क्या कि जो आता है अब जी को ख़याल
बयान ऐसे ख़यालात का बहुत है महाल । मगर खुलासे ये एक अम्र है बुवा फ़िलहाल
जो आरज़ू हो तेरे दिल की जल्द बर आये । खुदा करे कि तेरा यार तुझको मिल जाये
तुम्हें मलूल जो यों देखती हूं मैं हरदम * । बहुत उठाती हूं मैं अपने दिल से सदमे ग़म
मदारी लाल हनारी हुआ है ये हरदम .. । रहे न बाक़ी तेरे दिल में कोई रंजो अलम ।
जो आरज़ू हो तेरे दिल की जल्द बर आये । खुदा करे कि तेरा यार तुझको मिल जाये

ठुमरी गाना शहज़ादी का रागिनी खटौमें

जबसे सैंयां मेरी सुधि बिसराई * । तड़प तड़प जिय जाये हो * ।
किन सौतन रोना कर दीना * * । प्यारे को मिल जाये हो * * ।
ऐसे कठिन से प्रीत लगाई * * । मन मेरो पछिताये हो * * ।
अँखियन पाछे प्रीत लगाई ॥ ॥ ॥ मन मेरो पछिताये हो * * ।
नेक मदारी लाल ले आओ ॥ ॥ । शाहज़ादे को लाई हो * * * ।

तरजीय बन्द मुतज़म्मिन सवालात अज़ शहज़ादी

घोरी रह हाल हूं मैं बरंगे जरस २ । दौड़ा रहा है सर पे तू मेरे फ़रस २ ।
बेताब हूं मैं अपने पिया बिन दरस २ । एक पल जो गुज़रा समझी मैं गुज़रा बरस २
ऐ अब्र नौबहार न दे दुख बरस २ । मैं आप मर रही हूं पिया बिन तरस २
हर सिम्त झूम २ के आती है जो घटा । हसरत से देख २ के सीने में जी घटा ।
साक़ी हर एक चीज़ से जी मेरा है हटा । साग़र से मेरे जाम बिलौरी को दे उठा ।
ऐ अब्र नौबहार न दे दुख बरस २ । मैं आप मर रही हूं पिया बिन तरस २ ।

हैहै नज़र पड़ा सुरूज जब से व महजमाल । घुट २ के हो गईहूं में अब तू रने मलाल ।
गुलशन न जी को भाना है अब न कोई निहाल। उस सर्व क़द का आत पहर रहिता है ख्याल
ऐ अब तौ बहार न दे दुख बरस २ । मैं आप मर रहीं हूं पिया बिन तरस २ ।
जबसे दिखा गया रुख रोशन की वह झलक। नरगिस कि तरह अपनी खुसी रहिती है पलक
पहुंचाया मेरा हाल जो तूने यहां तलक । ये कबका बदला आज लिया तूने ऐ फलक
ऐ अब तौ बहार न दे दुख न बरस २ । मैं आप मर रहीं हूं पिया बिन तरस २
खाने कि कुछ हवस है न सोने की कुछ हवस। बाकी अगर है दिल्में तो रोने की कुछ हवस
है उसके राम में जान के खोने की कुछ हवस। इस चाह में है अपने डुबोने की कुछ हवस
ऐ अब तौ बहार न दे दुख बरस २ । मैं आप मर रहीं हूं पिया बिन तरस २ ।

तरज़ीय बन्द मुतज़म्मिन जवाबात अज़ बज़ीर ज़ादी

ये मौसमे बहार ये अल्लाह का करम । नेहरे भरी हैं सूरते उस्ताद चश्म नम ।
याकूत का है हाथ में लाले के जाम जम। किस वक़्त में ये सरपे मेरे टूटा कोह गम
अफ़सोस इस फ़लक ने किया तुरूपे क्या सितम। किन रोजों में जुदा किया तुझसे मेरा सनम
बिजली तड़पती है कहीं बादल का जोश है। और चार सू से बादसबा का खरोश है ।
हरएक यार से नावहम नाओ नोश है ॥ और सब्ज़ ए चमन कहीं नजहत फ़रोश है
अफ़सोस इस फ़लक ने किया तुरूपे क्या सितम। किन रोज़ों में जुदा किया तुझसे मेरा सनम
कोइल चहक रही है पपी हों का शोर है । आबे रवां को और किसी जानिब को ज़ोर है
दिल्को जला रही कहीं आवाज़ मोर है । जिवर से हर शजर भी जड़ा पोर पोर है ।
अफ़सोस इस फ़लक ने किया तुरूपे क्या सितम। किन रोज़ों में जुदा किया तुझसे मेरा सनम
और हिज्र में भला कोई पावेगा लुत्फ़ क्या । आंखों में हो तिलस्म का गुलशन अगर खिला
दिल है कबाब हिज्र में उस यार के मेरा । जल्दी मेरे सनम से खुदा दे तू मिला ।
अफ़सोस इस फ़लक ने किया तुरूपे क्या सितम। किन रोज़ों में जुदा किया तुझसे मेरा सनम
इस चर्ख कज अदा से ये हासिल हुआ तुझे। माशूक़ से जुदा किया ये कुछ दिया तुझे।
चाहे अलम में क़ैद है अब तो किया तुझे । दुनिया के लुत्फ़ों ऐशो मज़े से रखा तुझे ।
अफ़सोस इस फ़लक ने किया तुरूपे क्या सितम। किन रोज़ों में जुदा किया तुझसे मेरा सनम

कलाम वज़ीर ज़ादी

गुलफ़ाम तेला तो कभी इन बातों में जिन्हार न हो। नक़्द जां देके तू सौदे की ख़रीदार न हो ।

दिल्कि बेताबी से ये ख़ौफ़ मुझे आता है । अब कोई दिये तो फ़स्ल बहार वज़ार न हो ।
सैर गुलज़ार करो दिल्को ज़रा बहलाओ । इस मुसीबत के तो वल्लाह सज़ावार न हो ।
सब्र कर वहीरे .ख़ुदा दिल्को ज़रा दे तस्कीं । फ़िर कभी जोश में ये दीदए ख़ूंबार न हो ।
सदमे पर सदमा उठाती हो भला क्यों दिलबर । जाने जां मुझ से किसी तौर से बेज़ार न हो ।
मैं तो हाज़िर हूं तेरे वास्ते ऐ राहत ज़ान । जान तक आवे अगर काम तो इन्कार नहो

कलाम शाहज़ादी

इस बलामें तो किया तूने गिरफ़्तार मुझे । अब दिखा उसको ख़ुदा के लिये दीदार मुझे ।
हाल अपना नहीं कुछ खुलता है मुझको जानी । या इलाही ये हुआ कौनसा आज़ार मुझे
सैर गुलज़ार करूं देखूं मैं गुलशन कि बहार । एक लहज़ा भी अगर ग़म से मिले बार मुझे
दिल के बहिलाने कि तदबीर भला क्या कीजे । फ़र्ते ग़म ने तो किया बसकि है लाचार मुझे
मन्नते करती हूं सर अपना क़दम पर धर के । सदक़े मैं तेरे मिलादे मेरा दिल्दार मुझे ।
क़ितने उम्मेद हुई अपने य गानों से अज़ीज़ । दोस्त दुश्मन हुये सब करके ख़ता वार मुझे
चश्म उम्मेद थी वारी मुझे जिन लोगों से । कर के बरबाद वही करते हैं हुशियार मुझे

छन्द कहिना वज़ीरज़ादी का शाहज़ादे से

मुझ पर साबित हो गया तेरा मक्र व फ़रेब । आंख तेरी जिसपर पड़ी उसे हुआ आसेब ।
एक बात तुम से कहती हूं गरहो ख़फ़ा नहीं । प्यारे तुम्हारे दिल्में मुरौव्वत ज़रा नहीं ।
दिल लीजे जिस का कीजि फ़िर उससे वफ़ा नहीं । वल्लाह ख़ुद ग़रज़ की मैं हू आशना नहीं ।
किसने तालीम किया ऐ सितम ईजाद तुझे । ख़ूब हैं मकर ज़माने के अरे याद तुझे ।
शाहदीका जो जंगल में तू करता है शिकार । घेर के लाई क़ज़ा क्या है परीज़ाद तुझे ।
दिल जो हर एक का क़ाबू में तू कर लेता है । कौनसा शहर है ऐसा ये बना याद तुझे ।
खींच देता है शबी अपनि पराई दिल्पर । गर कहूं तू है बजा मानी व बहज़ाद तुझे ।
आ मेरे साथ अगर ज़ुल्फ़ का सौदाई है । चल के दिखलाऊं अभी ग़ाने हद्दाद तुझे
किस लिये अपनी तबियत में तु होता है उदास । क़फ़िसे हिज्र से करदूंगी मैं आज़ाद तुझे ।
मान कहने को मेरे वर्ना तू पछितायेगा । ये सितम तेरी करेगी अरे बरबाद तुझे ।

जवाब शाहज़ादे का वज़ीरज़ादी से

माना है मुझको नहीं तेरा नया और व । बातें तुझको मक्र की आती हैं नहीं जेब ।
होता हूं इन बुतो पै मैं हरगिज़ फ़िदा नहीं । इनके मेरी क्वतों को मुरौव्वत ज़रा नहीं ।

छन्द

सदके खुदा के फिर हमें तुमसे मिला दिया। जिस्की न थी उम्मेद वह आँखों दिखा दिया
दिन रात की हँसी वही फिर कह दिखा दिया। और मार बने विसाल को वाहम मिला दिया

शाहज़ादी

आज की रात चलो ऐश मेरी जान करें । अपने इस कलवय अरिखजां को परिस्तान करें
दिल में आता है शबे माह में पी के शराब । हम और तुम आज की शब सैर गुलिस्तां में करें
बाद मुद्दत के खुदा ने ये किया रोज नसीब। गुहर आरजू से पुर कहीं दामान करें।
बारहा हिज्र में तेरे ये हुआ दिल्को खयाल। हम किसी तौर से अपने नई हल्कान करें
मिन्नतें मानी हैं दरगाहों में चिल्ले बांधे । कि कहीं आप मेरे घर को दरखशान करे
ख्वाब में जब न नज़र आते थे तुम ऐ रशके कमर। कब हम इस झूठी सुहब्बत का भला ध्यान करें
नाम आलम में हो ऐजां कि परशाद यही । गर करम अपना कहीं शाहे खुरासान करें

शाहज़ादह

दिलके पूरे मेरे सब आपजी अरमान करें । सो रहें आप मेरे साथ तो अहिसान करें
दिल में आता है कि बिछ वाइये कोठे पे पलंग। चांदनी रात में वहां चल के शबिस्तान करें
हर घड़ी फ़र्त खुशी से यही आताहै खयाल। नकदजां अपना तेरे सिर पे से कुर्बान करें
अपनी आंखों से मुझे कुछ दिनों ये खौफ रहा। फिर दुबारह कहीं बरपा न ये तूफ़ान करें
शब मैं सयाद कि मज़ारों पे इसी मिन्नत पर। कभी भूले से मेरी याद मेरी जान करें।
झूठे वादों ने तुम्हारे ये किया हाल अपना । क्यों न इस गम में वह अपने नई हल्कान करें
नाम पर जिन्के फ़िदा जान कि परशाद हैं हम। क्यों न वह आके मदद मेरी हर एक आन करें

बसन्त गाना शाहज़ादी का

मिली रितु बसन्त शाहज़ादह आय । करो मन अनंद सब गाय गाय + ।
कोऊ आन सुनावत मीठी तान + । कोई बांध रही हैं सुर समान । + ।
कोऊ मस्त भये दफ़ को बजाय + । कोऊ रंग उड़ावत धाय धाय + ।

मिली रुतु बसन्त शाहज़ादह आय

मैं फाग खेलूं शाहज़ादे साथ । + । फिर मोहि मिले ना ऐसी घात । + ।
तुम कहो कहानी लालकुछ और । + । और बसन्त रुतु रही है छाय । + ।

गज़ल गाना शाहज़ादी का सिन्ध भैरवी में

महफ़िल में जमुर्रद परी किस नाज़ से आके । लेजाती है शहज़ादे को घर अपने उठाके ।
सोनाथा लबे बाम जो शहज़ादये महरू । अल्मास परी को वह इशारे से उठाके ।
बोसा कभी लेती कभी लगजाती गलेसे । वे खुद न थी हिन्द में तनहा उसे पाके ।
हरबार तअस्सुफ़ से वह ले २ के बलायें । कहती थी फ़िदा हूं मैं तेरे नाज़ो अदा के ।
हरचन्द हवस ने तो किया और इरादह । पर रहगई कुछ सोच के वह मारे हया के ।

सोना शाहज़ादी और शाहज़ादे का बाम पर और आना जमुर्रद परी का और लेजाना शाहज़ादे को बालाय बाम से बज़रिये सब्ज़ देव के या छन्द कहना देव का परी से

हैरान हो कि ख़्याल से ये सीमबर जगे । और शक्ल मेरी देख के दिलमें ज़रा डरे ।
फ़िरता न मेरे हाल पे जौरो जफ़ा करे । आफ़तन कोई आके मेरी जान पर परे ।

दोहरा कहना जमुर्रद परी का सीमबर देव से

ओ सीमबर देव अब यहां से इसे उठा । पलक कि पलक में इसे घर मेरे पहुंचा

जवाब देना देव का परी से

जाताहूं लेकर इसे मैं तो सोये हुवा । इक तूभी हमराह मेरे चल ऐ माह लक़ा ।

दोहरा कहिना परी का शाहज़ादे से

ख़्वाब से आंखे खोल दो करो इधर को निगाह । तकती हूं मैं देरसे खड़ी तुम्हारी राह ।

जवाब देना शाहज़ादी का परी से

नाहक मेरी नींद को खोती है तू आह । उठताहूं कुछ देर में सोलूं खातिर ख़्वाह

छन्द कहिना परी का शाहज़ादे से

आताहै कुछ बहुत तुम्हें आलम जो ख़्वाब का । क्या है नशा पिया मेरे प्यारे शराब का ।
परदा उठा व रूसे तुम अपने नुक़ाब का । जलवह दिखाओ मेरे तंई माहिताब का

जवाब देना शाहज़ादे का परी से

गफ़्लते कमाल है मुझे इस वक्त ख़्वाब का । है याद मुझ को देना अब इसदम जवाबका

ये बक़् जाये गिन है व बाइस अ़ज़ाब का । तेरा सबब ये क्या है बता इज़्तराब का ।

कलाम ज़मुर्रद परी का
शाहज़ादे से

क्या सो रहे हो नींद में उट्ठो तो ख़्वाब से । दिखलाओ अपना ये रूखे रोशन नक़ाब से
अंगड़ाई ले रहे हो जो इस पेच ताब से । + । दिल में अभी उमड़ है प्यारे शबाब से ।
हैं दूर आज सारे मेरे दिल के वलवले । लगजाउ तुम गले मेरे प्यारे शिताब से ।
उल्फ़त ने तेरी ऐसा किया दिल में मेरे घर । नक़्श [illegible] हुई इसी बाँकी ख़्वाब से । + ।
ये भी तो घर तुम्हारा है प्यारे नहीं मलूल । [illegible] अगर जी यहाँ [illegible] ख़्वाब से
फ़ुरक़त हुई तुझे तेरे माशूक़ से [illegible] । पर अब लगाओ दिल इसी हुस्न लाजवाब से
मुद्दत के से पन जनन के रहें [illegible] मदारी लाल । ये है क्या जमाल [illegible] म आप से ।

जवाब देना शाहज़ादे का परी से

क्यों बार २ छेड़ती है मुझ को ख़्वाब से । बाज़ आया इस तरह में सवालो जवाब से
सोची मैं बात तेरी नहीं कम इताब से । ले आके मार डाल मैं छूटों अ़ज़ाब से
तू कौन है ये किसका है घर लाया मुझको कौन । बतलादे इसको मेरे तईं तू शिताब से
बेदर्द हुआ हूं आके तेरे दाम में असीर । खालक बचाये अब मुझे इसके उताब से
क्योंकर बुलाऊं [illegible] दिल को मैं नासिहा । प्यासे को भी हुई कहीं तस्कीं शराब से
इस बेकसी में है न कोई यारो आशना । [illegible] नहीं मैं हिजाब से ।
दुनियां में दोस्त याद रहे हैं ऐ मदारी लाल । [illegible] हूं रोज़ो सब में यही [illegible] से ।

दोहरा कहिना परी का शाहज़ादे से

तेरी सूरत शक्ल पर मैं सदके कुर्बान । दुनियां में ऐसे भी पैदा हुये जवान ।

जवाब देना शहज़ादी का परी से

मो कोई जीवे कोई खोवे कोई जान । इस से हम को क्या ग़रज़ बतला ऐ नादान

छन्द कहिना जमुर्रद परी का
शाहज़ादे से

जानी है जान तुम पे इधर टुक नज़र करो । मेरी तरफ़ से दिल में सनम अब [illegible] करो
हाज़िर हूं सब तरह चाहो जफ़ा करो । लेकिन न अपने पास से प्यारे जुदा करो ।

जवाब छन्द में देना शाहज़ादे का परी को

कहिला हूं कुछ मैं तुमसे नहीं जी दिया करो । मरते हो तुम जो हम पै तो प्यार मत करो ।
बरबाद अपनी उम्र को योंहीं किया करो । और घर में बैठ दस्त नअफ़सुस मला करो ।

नरज़ीय बन्द पढ़ना परी का शाहज़ादे से

तुमसे राहत हमें और तुमको ये नफ़रत दी है। वाह अल्लाने क्या तुम को न विपत दी है। ✦ ।
हमने माना कि तुम्हें हुस्न की दौलत दी है ✦ । पर हमें भी तो तेरी इश्क़ की सरवत दी है ।
ऐ सनम जिसने तुम्हें चांद सी सूरत दी है । उसी अल्ला ने हमको भी मुहब्बत दी है ।
इतने बेजान हैं तुम पर तुम्हें है कुछ न ख़्याल । तुम रहो अपने मज़े में हमें रंजो मलाल ।
क्यों कि इस बात का हमको न मलाल न मलाल । बस ही ग़म में वो मैं हो गई हूं मिस्ले हलाल
ऐ सनम जिसने तुझे चांद सी सूरत दी है । उसी अल्लाने हम को भी मुहब्बत दी है ।
रोज़ पहरा तेरा सक़सूम तो मुझमा दिलदार । सैंकड़ों तरह के हर रोज़ उठाये आज़ार ।
ऐश वे मेरी ख़ुशामद करो और अश्क शुमार । इस मुहब्बत का नतीजा है यही आख़िरकार
ऐ सनम जिसने तुझे चांद सी सूरत दी है । उसी अल्लाने हम को भी मुहब्बत दी है
मैंने सब पीछे तेरे अपनी जवानी खोई । पर गले से तेरे लग कर न किसी दिन सोई
अपनी तक़दीर के हाथों से सदा मैं रोई । हम क्या इसे तेरी जान पे आफ़त होई ।
ऐ सनम जिसने तुझे चांद सी सूरत दी है । उसी अल्लाने हम को भी मुहब्बत दी है ।
आज ख़ातिर से तो ऐ यूसुफ़ मानी मेरी । बैठ खिलवत में आकर कहीं जानी मेरी
तुमने इस वक़्त जो ये बात न मानी मेरी । इस सख़ुन पर है बस अब ख़तम कहानी मेरी
ऐ सनम जिसने तुझे चांद सी सूरत दी है । उसी अल्लाने हम को भी मुहब्बत दी है
तुम पे अपनी ये तबियत जो न आई होती । फिर हवा काहे को हम को ये समाई होती
नाज़ बरदारी न थी तेरी उठाई होती । ✦ । फिर कभी आपने क्यों आंख दिखाई होती
ऐ सनम जिसने तुझे चांद सी सूरत दी है । उसी अल्लाने हम को भी मुहब्बत दी है ।
जाने जां तुझ को भला क्या रे समाई ऐसी । आपने बदली जो इस वक़्त ख़ुदाई ऐसी ।
कौन सी बात तुम्हें अपनी न भाई ऐसी । इत्तफ़ाक़न बैठ गई दिल में बुराई ऐसी । ✦ ।
ऐ सनम जिसने तुझे चांद सी सूरत दी है । उसी अल्लाने हम को भी मुहब्बत दी है ।

जवाब देना शाहज़ादे का परी से

गो मेरी शक्ल ने तुझको चाहत दी है । ✦ । पर मेरे दिल ने मुझे तुझ से अदावत दी है ।
किससे जा कहिये फ़लक ने जो ये आफ़त दी है । मर्ज़ ग़म के बढ़ाने की अलामत दी है ।

नहीं अल्लाने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है । मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है ।
बारहा तुझ से कहा मैं ने मगर बहुए खयाल । साथ मेरे तेरे हरगिज़ नहीं होने का विसाल ।
बन गई तुझसे नेजाँ मेरी गज़ब कि फ़िल हाल । जियादह चाहने तेरी है गी हुई मेरी जंजाल ।
नहीं अल्लाने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है । मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है ।
मुझ से नाहक़ किया करती है हरदम तकरार । जानती है कि है इस बात से मुझको इनकार ।
मैं हूँ हूर को तो मुकाबिल हो मुझे है क्या कार । पर मेरी आँखों में जो गुल तो नज़र आती है खार ।
नहीं अल्लाने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है । मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है ।
चैन आराम मेराभी तो है तूने खोया । अपने दिल्बर किन छाती से लपट कर सोया ।
हर घड़ी कैद में तेरे मैं हमेशा रोया । घर तेरा खाने ज़ंजीर मुझे है गोया ।
नहीं अल्लाने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है । मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है ।
रूठी लाज़िम नहीं क़स्में तुझे खानी मेरी । अरी मुशकिल है हर इक बात आनी मेरी ।
तू जो है वन के लगी पीछे दीवानी मेरी । बस तेरे हाथ से है जान ऐजानी मेरी ।
नहीं अल्लाने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है । मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है ।
दिल में उस गुल कि मुहब्बत न समाई होती । तो मेरे तेरे बिला सुबह सफ़ाई होती ।
रोज़ काहे को भला ऐसी लड़ाई होती । ये बला सरपे न फिर मैंने उठाई होती ।
नहीं अल्लाने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है । मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है ।
थी न जो जोर उठाने की समाई ऐसी । तुमने फिर क्यों थी न विरूफ़त ये लगाई ऐसी ।
अपने करने की सज़ा आपने पाई ऐसी । न करोगे किसी दिलबर से बुराई ऐसी ।
नहीं अल्लाने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है । मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है ।

दोहरा कहिना परी का शहज़ादे से

जानी है हरदम यहाँ अपनी तुझ पर जान । तुझ को मुतलक़ है नहीं जानी मेरा ध्यान ।

छन्द

देख तो आँख उठा के कि क्या खुश अदा हूँ मैं । मुझ सा नहीं जहाँ में वह महल का हूँ मैं ।
तेरे सनम से तूही बता बद्‌नुमाँ हूँ मैं । कम कुछ अदा ओ नाज़ो करशमा में क्या हूँ मैं ।

जवाब देना शहज़ादे का जमुर्रद परी को दोहरा

मैंने कितने घर किये दुनियाँ में वैरान । अरी मैं आफ़त क़हर हूँ नादाँ मुझे न जान ।

छन्द

उस दिलरुबाका आशिक़ शैदाहुआहूं मैं । सदक़े हूं तुझसे उसपै कि जिस्से फंसा हूं मैं
ऐसे को छोड़ करके तेरा आशना हूं मैं । नादान अपने हाथ से आपी बनाहूं मैं ॥

ग़ज़ल

रोबरू उसके तू करता है मेरा प्यार नहीं । तेरे माशूक़ से क्या हूं मैं तरहदार नहीं ।
गुलशने देहर में वह ग़ैरत शमशाद हूं मैं । कौन कुमरी कि तरह मेरा गिरफ़्तार नहीं ।
आरज़ू रखते हैं परियों की सदा जिन्व बशर । आशिक़े ज़ार तू मेरा मगर ऐ यार नहीं ।
कहां ख़ुरशैद दरख़्शां कहां शमा फ़ानूस । रोबरू मेहर के ख़्याल कभी दरकार नहीं ।
दी है अल्ला ने जो आनो अदा परियों को । हर्गिज़ इनबातों से इन्सां को सरोकार नहीं
है फ़क़ीजा है कि तुझसा तुझे दिल्दार मिला । पर मेरी क़दर तुझे ऐ बुत ऐयार नहीं ॥
खाके कहिती हूं इस वक़्त सुलैमां की क़सम । कुछ तेरे ग़ैर की उल्फ़त मुझे ज़िन्हार नहीं ।

ग़ज़ल शाहज़ादह

ख़ूबिये हुस्न का तेरे में तलबगार नहीं । येतेरा हुस्न तुझको मुबारक मुझे दरकार नहीं ।
तू भला क्या है जो उस गुल के मुक़ाबिल होवे । चांद तो उसके रुख़े पाक सज़ावार नहीं ।
लौंडियां बांदियां उस्की तो हैं तुझसे बिहतर । तू ग़लत कहिती है तुझसा कोई ज़िन्हार नहीं
सामने चांद के होता नहीं हीरे को फ़रोग़ । लालसे ज़्यादा गरां कुछ है शहवार नहीं ।
हैं करोड़ों परियां तसद्दुक़ है मेरी गुलरू पर । इसतरह का कोई दुनिया में तो दिल्दार नहीं ।
मैंने माना कि तू है हुस्न में यकतार जहां । खोटे दामों से तेरा हूं मैं ख़रीदार नहीं ।
इस्से क्या काम तू करा लाख से उल्फ़त पैदा । रब्त इनबातों का प्यारी मुझे ज़िन्हार नहीं

शाहज़ादी का महिफ़िल में आकर गाना

सखी यही सोच मोरी आह जरावत छाती । बैरी है हमार रहत दिन राती ॥
बिन शाहज़ादी नहीं नींद बिसारी । मोहि गिनत नखत अब रैनजात है सारी
अजी तलफ़ तलफ रहूं सेज में है मारी । घड़ी उठत पलङ्ग पर घड़ी हूं जमी पै जाती
अजी अब भला कैसे धीर धरे मनमोरा । नहीं मिले चंद ते कोय जियाउ चकोरा

अजी मदारीलाल होसंदे बौरा

नहीं मिटती मिटाये सुख से करम की पाती । सखी यही सोच मोरी आह जरावत छाती

दोहरा कहिना शहज़ादी का वज़ीरज़ादी से

देखो लोगो ले गया कोई सुरू को लूट । आह मेरी नक़दीर गई अब सारा सा फूट

छन्द

इस चोर का पता कहीं जाकर लगाऊं मैं । क्या २ करूं न हाल अगर उसको पाऊं मैं ।
इस चोरी का मज़ा अभी उसको दिखाऊं मैं । शहज़ादा अपनी छीन के उससे ले आऊं मैं ।

जवाब देना वज़ीरज़ादी का शहज़ादी को

प्यारा तेरा हाल सुन गये होश सब छूट । आना है दिलमें यहीं लीजे छानी कूट ।

छन्द

आता नहीं है अक़्ल में किस तरफ़ जाऊं मैं । उस बेख़बर का जाके ठिकाना लगाऊं मैं
क्या क्या न उसके पीछे बलायें लगाऊं मैं । जैसा रुलाया उसने भी उसको रुलाऊं मैं ।

ग़ज़ल शहज़ादी

क्या क्या दिखाये चर्ख़ सितमगार देखिये । जो आगे आये बस उसे लाचार देखिये ।
गुलचीं को चाहिये नहीं बुलबुल पै ये सितम । बरबाद सारा कर दिया गुलज़ार देखिये
कैसा था चोर ले गया शहज़ादे को उड़ा । हरगिज़ छुआ न ये ज़र वो दीनार देखिये
आई न रास्त सुरू को कभी ये शबे विसाल । खोया न आख़िर शब को मेरा यार देखिये
मिटती नहीं कभी अरी ये होने वाली बात । नाहक़ जो मुझसे करती है तकरार देखिये
इकबार मिला हमें न मज़ा इस जवानी का । योंहीं चलाये हुस्न तरह दार देखिये ।
दिलमें ये आरज़ू है कि उस गुल बदन के साथ । कुछ लुत्फ़ पीके बादए गुलनार देखिये

ग़ज़ल वज़ीरज़ादी

तेरी बग़ल में जब न तेरा यार देखिये । क्योंकर न दिलमें सैकड़ों आज़ार देखिये
तक़दीर से मिला मुझे फ़स्ले बहार में । गुल के य वज़न सी वह आखार देखिये ।
वारी ये चोर है नहीं ये सीनेज़ोर है । तेरी बग़ल से गुम हो तेरा यार देखिये ।
मैंने कहा था वस्ल में कोठे पै तू न सो । आख़िर न पाया सदमा दिल्दार देखिये
इस सानिहे पै आता है क्या २ नहीं ख़याल । बजा है जानेजां मेरी गुफ़्तार देखिये ।
मैं हूं न वस्ल भी तुझे जानी हुआ नसीब । और हो गई तु हिज्र में बीमार देखिये ।

दिलमें ये थी हवस कि मिलाकर मये विसाल। शहज़ादे शाहिज़ादी को सरसार देखिये।

शहज़ादी का गाना

बिन पिया रात लगे मोहि भारी + । सखी वर्षा ऋतु अधिकारी + ।

बिन पिया रात लगे मोहि भारी

दामिन दमक दमक दमकारी + । कोयल कूकत कारी + + + ।

पापी पपीहा मेरो प्रान लेतहै + । मैं बिरहा की मारी + + + ।

बिनपिया रातलगे मोहिभारी

मेघवा गरज गरज घहराई + । बूंद परत अधिकारी + + ।

नैन नींद गई है उन बिन + + । तलफत मैं रही मारी + + ।

निस दिन जरत बरत बिरहा में + । उठत नहीं दुख भारी + + ।

कहो मदारी लाल पिया से + । अबतो लेवो सुध हमारी + + ।

दोहरा शहज़ादी

हे २ दिलको मेरे लेगया वहतो मेरे निकाल। तड़पा कीमैं यां पड़ी रोती रही नढाल।

जवाब वज़ीरज़ादी

आया ये अफ़सोस है इस दम्मुझे कमाल। दिल्बर का किस वक्त में तुझको दिया मलाल

ग़ज़ल कहिना शहज़ादी का वज़ीरज़ादी से एक एक शेर में

बैठी हूं जिसपे आह में आशा लगाये दिल। वह देखके न आये मेरे जख्म हाय दिल

जब से वह लेगया मेरे दिलको निकाल कर। छाती पकड़ के रहगई मैं कहके हाय दिल

आजाय इक दम के लिये गर वह मेहलक़ा। कुछ दर्द की कहानी तो अपनी सुनाये दिल

किसतरह उस्की याद न आठों पहर रहे। जिस्के सबबसे प्यारी मज़ा कुछ उठाये दिल

सदमे सबे फ़िराक़ के जिस्ने उठाये हैं। इन बेमुरौवतों से वह अपना फंसाये दिल

दाम बला है नागर दिल्के फंसाने को। गेसुये यार हैं नहीं ये हैं मिलाये दिल।

क्या २ दिखाये दिखिये आगे मदारीलाल। क़ाबू में हो गया है ये अबतो पराये दिल

जवाब देना वज़ीरज़ादी का शहज़ादी को एक एक शेर में॥

वारीमैं कोई दम तो भला चैन पाये दिल। इस ग़म में कोई औरन सदमा उठाये दिल

गर आहो व नाले का हो ने रे दिल मे कुछ असर। दामन पकड़ के उस्का अभी खींच लाये दिल
मैं वह से कहि थी न दे दिल्को हाथ से। देखा न आखिर इश्क़ को यं तूने बफ़ाये दिल
ये जान वो है दोस्त वही इस ज़माने में। होवे जो अपने दिल से कोई आशनाय दिल
हो दर्द कुछ अगर सहे वह अपनी जान पर। दर्दे ग़म में फ़िराक़ की क्यों कर उठाये दिल
जो कुछ हुआ है नेरे ये क़िस्मत जो लिखा। ज़ुल्फ़ों में फ़ंस्के सैंकड़ों भटके उठाये दिल
अब तो मदारी लाल यही क़ौल है मेरा। जिस्को फंसाले चर्ख़ वह अपना लगाये दिल

मलार गाना शाहज़ादी का

वहं शोर बदरिया छाई ✦ ✦ । बड़े २ बूंदन से घिर आई ✦ ।
बिजुली चमके मेघा बरसे जिया मोरा डरपाई । अब तो मदारी लाल शाहज़ादे बिन कुछ मोहि न सुहाई

फ़ाग गाना शाहज़ादी का

मोहि उन बिन कल न पड़े

कहा करूं कुछ बन नहिं आवे ✦ । मन नहिं धीर धरे ✦ ✦ ✦ ।
प्रान हमारे बस गये उन में ✦ । चित ते नहिं उतरे ✦ ✦ ✦ ।

मोहि उन बिन कल न पड़े

ढूंढ फिरी मैं सगरे नगर में ✦ । नैनन नीर भरे ✦ ✦ ✦ ।
दास मदारी लाल पिया बिन ✦ । जोबन जात ढरे ✦ ✦ ✦ ।

मोहि उन बिन कल न पड़े

गाना शाहज़ादी का बंगले में

मोरा जिया माने ना

बिन पिया के लाख तरह समझाऊं ✦ । समझाऊं सो मोरा जिया माने ना ✦ ।
हमको छोड़ रहे सौतिन घर ✦ । मन में है बिस खाऊं ✦ ✦ ।
बिस खाऊं सो मोरा जिया माने ना । कहो मदारी लाल से जाकर ✦ ।
टुक शाहज़ादे को पाऊं ✦ ✦ । सो मोरा जिया माने ना ✦ ✦ ।

ठुमरी गाना शाहज़ादी का शाहज़ादे के फ़िराक़ में

ढले जात जोबन मोरे दिन दिन ॥

उनहीं पर निस दिन ध्यान लगाये + । श्याम सुन्दर पर जियरा गँवाये + ।
दिन है रैन मोहि तलफ़त बीती + । रात गई तारे गिन गिन + + ।
ढले जात जोबनवां रे दिन २
जो चाहें नरवर की छैयां + + । गौना लेन आये नहीं सैयां + +
यही सोच मोहि रहत परत २ + । बीती जात बैस छिन २ + +
रूप सरूप के स्वांग उतारे + । बिना बताये गुरू कर हारे + +
मान नहीं काहू के राखे + + । गिरप गये चाहे जिन २ +
ढले जात जोबनवां रे दिन २

गाना शहज़ादी का जुदाई की हालत में

आज मोरा जियरा नहीं माने + । ऋतु पावस में बिछुड़े शहज़ादे + ।
आज मोरा जियरा नहिं माने रे
चहूं ओर से उमँड घुमँड आये + । कारे २ बदरा अधिक डराये + ।
सूनी सेज अँधेरी रतियां + । हमरी बिथा को जाने रे + ।
आज मोरा जियरा नहिं माने रे
ज्यों ज्यों बूंद परत अधिकारी + । त्यों त्यों हिरदे लगत कटारी + ।
बिना मदारी लाल पिया के सुख चैन भुलाये। आज मोरा जियरा नहिं माने रे + ।

रागिनी पर्ज में शहज़ादी का गाना

मन धीर धरत हूं दिन गिन २ + । कृपा निधान देउ दरसन + ।
तन नहीं जात प्रान हमरे तुम बिन + । मन धीर धरत हूं दिन गिन २ ।
काहू की मैं एक न मानूं + । लाख कहे कोऊ गिन २ + ।
बिना पिया सुन एरी सखीरी + । कलन पड़त मोहिं घरी पल छिन ।
मन धीर धरत हूं दिन गिन २ । कहा करूं बिस खाय मरूं + ।
मिल जाये बसो सौतिन गिन २ । कहो मदारी लाल पिया से + ।
बीती बैस शाहज़ादे बिन + + । मन धीर धरत हूं दिन गिन २ + ।

तरजीय बन्द पढ़ना शाहज़ादी का वज़ीरज़ादी की तरफ़ मुतवज्जेह होकर ॥ + ॥

आलम पर अपना रंग छिपाया बसन्त ने । जोड़ा बसन्ती सबको पिन्हाया बसन्त ने ।
जोबन नया हर एक का बनाया बसन्त ने । दिलमें उमङ्ग का शोर मचाया बसन्त ने ।
सब गुल्शने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने ।
हैं जो अपने यार से इन रोजों कामियाब । पीते हैं जरसाया वह अंगूर की शराब ।
ऐशो निशात में वह बसर करते हैं शबाब । दुनियां के लुत्फ़ आप उठाते हैं बे हिसाब
सब गुल्शने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने
मेरी बग़ल में आज जो होता वह खुशखराम । मैं भी मिटाती आज के दिन हसरतें तमाम
वो से किनारही में बसर करती सुबह व शाम । पीती व शाल में मये इसरत का भर के जाम
सब गुलसने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने ।
जिस सिम्त आंख उठाके नज़र कीजिये ज़रा । दाउदी गेंदे से है चमन का चमन भरा ।
दिखला रहा है खल्क़ को अपनी वह खुश अदा । फ़स्ल बहार का ये जहूरा है जा बजा ।
सब गुल्शने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने ।
गुल्दस्ता हाथों पर लिये हर जाये गुलउज़ार । दिखलाते फिरते हैं अपने जोबन का वह उभार
[illegible] के हैं दिल कि पर खुमार । नाज़ो अदा से करते हैं आशिक़ को बेकरार
सब गुल्शने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने ।
[illegible] नहीं ऐ मदारी लाल । सब छोड़ छाड़ कीजिये अब जोगन का ख़याल
[illegible] में शायद वह मैं निहाल । वर्ना अब इस तलाश में रुगड़ा है इन फ़िसाल
सब गुल्शने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने ।

जवाब देना वज़ीरज़ादी का शहज़ादी को तरजीय बन्द में

बाग़े जहां में रंग मचाया बसन्त ने * । खिलकत को ज़ाफ़रानी बनाया बसन्त ने ।
जोशे जवानी दिल में छाया बसन्त ने । पज़मुरदह खातिरों को खिलाया बसन्त ने
है २ बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त ने । तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने ।
अफ़सोस इन दिलों में जो हिज्रां के ग़म सहे । और मोसम निशात में जी मार कर रहे ।
वह हंसना बोलना है न अब है वह चहचहे । और अश्क फूट २ के आंखों से हैं बहे
है २ बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त ने । तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने ।
जो हिज्र में बहाते आंखों से खून नाब । उनको एक कब खुश आती है कैफ़ियत [illegible]

गुल्शन को देख २ के होता है दिल कबाब । लाले कि तरह दाग़ वह खाते हैं बे हिसाब।
है २ ग़ज़ब बहार दिखाया बसन्त ने । तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने
खुशबूओं से गुलों के मुअत्तर हुये मशाम। बादे बहार का ये जहाँ पर है फ़ैज़ आम।
हर शख़्स को ख़ुशी है हर एक को धूम धाम। खिलकत का चार सू है गुलों पर है इज़्दहाम।
है २ बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त ने । तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने ।
सोसन का और लाले का तख़्ता जो है खिला। दिखला रहा है हुस्न का आलम नया २
क्या तुझसे मैं कहूँ कि जो इस वक़्त है समा। लेकिन बग़ैर यार ये है सारा बदमज़ा ।
है २ बड़ा ग़ज़ब ये दिखाया बसन्त ने । तुझसे तेरे सनम को छुड़ाया बसन्ते ।
आते हैं देखने को तेरे हुस्न की बहार । करती जो तू उमंग से अपना नया सिंगार
होता लिबास तेरा बसन्ती मसाले दार । नरगिस तुराती आँख तुझे देख बार २
है २ बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त ने । तुझसे तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने
आया ए कैसा २ तुझे अब की माहो साल। दिल की लगी हुई का है मिटना बहुत मुहाल
जी में समा था आह जो अब ओम का ख़्याल। जो कुछ कहो वह सब है बजाए मसीलाल
है २ बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त नें । तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने

ख़्वाब में गाना शहज़ादी का आलम जुदाई में

बिन पिया कैसे कल पाये जिया मोरा
लाज की मारी बिरह की बिना कंत रहा नहीं जाय
जिया मोरा पिया बिन कैसे कल पाये मैं जल बिन
तलफ़त जैसे बिकल बिकल रह जाये मोरा मोरा
हाय सखारी बिन शहज़ादा घड़ी पल छिन में जाय जिया मोरा

छन्द शहज़ादी

चल्फ़त अब मा बाप की आज के दिन छोड़। चलके सहिरां की तरफ़ घर से मुह को मोड़

जवाब वज़ीरज़ादी

ख़ाक बदन पर मल मलो छोड़ो ये संयोग। रूयें मेता इस हाल पर अपने पराये लोग

छन्द कहिना शहज़ादी का

मिला अगर इस भेस में मेरा वह दिलदार। नहीं होगी इस अम्र पर अपनी जान निसार

आलम पर अपना रंग छिपाया बसन्त ने । जोड़ा बसन्ती सबको पिन्हाया बसन्त ने ।
जोबन नया हर एक का बनाया बसन्त ने । दिलमें उमङ्ग का शोर मचाया बसन्त ने ।
सब गुल्शने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने ।
है जो अपने यार से दुन रोजों कामियाब । पीते हैं जो साथी वह अंगूर की शराब ।
ऐशो निशात में वह बसर करते हैं शबाब । दुनियां के लुत्फ़ आप उठाते हैं बे हिसाब
सब गुल्शने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने
मेरी बग़ल में आज जो होता वह खुशखराम । मैं भी मिटाती आज के दिन हसरतें तमाम
वो से किनार ही में बसर करती सुबह व शाम । पीती व शाल में मये दूसरत का भर के जाम
सब गुलसने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने ।
जिस सिम्त आंख उठाके नज़र कीजिये ज़रा । दाउदी गेंदे से है चमन का चमन भरा ।
दिखला रहा है खल्क़ को अपनी वह खुश अदा । फस्ल बहार का ये ज़हूरा है जा बजा ।
सब गुल्शने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने ।
गुल्दस्ता हाथों पर लिये हर जाये गुलउज़ार । दिखलाते फिरते हैं और जोबन का वह उभार
सुनते हैं यह हुस्न के हैं राकि पर खुमार । नाज़ो अदा से करते हैं आशिक़ को बेकरार
सब गुल्शने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने ।
आता है जबके जी में यही ऐ मदारी लाल । सब छोड़ छाड़ कीजिये अब जोगन का ख्याल
मिल जाये फिर भेस में शायद वह नौनिहाल । वर्ना अब इस तलाश में रूगड़ा है इन फ़िसाल
सब गुल्शने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने ।

जवाब देना वज़ीरज़ादी का शहज़ादी को तरजीय बन्द में

बाग़े जहां में रंग मचाया बसन्त ने * । खिलकत को ज़ाफ़रानी बनाया बसन्त ने ।
जोशे जवानी दिल में उठाया बसन्त ने । पज़मुरदह खातिरों को खिलाया बसन्त ने
है २ बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त ने । तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने ।
अफ़सोस इन दिनों में तो हिज़्रों के ग़म सहे । और मौसम निशात में जी मार कर रहे ।
वह हंसना बोलना है न अब है वह चहचहे । और अश्क फूट २ के आंखों से हैं बहे
है २ बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त ने । तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने ।
जो हिज्र में बहाते आंखों से खून नाब । उनको एक ब खुश आती है कैफ़ियत शराब

गुलशन को देख २ के होता है दिल कबाब । लाले कि तरह दाग वह खाते हैं बेहिसाब।
है २ ग़ज़ब बहार दिखाया बसन्त ने । तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने
खुश बूओं से गुलों के मुअत्तर हुये मशाम। बादे बहार का ये जहाँ पर है फ़ैज़ आम।
हर शख़्स को खुशी है हर एक को धूम धाम। खिलकत का चार सू से गुलों पर है इज़्दहाम।
है २ बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त ने । तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने ।
सोसन का और लाले का तख़्ता जो है खिला। दिखला रहा है हुस्न का आलम नया २
क्या तुझ से मैं कहूँ कि जो इस वक्त है समा। लेकिन बग़ैर यार ये है सारा बदमज़ा ।
है २ बड़ा ग़ज़ब ये दिखाया बसन्त ने । तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने ।
आते हैं देखने को तेरे हुस्न की बहार । करती जो तू उमंग से अपना नया सिंगार
होता लिबास तेरा बसन्ती मसाले दार । नरगिस गुलाबी आँख तुझे देख बार २
है २ बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त ने । तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने
आया ए कैसा २ तुझे अब की माहे साल। दिल की लगी हुई का है मिटना बहुत मुहाल
जी में समाया आह जो अब ओण का ख्याल। जो कुछ कहो वह सब है बजाए मसरी लाल
है २ बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त ने । तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने

ख्वाब में गाना शहज़ादी का आलम

जुदाई में

बिन पिया कैसे कल पाये जिया मोरा
लाज की मारी बिरह की बिना कंत रहा नहीं जाय
जिया मोरा पिया बिन कैसे कल पाये मैं जल बिन
तलफ़त जैसे बिकल बिकल रह जाये मोरा मोरा
दास सखी बिन शहज़ादा घड़ी पल छिन में जाय जिया मोरा

छन्द शहज़ादी

उल्फ़त अब माबाप की आज के दिन छोड़। चल के सहरा की तरफ़ घर से मुह को मोड़

जवाब वज़ीरज़ादी

दुःख वदन पर सब मलो छोड़ो ये संयोग। रूयें मेता इस हाल पर अपने पराये लोग

छन्द कहिना शहज़ादी का

मिला अगर इस भेस में मेरा वह दिलदार। नहीं होगी इस अम्र पर अपनी जान निसार

जब अपना दोस्त यार से अपने जुदा रहे । फिर ज़िंदगी लुत्फ़ भला कहिये क्या रहे
बनकर फ़क़ीर खोज में उसकी सदा रहे । इस नाम पर फ़क़त दिली धूनी रमा रहे ।

कलाम शहज़ादी का

जोगिन का भेस आज मैं अपना बनाली हूं । घरबार सारा छोड़ के धूनी रमाती हूं ।
कपड़े रंगाके गेरुये तन पर जमाके खाक । मिट्टी में अपनी ऐश को देखो मिलाती हूं ।
जी खोल करके खूब की दुनिया की सल्तनत । कुछरोज़ो अब फ़क़ीरी का भी हज़ उठाती हूं ।
हे २ अरे नसीब क्या तूने अब किया । शाहज़ादे से मैं शहर में जोगिन कहाती हूं ।
निज़ारह मेरा चश्म फ़लक को जो था मुहाल । अब दरबदर हो अपने तईं मैं फिराती हूं ।
छिपता नहीं छिपाये से आलम ये हुस्न का । सौ २ तरह अपने तईं मैं छिपाती हूं ।
जोगिन का भेस करके मैं आई मदारीलाल । तक़दीर अपनी आज के दिल आज़माती हूं ।

जवाब वज़ीरज़ादी का

तेरे लिये मैं अपने तईं अब मिटाती हूं । सारा सिंगार उतार के जोगिन बनाती हूं ।
तन पर भभूत मलके पेशवाज़ कर अपना हाल । उस बुत के ध्यान में ध्यान पै आसन जमाती हूं ।
दुनिया की ऐश छोड़ सजा जोग का लिबास । रो २ तेरे हाल पे तन मन जलाती हूं ।
एक दिन वह था जो थी यही पोशाक ज़र निगार । और आज तन पै जोग का सामान चढ़ाती हूं ।
है दुश्मनों को भी मेरे अहिदाल पर ये ग़म । रोने में जब मैं आह के नारे उठाती हूं ।
होना है और बलन्द सिवा शोलये जमाल । जूं २ मैं उसको खाक के अन्दर दबाती हूं ।
हमराह सीम तन को लिये ऐ मदारी लाल । शहज़ादी और मैं ढूंढने उस गुल्को जाती हूं ।

गाना शहज़ादी का

मैं तो बनकर जोगिन जाऊं शहज़ादे को ढूंढ ले आऊं । कानन मुन्द्रे गल बिच सेली अंग भभूत रमाऊं
अपने पिया के कारन सजनी बन २ ढूंढन जाऊं । छोड़ बघम्बर सिरसे अपने घर २ अलख जगाऊं
काहू से कुछ काम नहीं है मैं तो उनके गुन गाऊं । मन मेरो दिन २ तलफ़त है गेरुवा वस्त्र रंगाऊं
देश बिदेश में दास मदारी बैरागिन पिया की कहाऊं । शहज़ादे को जाके ढूंढ ले आऊं ।

कलाम शहज़ादी का शिकायत आमेज़ गर-
दिश अफ़लाक में

ऐ फ़लक के सारे दिन आह दिखाया हमको । शाही छुड़वाके जो अब जोगी बनाया हमको
मिस्ले गुल चाक गिरेबां हैं हमन सुर्जाए । किसकी उल्फ़त का ये सौदा है समाया हमको

यानी दिल चस्प मकानों मे रहा करती थी। अब दरख्तोंका भी मिलना नहीं भाया हमको
शाक़ था ड्योढ़ी तक आना भी हमें जो इकबार। कारना मंजलों का अब ए खुस्र आया हमको
खाक पासे लोग बनूर के बगोले उठने । अभी गरदिश ने असर अब यह दिखाया हमको
किस तरह होगाये ते ये मेरे खालिक़ मैं हां । पाओं में इसलिये है जो फ़ ए छिपाया हमको
जिस जगह बैठ गये बैठ के उठना है मुहाल। नातवानी ने यहां तक है सताया हमको ।

जवाब देना वज़ीर ज़ादी का शाहज़ादी को

हाय तक़दीर ये क्या तूने दिखाया हमको । बिस्तरे गुल्से लदे खाक बिठाया हमको ।
खाक तन पर मली और सेली गले में डाली। हाय इस हाल से सहिरा में फिराया हमको
फ़र्श गुल पर भी नज़ाकत से न आती थी नींद। करके उरियाँ वहीं कांटों पे सुलाया हमको
कभी भूले से न रक्खा जो था चौखट पे क़दम। दरबदर भेस में जोगिन के फिराया हमको
चैन खुस खाने में करते थे सोज़ गुज़ल्क़ तलें। रेत में जलती हुई लाके सुलाया हम को
शाक़ इसों की कोसों नहीं आती है नज़र। अभी वहशत ने ये मैदान दिखाया हमको
चलके दो एक क़दम खाक मैं गिर पड़ती हूं। अजं है लुत्फ़ किसी ने जो उठाया हम को

ग़ज़ल गाना शाहज़ादी का भैरवी में

बन के जोगिन ढूंढने शाहज़ादे को अब चली। देखूं अब आगे दिखाती क्या है दिल की बेकली
फाड़ कर सिंगार में फिर ऐशो का सारा लिबास। पहिने लेकर तन पे सब कपड़े रंगा कर संदली
लोगो बतलाओ मुझे उस गुल के रहिने का निशान। किस तरफ़ जाऊं भला औ कौन सी ढूंढूं गली
वह मदद कोंका करें ताओ के वक़्त इमतिहां है मदारी लाल भी तू एक गुल मान ली

दोहरा शाहज़ादी

प्यासी हूं मैं देर से मिला है अब तालाब। कहिये तो मैं ठहर के पीलूं थोड़ा आब

जवाब वज़ीरज़ादी

सिद्दत से इस धूप की हूं मैं भी बेताब । इन्ही दरख्तों के तले को ई दम हूं सैराब।

दोहरा शाहज़ादी का कहिना वज़ीर ज़ादी से

देखो ए तुमसी मनतू शाहज़ादी का हाल । पानी में से ले गया कोई हाथ निकाल :

जब अपना दोस्त यार से अपने जुदा रहे । फिर ज़िंदगी लुत्फ़ भला कहिये क्या रहे
बनकर फ़क़ीर खोज में उसकी सदा रहे । इस नाम पर फ़क़त दिली धूनी रमा रहे ।

कलाम शहज़ादी का

जोगिन का भेस आज मैं अपना बनाती हूं । घर बार सारा छोड़ के धूनी रमाती हूं ।
कपड़े रंगा के गेरुये तन पर जमाके खाक । मिट्टी में अपने ऐश को देखो मिलाती हूं
जी खोल करके खूब की दुनिया की सैर तनहा । कुछ रोज़ो अब फ़क़ीरी का भी हज़ उठाती हूं
है २ अरे नसीब क्या तूने अब किया । शाहज़ादे से मैं शहर में जोगिन कहाती हूं
निज़ारह मेरा चश्म फलक को जो था मुहाल । अब दर बदर हो अपने तईं मैं फिराती हूं
छिपता नहीं छिपाये से आलम ये हुस्न का । सो २ तरह अपने तईं में छिपाती हूं ।
जोगिन का भेस करके मैं आई मदारीलाल । तक़दीर अपनी आज के दिन आज़माती हूं

जवाब वज़ीरज़ादी का

तेरे लिये मैं अपने तईं अब मिटाती हूं । सारा सिंगार उतार के जोगिन बनाती हूं
तन पर भभूत मल के परेशां कर अपना हाल । उस बुत के ध्यान पै आसन जमाती हूं
दुनिया की ऐश छोड़ सजा जोग का लिबास । रो २ तेरे हाल पै तन मन जलाती हूं ।
एक दिन वह था जो थी यही पोशाक ज़र निगार । और आज तन पै जोग का सामान चढ़ाती हूं
है दुश्मनों को भी मेरे अहिवाल पर ये ग़म । रोने में जब मैं आह के नारे उठाती हूं
होना है और बलन्द सिवा शोलये जमाल । जूं जूं मैं उसको खाक के अन्दर दबाती हूं
हमराह सीम तन को लिये ऐ मदारीलाल । शहज़ादी और मैं ढूंढने उस गुल को जाती हूं

गाना शहज़ादी का

मैं तो बनकर जोगिन जाऊं शहज़ादे को ढूंढ ले आऊं । कानन मुन्द्रे गल बिच सेली अंग भभूत रमाऊं
अपने पिया के कारन सजनी बन २ ढूंढन जाऊं । ओढ़ बघम्बर सिर से अपने घर २ अलख जगाऊं
काहू से कुछ काम नहीं है मैं तो उनके गुन गाऊं । मन मेरो रहि २ तलफ़त है गेरुवा वस्त्र रंगाऊं
देस बिदेस में दास मदारी बैरागिन पिया की कहाऊं । शहज़ादे को जाके ढूंढ ले आऊं ।

कलाम शहज़ादी का शिकायत आमेज़ गर्दिश अफ़लाक से

ऐ फ़लक के साथ दिन आह दिखाया हमको । शाही छुड़वा के जो अब जोगी बनाया हमको
मिस्ले गुल चाक गिरेबां है शमन मुजाए । किसकी उल्फ़त का ये सोदा है समाया हमको

पानी दिल चस्प मकानों मे रहा करती थी। अब दरख्तों का भी मिलना नहीं आया हमको
भाग़ का ऊंचाई तक आना भी हमें जो इकबार। कारना मंजलों का अब ए खुसरू आया हम को
खाक पासे लोग बनूर के बनने से उठने। अभी गरदिश ने असर अब यह दिखाया हमको
किस तरह होगाये ते ये मेरे खालिक मैं दर्द। पानी में इसलिये हैं जो फ़ ए छिपाया हमको
जिस जगह बैठ गये बैठ के उठना है मुहाल। नात वानी ने यहाँ तक है सताया हमको।

जवाब देना वज़ीरज़ादी का शाहज़ादी को

हाय तक़दीर ये क्या दूने दिखाया हमको। बिस्तरे गुल्ले लदे खाक बिठाया हमको।
खाक तन पर मली और सेली गले में डाली। हम इस हाल से सहिरा में फिराया हमको
फ़र्शे गुल पर भी नज़ाकत से न आती थी नींद। कर के उरियाँ वहीं काटो पे सुलाया हमको
कभी भूले से न रक्खा जो था चो खट पै क़दम। दरबदर भेस में जोगिन के फिराया हमको
चैन खुस खाने में करते थे सो सो उल्फ़ तसें। रेत में जलती हुई लाके सुलाया हम को
मालूम इसाँ की कोसों नहीं आती है नज़र। अभी वहशत ने ये मैदान दिखाया हमको
चलके दो एक क़दम खाक में गिर पड़ती हूँ। अंजरे हे लुत्फ़ किसी ने जो उठाया हम को

ग़ज़ल गाना शाहज़ादी का भैरवी में

बन के जोगिन ढूँढने शाहज़ादे को अब चली। देखूं अब आगे दिखाती क्या है दिल की बेकली
फाड़ कर सिंगार में फिर ऐशा का सारा लिबास। पहिने लेकर तन पे सब कपड़े रंगा कर सन्दली
लोगों बतलाओ मुझे उस गुल के रहि ने का निशान। किस तरफ़ जाऊं भला सौ कौन सी ढूँढूँ गली
वह मदद कोंकर करें ताज़ा के बक्ते इमतिहां हैं मदारी लाल भी तू एक गुल्ला माने खली

दोहरा शाहज़ादी

प्यासी हूँ मैं देरसे मिला है अब तालाब। कहिये तो मैं ठहर के पीलूं थोड़ा आब

जवाब वज़ीरज़ादी

सिद्दत से इस धूप की हूँ मैं भी बेताब। इन्ही दरख्तों के तले को ईद मुहूं सैराब।

दोहरा शाहज़ादी का कहिना वज़ीरज़ादी से

देखो ए तुमसी मनन शाहज़ादी का हाल। पानी में से ले गया कोई हाथ निकाल

ग़ज़ल कहिना शहज़ादी का वज़ीर ज़ादी से

सहरो से खाक उड़ाते हुये बेशतर चले । मिस्ले बगूला गिर्दे में आलूदह पर चले ।
निकले थे एक कमन्द के हम तो तलाश में । गुम अपने शहिज़ादे को हम आप कर चले
सब्ज़े की तरह उगते ही पामाल हो गये । इस गुलशने जहां से बे बहरे हर चले
उसको भी अपने हाथ से खोया है ऐ नसीब । बनकर फ़कीर जिसके लिये छोड़ घर चले
जंगल में अपनी उम्र बसर योंही कीजिये । क्या जायें मुंह लगा के जो बरसों मे घर चले
उस गुलगुरा से जाके यही कहियो ऐ सबा । बीमार बे वतन तेरी फ़ुरकत में मर चले
जाना है साथ २ मुझे भी मदारी लाल । तस्वीर अपने अबहमें लेकर किधर चले

जवाब देना वज़ीर ज़ादी का शह-ज़ादी को

पत्थर एक ओर छाती पे हम आह धर चले । शीरीं को कोहकन के लिये ज़ाया कर चले
ऐ चीर चर्ख डाला ये क्या तूने तफ़रुक़ह । शहज़ादा तो कहीं गया और हम किधर चले
बर आई अपने दिल की कोई भी न आरज़ू । नाशाद ना मुराद फिर चश्म तर चले ।
रह २ के अपने दिल को यही आता है ख़याल । आये थे किस लिये यहां क्या काम कर चले
पहुंचे हमारे बाद कहीं खाक क्यों न तलक । बैठे हैं इस तलाश में बादे शजर चले ।
कैसी लगी हवा मेरे नख़्ले मुराद को । शाखे गवज़्न कि तरह हम बे समर चले
जाकर के और भी कहीं देखें मदारीलाल । यहां से उठा के इसलिये दिल कूच कर चले

दोहरा कहिना शाहजिन का वज़ीर ज़ादी से

कौन हैं आप बताइये मुझे अपना नाम । जो कुछ हो सके करें उसे अन्जाम ॥

जवाब देना वज़ीर ज़ादी का शाहजिन को

कहते हैं सब सीमतन इस आसी का नाम । शहज़ादे के वास्ते फिरूं सुबह और शाम

तरजीय बन्द शाहजिन का कहिना वज़ीर ज़ादी से

किस पर आई हुई है यार तबियत तेरी । फ़ुर्ते ग़मसे जो ये अब पहुंची है नौबत तेरी

टुकड़े होता है जिगर देख के रंगत तेरी । हाय देखी नहीं जाती है मुसीबत तेरी ॥
किसके ग़म में हुई ऐ शख़्स ये हालत तेरी । रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी ।
नख़्ल उम्मेद तेरा आह न फूला न फला । चल गया बार ख़िज़ाँ अभी आकर रोका ।
तू जो इस गुलशन हस्ती में नख़्ल सब्ज़ रहा । क्या सबब इसका है तू हमसे बतादे तो ज़रा
किसके ग़म में हुई ऐ शख़्स ए हालत तेरी । रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी ।
किस तसव्वुर में रहा करता है तू शामो सहर । सूरते शम्अ जो पैदा है तेरे मुंह से शरर ।
कुछ दिनों और रहा हाल तेरा योंही अगर । ख़ाक हो जायेगा वल्लाह तू अब जल कर
किसके ग़म में हुई ऐ शख़्स ए हालत तेरी । रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी ॥
गर दिशे चर्ख़ से मारा तू पड़ा फिरता है । तेग़ अब्रू का ये घायल है जो दम भरता है
आहो नाले जो शबो रोज़ किया करता है । सच बता वह है कुदा किस पे तू अब मरता है
किसके ग़म में हुई ऐ शख़्स ए हालत तेरी । रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी ।
हज़्ज़ दुनिया भी न कुछ हाय उठाया तूने । कुछ जवानी का मज़ा भी नहीं पाया तूने
किसी माशूक़ से क्या दिल है लगाया तूने । क़ैस की तरह जो हाल अपना बनाया तूने
किसके ग़म में हुई ऐ शख़्स ए हालत तेरी । रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी ।
दिल बहिलाता नहीं हर चन्द तू बहलाता है । तायर रंग कदूरत से उड़ा जाता है
आज क्या है जो तुझे कुछ भी नहीं भाता है । गुल ख़िज़ाँ दीदा से हर वक़्त तू मुरझाता है
किसके ग़म में हुई ऐ शख़्स ए हालत तेरी । रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी ।
नाले आह से रहिता है सरोकार तुझे । सच बता कौन सा अब होगया आज़ार तुझे
ज़ीस्त से अपनी में अब पाता हूं बेज़ार तुझे । सर पटकने के सिवा और नहीं कार तुझे ।
किसके ग़म में हुई ऐ शख़्स ए हालत तेरी । रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी ।

जवाब देना वज़ीरज़ादे का याह जिनको

सदमे पर सदमे उठाती है नहूसत मेरी । मुझ से बरगश्ता है इन रोज़ों जो क़िस्मत मेरी
है विला शक जो करी रंज से नौबत तेरी । छाती फटती है जो देखे है ए हालत मेरी
पूछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी । जाबलब हूं कोई दम भर में है रुख़सत मेरी
होगया ख़ुश्क गुलिस्ताने जवानी मेरी । बन गई आह मेरी मुझको ख़िज़ाँ का लूका
हर बुने मुये मेरे एक शरर है पैदा । सूरत सरवे चराग़ाँ हुआ आलम अपना ।

पूछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी । जौ बलब हूं कोई दम भर में है रुख़सत मेरी
हर घड़ी चलना है ग़म दीदह बिगरदश मस्त । याद आजाता है जिसवक़्त वह रूये ख़न्दां
सामना रंज का रहिता है मुझे आठ पहर । ऐसे जीने से बस अब मौत है प्यारी बेहतर ।
पूछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी । जांबलब हूं कोई दम भर में है रुख़सत मेरी ।
कोई इतना भी तो एहसान नहीं करता है । उससे जा कहिदे कि वह ग़म में तेरे भरता है
ले ख़बर ज़ल्द कहीं जाके वह दम भरता है । हालते नज़ा में भी नाम तेरा भरता है ।
पूछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी । जां बलब हूं कोई दम भर में है रुख़सत मेरी
सारा दुनिया का मज़ा दिल से उठाया मैंने । और ज्वानी को भी मिट्टी में मिलाया मैंने ।
लेकिन अबतक न किसी जा कोई सेपाया मैंने । वास्ते जिसके ये हाल अपना बनाया मैंने
पूछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी । जां बलब हूं कोई दम भर में है रुख़सत मेरी
इस तरह का जो मेरा हाल तू अब पाता है । है तअज्जुब कि तुझे रहिम नहीं आता है ।
ग़म को मैं खाता हूं और ग़म भी मुझे खाता है । नहीं तदबीर कोई तू मुझे बतलाता है ।
पूछता क्या है ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी । जां बलब हूं कोई दम भर में है रुख़सत मेरी
रुख़ दिखा जब से गया वह बुते ऐयार मुझे । चैन आता किसी करवट नहीं ज़िनहार मुझे
हर घड़ी आहो फ़ुग़ां से है सरोकार मुझे । कोई नज़र आता नहीं अपना मददगार मुझे
पूछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी । जां बलब हूं कोई दम भर में है रुख़सत मेरी

बारह मासा शहज़ादी का कहिना और वज़ीरज़ादी का कहिना ॥

शहज़ादी

लागे असाढ़ कीजिये अब दश्त में शिकार । शायद ख़ुदा मिला दे हमें यार बहरगुलज़ार

वज़ीरज़ादी

सावन में हो रही है जो बरसात की बहार । भादों में छाई काली घटायें हैं बेशुमार

शहज़ादी

ऐ सखी तो बहार न कर दिलको बेक़रार । बरसात में मिला न सनम आनबार कुंआर

वज़ीरज़ादी

कातिक में आसमां ने किया दिलको बेक़रार । चारों तरफ़ में ढूंढ फिरी अपना गुलज़ार

शहज़ादी

अगहन दिखा रहा है मुझे मेंह की बहार । और पूस ने किया मुझे [illegible] बेक़रार ।

वज़ीरज़ादी

अफ़सोस माघ में जो किया जोग का सिंगार । आख़िर बसन्त जल्द तुझे मिलेगा यार ।

शाहज़ादी

फागुन में चारों सिम्त से सब खेलते हैं फाग । बजते हैं ढफ़ और झांझ में गाते हैं सब राग ।

वज़ीरज़ादी

साक़ी न दे शराब न कर दिल को बेक़रार । अच्छा नहीं है चैत तुम्हारे बिछुड़े यार ।

शाहज़ादी

बैसाख की जो गरमी में जलती हूँ आग २ । हरदम ख़याल आया यहाँ से दूं भाग २ ।

वज़ीरज़ादी

अब कीजिये न लाग लगी तेरी जब से लाग । होगा महीने जेठ में हासिल तुझे सुहाग ।

शाहज़ादी

जिन्के पिया हैं पास हैं उन्के बड़े ये भाग । ख़ालिक़ दिलादे कब मुझे देखूं मेरा सुहाग ।

वज़ीरज़ादी

साक़ी पिलादे जल्द शराबे विसाल यार । मत कर तू हिज्र में बस अब इस दिल को बेक़रार ।

हुक्म शाहजिन का देव से

हाज़िर है कोई देव यां जल्दी से आये । हो दोनों जिस जगह उन्हें उठा कर लाये ।

अर्ज़ देव की शाहजिन से

अब मैं ने रे हुक्म से जाता हूँ उस जा । लाता हूँ उन्के तईं जाकर अभी उठा ।

कलाम शाहजिन का शहज़ादे से
वक़्त उस्के आने के

कौन परी और कौन देव लाया तुझे उठा । गुज़रा तुझ पर क्या सितम सब मुझको तू सुना ।

जवाब देना शहज़ादे का शाहजिन से

सोता था कोठे ऊपर साथ थी माह लक़ा । परी ज़मुर्रद जाय कर लाई मुझे उठा ।

शाहजिन का कहना छन्द शहज़ादे से

जोर हुआ हो ज़ार तेरी जान पर आया । ऐ हवाल सारा मुझ से तू ऐ यार कर बयां
होगी सज़ा बरतू बेटा दिलमें न कर गुमान । क्यों कर मुझे है रहम तेरे हाल पर अयां

गुज़रा तुम्हारी जान पर जो कुछ कि है सितम। उसके ही सुन्ने से हुआ दिल्को हमारे ग़म ।
तेरे ऊपर ये हाय मुसीबत थी क्या पड़ी । है देखने से जिस्के तबियत पे कोह ग़म ।
उस्की सज़ा मैं देता हूँ अब तेरे रोबरू । जिसने जुदा किया है ये तुझ से तेरा सनम ।
तेरे एकज़ सितम के मैं करता हूँ उस्को क़त्ल। जाती है लहज़ में वह फ़ना हो सूये अदम ।
मुद्दा ने खलल किया तेरे विसाल मे । मासूक़ तेरा तुझ से छुटाये किया सितम ।
है कोई देव लावे गिरफ़्तार कर उसे । जिस्ने किया है इस पे जो इस तौर का सितम ।
मिज़ वाके देव जल्द बुला ओ मदारीलाल। होता है हाल जोर का उस्के न कुछ रक़म ।

छन्द शहज़ादे का कहिना शाह जिन्से

गफ़लत में ख्वाब की मुझे लाई जो ये उठा। मेरे सनम से इस्ने मुझे अब छुड़ा दिया ।
रक्खा था एक क़ैद मकां में मुझे छिपा। किस्मत ने मेरी आप को अब है दिया बता।
जो कुछ कि उस्की क़ैद में मुझ पर हुआ सितम। यह बाल उस्का मुझ से न होता है कुछ रक़म।
सूरत से मेरी हाल मुसीबत का है अयां। दिल्पर हमारी यार जो गुज़रा किया सितम।
खालिक़ ने आप को है किया हाकिमे ज़मान। खिलक़त न वाज़ों मुंसिफ़ों नौकी यजाह ज़र
इन्साफ़ कीजिये मेरी फ़र्याद का बगौर। क्यों कर कि आप को न मिला वस्ल में सनम।
जो आपसा मिले मुझे सर्दार दिल नेवाज़। शायद कि जल्दी से मिले मुझ से मेरा सनम।
वह देव और परी थी छिपी इक मकान में। जिस्ने किया है मुझ पे जो इस तौर का सितम।
फ़र्याद की ये दाद दिला ओ मदारीलाल। अजबस कि मेरे हाल पे अब कीजिये करम।

सवाल राजा इन्द्र का शाह जिन से

हाज़िर है कोई देव अब लावे उसे बुला। फिर वह मेरे हुक्म से आग में दे जला ।
मुझको है ये फ़िक्र जो कि उस्से है खता। ऐ देव लादे उस्को कि दूं मैं उसे सज़ा ।
ए देख क्या निकाला है मुद्दा ने चलन। बिचारे शाहज़ादे को लाई ए घर उठा ।
देखो दिखाता हूँ मैं मज़ा उस्को प्यार का। हम से किया जो इस्ने है ये आशना छिपा।
आशिक़ को उस्ने ग़ैर के लाकर किया असीर। खटका हमारे दिल्में न इस्ने ज़रा किया
आया न खौफ़ इस्को हमारे जलाल का। रक्खा चुराके इस्ने पराया ए दिल रुबा ।
मालूम तुझ से हाल मेरा ए हो गया तमाम। कर वादूं अब मैं तेग़ से इस दम इसे फ़ना
नातक़ बताओ हुक्म उसे ऐ मदारीलाल। की है गी नाबकार ने देखो तो क्या खता ।

जवाब देव का राजा इन्दर शाह जिन् से ॥

हाज़िर हूं जो हुक्म हो लाऊं उसे बजा । जाकर मैं उस्को अभी लाऊं सोये हवा
जाता हूं मैं मिस्ल आबो चूं ससरे हवा । लाता हूं उस्को जिस्का येहै ज़ोर वो जफ़ा
मैंने कहा था उस्से न कर इस्को तू पियार । ना जिन्स आदमी है न इस्पर होतू फ़िदा
समझाया इस्को मैंने न दे दिल्को हाथ से । हरगिज़ रहैगा इश्क़ न तेराये अब छिपा
बे खौफ़ होगई है ये पाकर के खूबरू । आखिर को अपने हक़ में ये इस्ने बुरा किया
मेरे कहे पै इस्ने न मुतलक़ किया ख़याल । ले आई अपने घर में ये सोता उसे उठा ।
हाज़िर में लाया इस्को अभी रोबरू हुज़ूर । मालिक हुज़ूर हैंगे जो चाहो सो दो उठा ।
हाज़िर किया मैं लाके उसे तू मदारी लाल । इन्साफ़ जैसा हो वह अभी दीजिये सज़ा ।

दोहरा कहिना राजा इन्दर का परी से

लाई इस्को क्यों उठा सुन तो ऐ मुरदार । गई हमारे खौफ़ को दिल्से भूल एक बार

जवाब देना परी का राजा इन्दर को

तुमजो चाहो सो करो मालिक हो सुरदार । लेकिन् हूं मैं जान से उस्की आशिक़ ज़ार

सवाल राजा इन्दर का

हमसे छिप छिप के तू करती है ए कयार नया । ये चलन् निकाला है अब तेरा ऐ मुरदार नया
या तहे तेग़ करूं या तुझे गर्दन मारूं । या दिखाऊं तुझे मैं और कोई आज़ार नया
कहाँ इन्सां भला क़ौम परीज़ाद कहाँ । तूने किस्का ये निकाला है अरी प्यार नया
प्यार करने का मज़ा तुझको मिलेगा उस वक्त । होगा गर्दन पे ये जब खंजर खूं ख़्वार नया
क्या है आवारगी ये दिल में समाई तेरे । ढूंढती फिरती है दिनरात जो दिल्दार नया
हाथ उठा इस्से नहीं अपना तरीक़ा है यही । क़त्ल करते हैं जो हो ऐसा ख़ता वार नया

जवाब परी का

घर में आया जो मेरे ये गुल गुलज़ार नया । दुश्मनों की वही आंखों में चुभा खार नया
पास से मेरे न अलबत्तां इसे कीजिये जुदा । और सितम चाहिये सो कीजिये हर बार नया
शक्ल इन्सानो परीज़ाद पे क्या है मौकूफ़ । किस्को भाता नहीं माशूक़ तरहदार नया
आशिक़ी का यही आशिक़ को मज़ा है शेज़िन । आज फूले मेरे इस जरक मे गुलज़ार नया
जानो दिल बेचे हुये फिरती हूं उस गुलरू पर । ऐसा होता नहीं दुनियां में ख़रीदार नया
मुद्दतों जिस्के लिये रातों को आवार फिरी । हाथ आया है सब तू मेरे दिल्दार नया

दोहरा कहिना राजा इन्दर का देव से

मानेगी हरगिज़ नहीं अबतो ये मुरदार । लेजा इसको आग में डाल दे तू एक बार

कहिना देव का मुख़ातिब होकर परी से

जब से ईज़ा है इसे दी द्वने दिन रात । वैसी चल अब आग में दूं तुझ को इज़ात

ग़ज़ल राजा इन्दर की

कहिना हमारा इसने न अबतक ज़रा किया । ऐ देव इसको इसने अजीरे बला किया ।
आतिश कि दह में डाल दो लेजाओ खींच कर । दोज़ख़ कि आग से जो वह है पुर हवा किया
दिखलाओ जाके इसको मज़े इश्तियाक़ के । हर तरह हमसे ख़ूब नया आशना किया
देने में कुछ सज़ा के जो कि तूने दरगुज़र । मैंने तुझे भी गोर दे जौरो जफ़ा किया ।
नामो निशान इसका ज़माने से दो मिटा । इस फ़ित्ना रोज़गार ने देखो तो क्या किया
संगे गरां पे जाके पटक दे इसे अभी । मुरदार बद चलन ने ए गुमज़ा नया किया ।
इस बद चलन से है यही खटका मदारी लाल । आज एक किया है जाने ये कल दूसरा किया

ग़ज़ल देव की

मैं भी तो मुद्दतों से हूं इसलिये जला किया । पंजे में अब ख़ुदा ने मेरे मुब्तिला किया
चलती है साथ मेरे या गर्दन में डालूं हाथ । खाजाऊंगा मैं गर कहीं न ख़ुद ज़रा किया
आ मेरे साथ तू कोई दम और जान है । फिर क्या जो मैंने काम तेरा ख़ातमा किया ।
पंजे से मेरे छूट के जा सक्ती है कहां ॰ । बस मैंने इसको पीस के अब सुरमे सा किया
पीजाऊंगा लगाके मैं इस वक्त तेरा ख़ून । फिर मुझ से चो चला जो किसी तौर का किया
खाजाऊं तेरा तोड़ के सर भेजा मग़ज़ का । गोया कि आज लुक़्मा शीरीं ग़िज़ा किया
सरपर अजल सवार है इसके मदारी लाल । कोई दम में अब इसे न रहने दो फ़ना किया ।

ग़ज़ल परी की

अफ़्सोस तेरे लिये किस शौक़ से वफ़ा किया । लेकिन जुदा न दिलसे तुझे मेहलक़ा किया
कुछ जलने मरने का नहीं बल्ला मुझको ग़म । ग़म है कि तुझको आंख से मेरी जुदा किया
आरज़ू थी कि मैं तेरी राह पर निसार । ख़ालिक़ ने आज फ़र्ज़ से तेरी अदा किया
ऐसा भी कोई करता है आशिक़ का अपने हाल । तुमने हमारा हाल जो ऐ दिलरुबा किया
चारों तरफ़ अदू हैं लिये तेग़ कीन कफ़ । मुझ बेगुनह पे देखो ये क्या बला है क्या किया

दुनियां में क्या हमीने नहीं की है आशिक़ी । किस्ने न इन्दर तौ पै दिल अपना फ़िदा किया
इस्को भी अपने हाथ से खोया मदारी लाल । जलना गवारा जिस्के लिये मैं सदा किया

ग़ज़ल शाहज़ादे की

लाकर जो तूने क़ैद मुझे बेरहम किया । बस मेरे सब्र ने यही बदला अदा किया ।
मैं तुझ से कहिता था मेरे दरपै न हूजिया हो । आख़िर न अपने हक़ में ये तूने भला किया
आख़िर को मेरे वास्ते दी तूने अपनी जान । परवाने मिस्के शमा से कब तक जिया किया
क़िस्मत ने तेरी तुझ को दिखलाया ये एसा दिन । जब तू कहां से लाके मेरा मुब्तिला किया
क्यों होना हाल ये जो न करती तू मुझको प्यार । मैंने तो मना तुझको परी बारहा किया ।
मारा है जिस्ने भूलके इस राह में क़दम । आंखों से उस्के खून का दरिया बहा किया
क्या ? करूं मैं शुक्र खुदा का मदारी लाल । एक बद बला के हाथ से मुझको रिहा किया

दोहरा कहिना राजा इन्दर का वज़ीर ज़ादी से ॥ ॥

जोगीजी ये मा रखा है हाज़िर इस्को लो । और जो लायक़ काम हो सो मेरे से कहो

जवाब देना वज़ीरज़ादी का राजा इन्दर को

और नहीं कोई काम है बड़ा किया ये काम । मुद्दत तक अब आपका रहे जहां में नाम

दोहरा वज़ीर ज़ादी का शहज़ादी से

ले हाज़िर है हिज्र का ये तेरा बीमार । गले लगाओ खूब सा करलो इस्को प्यार

दोहरा कहिना शहज़ादी का शहज़ादे से

आओ प्यारे ऐ कहां गले मेरे लगजाउ । मुद्दत से बीमार हूं शरबत वस्ल पिलाउ

जवाब देना शहज़ादे का शहज़ादी को

मेरी भी दिन रात थी आफ़त में पड़ी जान । जिस्पर भी तो था मुझे जानी तेरा ध्यान ।

छन्द कहिना शहज़ादी का शहज़ादे से

प्यारे तुम्हारे हिज्र में अपना हुआ ये हाल । तुमको हमारे तरफ़ से कुछ था ज़रा खयाल
किस तरह से हुआ था तेरे बिन मुझे मलाल । पर अब खुदा ने है दिया ये शरबते विसाल

जवाब देना शाहज़ादी का शाहज़ादे से

फ़ुरक़त तुम्हारी से मुझे हासिल हुआ मलाल। अल्लाह ने मिलाया मगर अब ते विसाल
रक्खो न दिल्में रंजो मुसीबत का कुछ ख़याल। होवेगा दूर वस्ल में सारा ये अब मलाल

ग़ज़ल शाहज़ादह

आँख हमने न अगर तुम्से लड़ाई होती। तो मुसीबत न ये बल्ला उठाई होती ।
हिज्र में तेरे मैं तड़पा किया बिस्मिल कि तरह। तेग़ अबरू की दिखाई तो सफ़ाई होती
जाने जाँ तुम को जो इस बात का कुछ होता ख़याल। तो मेरे वास्ते काहे को बुराई होती
ख़ुशनुमा तेरी कलाई का जो आता है ख़याल। दिले बेचैन को येक दम न कल आई होती
कज अदा हम से न रहिते जो तुम ऐ ग़ैरते गुल। अभी तक अपनी सब उम्मेद बर आई होती
कुछ ख़ता आपकी हरगिज़ नहीं तक़दीर अपनी। वर्ना ये बात भी कुछ दिल में समाई होती
सख़्तियाँ क़ैद की काहे को उठाता मैं ग़रीब। तुम सिवा उस पे तबियत जो ये आई होती

ग़ज़ल शाहज़ादी

तुमने सूरत जो किसी रोज़ दिखाई होती । दिले मुज़्तर पे न यों ग़म कि चढ़ाई होती
ख़ूब रोऊँ गले लग कर यही थी दिल्की हवस। लेके तुम तक जो भला अपनी रसाई होती
हाल पर मेरे जो कुछ रहम न करता ज़ालिम। तो मैं इस तरह से क्यों ग़म की सताई होती
बर्क़ की तरह से आंखों में चमक जाती है। याद जिस दम तेरी नाज़ुक ये कलाई होती
तुम करो चैन परी साथ रहूँ मैं बे चैन । दिल से लाचार हूं वर्ना ये रुसवाई होती ।
तेरा हरजाई पना पहिले जो होता साबित । तू ये शिरकत मेरे दिल्को न ख़ुश आई होती
भला क्यों काहे को जलती मैं तसव्वर में तेरे। गर मुहब्बत न तेरे दिल में समाई होती ।

ज़बानी शाहज़ादह

तेरे ग़म फ़िराक़ का अफ़साने था रहा । हर लहज़ा हर घड़ी में असीरे बला रहा

ग़ज़ल शाहज़ादा

शुक्र सद शुक्र किया आज नज़ारा तुझ को। कब ये उम्मेद थी देखूँ गा दुबारा तुझ को
मरदुम आसा तेरी तस्वीर थी आंखों से खिंची। ख़्वाब ये चश्म में भी मैंने उतारा तुझ को
हिज्र में था मेरी रून आंखों में तारीक जहाँ। जानता दिल से जो था आंख का तारा तुझ को
जान भी आये अगर काम तो हुये क्या उज़्र। जां से कुछ ज़्यादा समझता हूँ मैं प्यारा तुझ
एक पल भी तेरी फ़ुरक़त में न पाया आराम। बारहा ख़्वाब से चौंका तो पुकारा तुझ को

मैंने क्या २ वह तेरे पीछे उठाई आफ़त । बेवफ़ा पर न हुआ रंज हमारा तुझ को
हम बिछाते हैं तेरी राह में हरदम आँखें । पर रहा हमसे सदा आह किनारा तुझ को

गज़ल शाहज़ादी

थी जुदाई न तेरी जान गवारा मुझ को । पर करूं क्या न था तक़दीर से चारा मुझको
ता दमे ज़ीस्त रही आँखों को हसरत बाक़ी । कभी फिर आके दिखा जाओ नज़ारा मुझको
बिन तेरे चाँदनी आँखों में लगी धूप से कम । मह अनवर नज़र आता था शरारा मुझ को
कहीं दो चार भी दिन और न आते जो सनम । बिन दिये जां के होता न गुज़ारा मुझ को ।
हिज्र में तेरे न एक पल भी मुझे नींद आई । याद था जो तेरे पहिलू का सहारा मुझ को
चैन आता था न दिल को न तबिय्यत को क़रार । वह नस नस में बंधा है जान तुम्हारा मुझको
सीधी बातों से हुये जाते हो टेढ़े नाहक़ । कज़ अदाई ने तेरी जान से मारा मुझ को ।

खम्से: कहिना शाहज़ादी का

तुझसे और उससे सदा रोज़ बहम प्यार रहे । जाने जो जान से उस गुल को ख़रीदार रहे
नहीं चाहत नहीं ख़ूबी की तलबगार रहे । तुम परी साथ मेरे वस्ल से सरशार रहे ।
हम यहां हिज्र में दिन रात गिरफ़्तार रहे

क्या कहें हम जो मुसीबत में गिरफ़्तार रहे । वस्ल के तेरे दिलो जान से ख़्वाहां रहे
हर घड़ी तेरे तसव्वर ही में दिल्दार रहे । किस तरह रंजो मुसीबत के गिरफ़्तार रहे
हर घड़ी हिज्र में तेरे हीतो बीमार रहे

उसको चाहत तेरी और तुझको रही उसकी चाह । कुछ दिनों ख़ूब किया जान ने सब अहल का निबाह
हम बग़ल और हम आग़ोश रहे क्या कहना । वस्ल में ख़ूब मज़े लूटे परी के हमराह ॥
हमसे कहिते हो कि तुम बिन हमें आज़ार रहे

आप तो जाम तमन्ना में पिया शरबते वस्ल । उसने सौ नाज़ से तुमको जो दिया शरबते वस्ल
होके आग़ोश में मंज़ूर किया शरबते वस्ल । ख़ूब जी खोल के तुम ने तो पिया शरबते वस्ल
हमसे क्या काम कोई हिज्र में बीमार रहे

अपनी चाहत को वह करती रही तुमसे इन्कार । हम तसद्दुक़ को क्यों करती है है लैलो निहार
चाहने का भी मज़ा है यही अब ऐ दिल्दार । तुम मरो उससे परी तुमसे को जान निसार
सब तरह से तो हमीं पीछे तेरे ख़्वार रहे

फिर तो देख के गुल दूसरा तुमने जो निगाह । मुझको मालूम हुआ रखते हो बुलबुल की सी चाह

हाल दिल किससे कहूँ जाके मैं अय्या नाचार। कर दिया मुझको तो इस इश्क़ ने है २ बरबाद
कहूँ इस गम से कहाँ तक न मैं रोता फ़रयाद। इस सितम गर ने किये मुझपे हज़ारों बेदाद
बे अजल जानसे इस इश्क़ ने मारा है २ ॥ खून नाहक़ किया काफ़िर ने हमारा है है
इस जफ़ा कार ने मुझको दिये लाखों आज़ार। दर्दो अन्दोहव गमों रंजसे बेहद्दो शुमार
इसके हाथों से मिला हाथ न इक जा पे क़रार। कभी सहरा को गई और कभी सूये कुहिसार
इसने इस तरह की आफ़त में है डाला मुझको। पड़ी जो हमत में हूं अब तक न निकाला मुझको
ये न समझी थी कि होगी ये जफ़ा आफ़ते इश्क़। जान पर लायेगी मेरी ये बला आफ़ते इश्क़
रहे मेरो बेगाने से कर देगी जुदा आफ़ते इश्क़। सैंकड़ों आफ़तों से ये है सिवा आफ़ते इश्क़
वस्ल से उसके न इक रोज़ कभी शाद किया। और किया भी तो मुझे जान से बरबाद किया
आह इस मूज़ी से बे तरह पड़ा है पाला। है २ इसने मुझे हर एक बला में डाला ॥
मैंने कुछ आह इस आफ़त में न देखा भाला। अब तो है जान का अल्लाह मेरे रखवाला
कहूँ अब इसकी शिकायत मैं कहाँ तक अरज़ा। है हर एक किस्से से ये तूल हिकायत अपना

जवाब देना शाहज़ादे का

मर्ज़े इश्क़ का सच है कोई बीमार न हो। और आज़ार हो पर आह ये आज़ार न हो
कोई आशिक़ किसी माशूक़ का ज़िन्हार न हो। ता मुक़द्दर कोई मायले दिलदार न हो ॥
ये बला इश्क़ वह है जिससे हज़र बेहतर है। इससे करता रहे परहेज़ बशर बेहतर है २ ॥
जानसे कर दिया मजनूं को इसीने बरबाद। और इसने किया बर्बाद है खूने फ़रहाद
वस्ल से रक्खा है वामक़ को इसीने नाशाद। ये वह ज़ालिम है कि है ज़ुल्म कि जिससे दुनियाद
चैन इसमें कहाँ इन्साँ को आराम कहाँ। वाँ सिवा रंज के राहत का सरंजाम कहाँ
अलह कज़ा इससे बशर मांगे ये वह है आज़ार। मर गये आज तक इस मर्ज़ के लाखों बीमार
और रुसवाई है इसमें हुई बेहद्दो शुमार। फिर के आये न कभी जो गये सूये कोहिसार
उनको क्या जाने कहाँ जाके डुबोया इसने। फिर पता तक न लगा ऐसा है खोया इसने
सच तो यो है कि बलाये बद वह आफ़त है इश्क़। जान के लेने को हर तरह क़यामत है ये इश्क़
बाइसे ख़ानये विरानाव मलामत है ये इश्क़। व ख़ुदा इस मर्ज़े दिक़ की अलामत है ये इश्क़
राहे उल्फ़त में जो देखा तो यही रहज़न है। दोस्त ज़िन्हार किसी का नहीं ये दुश्मन है ॥
इस सितम गार से अल्लाह न डाले पाला। इसने लाखों के तईं आह बला में डाला ॥
नहीं जाना है ये कम्बख़्त किसीसे टाला। इस बला का करो अल्लाह कहीं मुंह काला

तुमसे सरवर कहूं क्या आके मैं रसबाज़ीकी। इसदगाबाज़ीने लाखों से दगाबाज़ी की

होली गाना सिन्धु मुल्तानी

में

खेल रही मैं होली सबै में ॥ + ॥ नन्दलाला बनवारी रे ॥ + ॥

काहू की सारी रंग में भिजोई ॥ + ॥ काहू को देत हैं गारी रे ॥ + ॥

खेल रही मैं

छीन लई मोरी चूनर सरसों। + । और सारी पिचकारी रे ॥ + ॥

जो भाजन है लाज की मारी + । सब मिल देत हैं तारी रे ॥ + ॥

खेल रही मैं

मान गुमान रखने हारी + । हम हैं तुम्हरे भिखारी रे ॥ + ॥

सरवर को मोहि आन मिलाओ । मैं तोरे बलिहारी रे ॥ + ॥

खेल रही मैं

होली बीच धुन धनाश्री के

मोंहि देत दरस नहिं एक बार + । मेरो मन नहिं मानत करत रार + ।

मोहि देत दरस नहिं एक बार

कोऊ नके संग रंग उड़ावत + । फाग खेलत हो बार २ । + ।

हमतो जरत बरत होरी से + । बिरहा की है मार २ । + ।

मोहिं देत दरस नहिं एक बार

कोऊ गुलाल मलत गालन में + । कोऊ चलत गल बहियां डार । + ।

हम पर सब रूप रंग बरसत है + । पिचकारिन की भरी फुहार । + ।

मोहिं देत दरस नहिं एक बार

दरस मदारी साहब की बलिहारी + । सुन लिये सब की पुकार +

सरवर को कोऊ आन मिलाओ + । तन मन धन सब डारूं बार +

मोहिं देत दरस नहिं एक बार

इन्दर सभा समाप्तम्

सम्वत् १९३७

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
दूसरी पुस्तक रामायण माला	देवी भागवत नागरी	जनक पच्चीसी
तीसरी रामायण गीताष्टक	कल्पसूत्र भाषा	शृंगार प्रकाश
चौथी ज्ञान दोहावली	रामव्याहोत्सव	दोहावली रत्नावली
पांचवीं रससारिणी	बिहारी सतसई सटीक	स्त्री दर्पण
छठी तिथि बोध	विश्राम सागर	समर बिहार बिन्द्रावन
सातवीं पुस्तक मालदस्तकन	रामलगन	रमल सार
सत्य नारायण की कथा सटीक	मनुस्मृति उर्दू टीका सहित	कथा चित्रगुप्त
शनिश्चर की कथा	वैष्णवी सन्ध्या	कायस्थ दर्पण
रामकलेवा	याज्ञवल्क्य भाषाटीका स०	कृष्ण बाललीला
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	प्रबोधचन्द्रोदय नाटक	गीत गोविन्द सटीक
कविकुल कल्पतरु भाषा	आनन्दामृत वर्षिणी	रामाभिषेक नाटक
प्रेमरत्न	निर्णयसिन्धु	सिंहासन बत्तीसी
बनयात्रा	ज्ञानमाला	शुक बहत्तरी
भजनावली	दैवज्ञाभरण	अपूर्व कथा अर्थात् गु-
बारहमासा फ़क़ीर अल्लाबख़्श	ज्ञान चालीसी	लवकावली
बारहमासा बलदेवप्रसाद कृ०	शङ्कर दिग्विजय भाषा	गुलसनोबर नागरी
कृष्णसागर	योग वाशिष्ठ देवनागरी में	चित्रचन्द्रिका
मनोरञ्जन	मार्कण्डेय पुराण	छन्दोर्णव पिङ्गल
हारीत स्मृति नागरी	बैताल पच्चीसी	अवतार कथामृत
भगवद्गीता सटीक नागरी	दानलीला नागलीला	हिदायतनामा मालगुज़ारी
रामायण राम बिलास	सभा बिलास	हिदायतनामा बन्दोबस्त
यमुना लहरी	विक्रम बिलास	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
षट्पञ्चाशिका	इन्द्रजाल नागरी	बाला बोध
विनयपत्रिका सटीक	कायस्थ कुल भास्कर	गरुड़ पुराण प्रेत कल्प
किताब पटवारी ४ भाग	क़िस्सह गोपीचन्द भरतरी	सांख्य तत्त्व कौमुदी
रसराज	बहार बिन्द्रावन	मनोहर कहानी
कृष्णप्रिया	पद्मावती खण्ड आल्हखंड	
भगवद्गीता विष्णुसहस्रनाम	लावनी वर्णन बनारसी	**क़ानून**
मसद्दिस	युगल बिलास	
ज्ञानस्वरोदय	भाषा महाभारत विजय-	ताज़ीरात हिन्द अर्थात्
भरतरी गीत	मुक्तावली	ऐक्ट ४५ सन् १८६० ई०

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ऐक.२५ सन् १८६६ ई०	विद्याङ्कुर	किष्किन्धाकाण्ड
ज़ाबिते फ़ौजदारी	बालबोध	सुन्दरकाण्ड
मजमूआ ऐक लगान अव-	भाषा चन्द्रोदय	लङ्काकाण्ड
ध जिसके साथ नीचे लिखे	इंग्लिस्तान का इतिहास	उत्तरकाण्ड
हुये ऐक संयुक्त हैं॥	गणित लता १ भाग	अक्षरारम्भ
ऐक.१० सन् १८७७ ई० जरीद	तथा २	भाषातत्त्व दीपिका
ऐक.१९ सन् १८६३ ई०	तथा ३	बालभूषण
ऐक.२४ सन् १८६५ ई०	गणित प्रकाश १ भाग	हिदायतनामा मुदर्रिसान्
ऐक.२६ सन् १८६१ ई०	तथा २	हल्क़हबन्दी
ऐक नं.३६ सन् १८६६ ई०	तथा ३	शिक्षावली
ऐक.२० सन् १८६६ ई०	तथा ४	भोजप्रबन्धसार
ऐक.२४ सन् १८७० ई०	शिशुबोध	राजनीति
ऐक.१० सन् १८५९ ई०	पशुचिकित्सा	स्त्रियों की हित पत्रिका
ऐक.५ सन् १८६१ ई०	क्षेत्रचन्द्रिका १ भाग	अवध भूगोल
ऐक.१० सन् १८६२ ई०	तथा २	कवित्तरत्नाकर
ऐक.१८ सन् १८६९ ई०	रेखागणित १ भाग	भूगोलवर्णन
ऐक.३८ सन् १८६७ ई०	तथा २	बीजगणित १ भाग
ऐक नं.२९ सन् १८६० ई०	सूरजपुर की कहानी	तथा २
क़वायद रेलवे और उसके	विद्याचक्र	कैथी वर्णमाला
साथ क़ानून भी हैं॥	भूगोलतत्त्व	महाभारत भाषा छन्दप्रबन्ध
ऐक.१९ सन् १८७३ ईसवी	पदार्थविद्यासार	में जो श्री मन्महाराजाधिराज
अर्थात् क़ानून लगान मु-	धर्मप्रकाशिका १ भाग	उदितनारायण सिंह जी काशी
मालिक मग़रबी व शिमाली	मङ्गलकोष	नरेश ने गोकुलनाथादि कवी-
ऐक.१२ सन् १८७४ ई०	पत्रदीपिका	श्वरों से रचना कराय कलकत्ते
ऐक.१० सन् १८७२ ई०	भारतखण्डिका	में छपवाया था वही श्रीयुत
सर्रिश्ते तालीम की पुस्तकें	क्षेत्रप्रकाश	माधवसिंह गढ़ अमेठीनरेश
भाषालघुव्याकरण १ भाग	पत्रहितैषिणी	की सहायता और अनुराग
तथा २	रामायण सातौं काण्ड	से इस यन्त्रालय में अत्युत्तम
धात्वर्णव	बालकाण्ड	टैप के पुष्ट अक्षरों में १८ पर्व्व
अक्षरावली	अयोध्याकाण्ड	बड़ी शुद्धता से छपा है॥
अक्षरदीपिका	आरण्यकाण्ड	